ॐ

मन्त्रविद्या

॥ श्रीः ॥

देवाधिदेवमहादेवप्रणीत–

मन्त्रविद्या

मुरादाबादनिवासिकात्यायनगोत्रोत्पन्नमिश्र-

सुखानन्दसूरिसूनुपण्डितकन्हैयालाल-

मिश्रकृतभाषाटीकासहित ।

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

संस्करण : फरवरी २०१२, संवत् २०६८

मूल्य ८० रुपये मात्र।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

प्रिय पाठकगण !

कलियुगमें एकमात्र तंत्रही मनुष्योंको धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त करानेवाले हैं, देवदेव भगवान्, महादेवजी मुक्तकंठसे ऐसा कह गये है । तन्त्रोक्त मन्त्रोंके बलसे पूर्वकालिक ऋषिगण जो जो अद्भुत कार्य कर गये हैं, उनका वर्णन करना कठिन है । जगत्में ऐसा कोई कार्य नहीं है. जो शिवमुखविनिर्गत मंत्रके बलसे सिद्ध न हो सके । किन्तु सब कार्योंमेंही योग्य गुरुसे दीक्षित होकर उनकी आज्ञानुसार कार्य करना चाहिये, तब अवश्य सिद्धि प्राप्त होगी । पुस्तक तो केवल उपलक्षणमात्र है । इसी कारण मैंने सर्व साधारणके हितार्थ अनेक तन्त्रोंसे अनेक प्रकार के मोहिनीमन्त्र और विविध साधना इत्यादि संग्रह करके 'मन्त्रविद्या' नामक यह पुस्तक प्रकाशित की है और साथही सबके समझने योग्य प्रतिश्लोकका भाषाटीका भी लिखा है । तथा शुद्धतापर भी विशेष दृष्टि रक्खी गई है ।

अब यह पुस्तक सर्वसत्वसहित अपने परम हितैषी, परमोदार माननीय मुंबईस्थ "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसके मालिक तथा कल्याणस्थित लक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेसके मालिक श्रीमान् सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीके करकमलमें अर्पण करता हूं.

यदि साधकमंडलीको इसके द्वारा कुछ भी लाभ पहुँचा तो मैं अपना श्रम सफल समझूंगा ।

विनीतनिवेदक –

कन्हैयालाल मिश्र –मोहल्ला दीनदारपुरा, मुरादाबाद सिटी.

ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा सं. १९६८, रविवार ११।६।११.

श्रीगणेशाय नमः

अथ मन्त्रविद्याविषयानुक्रमणिका

अष्टनायिकासाधनम्

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता

श्रीहरिः ।

देवाधिदेवमहादेवप्रणीत-

मन्त्रविद्या

दोहा

ज्योति जागती जगतमें, जननि जयाजयकार ।
काली कर धरकर उबर, भक्त पर्यो मँझधार ॥
जय जय अम्बे सुखकरन, विघ्नविनाशनहार ।
मिश्र कन्हैयालालके, संकट दीजे टार ॥
कर प्रणाम तुव चरनमें, हरि गुरु गौरि मनाय ।
ग्रन्थरचनके समयमें, सब मिलि करहु सहाय ॥

मङ्गलाचरणम् ।

क्रोधाज्ज्वलन्तीं ज्वलनं वमन्तीं सृष्टिं दहन्ती दितिजं ग्रसन्तीम् । भीमं नदन्तीं प्रणमामि कृत्यां रोरूयमाणां क्षुधयोग्रकालीम् ॥ १ ॥

जो मारे क्रोधके जल रही हैं, जिनके मुखसे निरन्तर अग्नि निकलती रहती है, जो सृष्टिके भस्म कर देनेको उद्यत हैं जो दानवकुलको ग्रास करती हैं, जिनका गर्जन अत्यन्त भयंकर है, जो भूखके मारे रोती रहती हैं उन उग्रकाली कृत्या देवीको नमस्कार करता हूं ।। १ ।।

शाम्भवाज्जामलाच्चैव तथा कालोत्तरादपि ।
काकूलाद्राजतन्त्राच्च उड्डीशाद्वातुलात्तथा ॥
सिद्धयोगीश्वरीतन्त्रान्मौलाच्च सिद्धसाबरात् ।
स्वच्छन्दान्मालिनीतन्त्राद्भूतडामरकात्तथा ॥
सर्वतन्त्रात्समाकृष्य मन्त्रविद्या मयोच्यते॥२॥

शाम्भव, जामल, कालोत्तर, काकूल, राजतन्त्र, उड्डीश, बातुल, सिद्धयोगीश्वरी, मौल, सिद्ध, शाबर, स्वच्छन्द, मालिनी तन्त्र, भूतडामर और अपरा पर समस्त तंत्रोंसे संग्रह करके यह मोहिनी मंत्रविद्या कही जाती है ।। २ ।।

इत्येवमागमोक्तं च वक्त्राद्वक्त्रेण यच्छ्रुतम् ।
एतत्सर्वं समुद्धृत्य दध्नो घृतमिवादरात् ॥
साधकानां हितार्थाय मन्त्रखण्डमिहोच्यते॥३॥

अनेक तंत्र और आगममें जिस प्रकार वर्णित है और परस्पर सिद्ध पुरुषोंके मुखसे जैसा सुना गया है, वह सब दहीसे घृत निकालनेके समान उद्धृत करके साधकजनोंके हितार्थ कहा जाता है ।। ३ ।।

वश्यमाकर्षणं मोहस्तथोच्चाटनमारणे ।
विद्वेषो व्याधिकरणं पशुसस्यार्थनाशनम् ॥
कौतुकंचेन्द्रजालंच यक्षिणीमन्त्रसाधनम् ।
तेटकंचाञ्जनं दिव्यमदृश्यं पादुकागतिः ॥

गुटिका खेचरत्वंच मृतसञ्जीवनादिकम् ।
सुसाध्यं प्रत्ययोपेतं साधकानां हितं प्रियम् ॥
सर्वशास्त्रात्समाकृष्य प्रकटीक्रियते मया ॥४॥

मैं समस्त तन्त्रशास्त्रोंसे संग्रह करके साधक जनोंका हित और प्रिय साधन करनेके योग्य वशीकरण, आकर्षण मोहन, उच्चाटन, मारण, विद्वेषण, व्याधिकरण, पशु सस्य (धान्य) और अर्थनाश, कौतुक, इन्द्रजाल, यक्षिणीसाधन और चेटिका साधन, दिव्य अञ्जनविधि, अदृश्यकरण, पादुकासिद्धि, गुटिकासिद्धि आकाशमें गमन; मृतसंजीवनी विद्या और अन्यान्य जो प्रत्यपयोग्य हैं, उसको प्रकाशित करते हैं ॥ ४ ॥

पुस्तके लिखिता विद्या येन सुन्दरि जप्यते ।
सिद्धिर्न जायते देवि कल्पकोटिशतैरपि ॥
गुरुं विना न शास्त्रेऽस्मिन्नधिकारः कथञ्चन ॥५॥

श्रीमहादेवजीने श्रीपार्वतीजीसे कहा है कि सुन्दरी ! जो पुरुष पुस्तकमें लिखी विद्याको देखकर मन्त्र जपता है, उसको करोड कल्पमें भी सिद्धि मिलनेकी संभावना नहीं है, गुरुका उपदेश विना लिये इस शास्त्रमें अधिकारी नहीं हो सकता ॥५॥

अग्रेऽभिधास्येशास्त्रेऽस्मिन्सम्यक्षट्कर्मलक्षणम् ।
सर्वतन्त्रानुसारेण प्रयोगफलसिद्धिदम् ॥ ६ ॥

सबसे पहिले सर्वतन्त्रानुसार षट्कर्मके लक्षण प्रकाशित होते हैं, यथाविधि प्रयोग करनेसे कार्यकी सिद्धि होती है ॥६॥

अथ कर्माणि ।

शान्तिवश्यस्तंभनानि विद्वेषोच्चाटने तथा ॥
मारणान्तानि शंसन्ति षट् कर्माणि मनीषिणः ७॥

शांतिकर्म, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण बुद्धिमान पुरुष इन्हीं छ कार्योंको षट्कर्म कहते हैं ।।७।।

अथ षट्कर्मणां लक्षणम् ।

रोगकृत्याग्रहादीनां निरासः शान्तिरीरिता ।
वश्यं जनानां सर्वेषां विधेयत्वमुदीरितम् ॥
प्रवृत्तिरोधः सर्वेषां स्तम्भनं समुदाहृतम् ।
स्निग्धानां द्वेषजननं मिथोविद्वेषणं मतम् ॥
उच्चाटनं स्वदेशादेर्भ्रंशनं परिकीर्तितम् ।
प्राणिनां प्राणहरण मारणं समुदाहृतम् ॥
स्वदेवतादिक्कालादीन् ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ८

जिसके द्वारा रोग, कृत्या और ग्रह इत्यादिके दोषकी शांति होती है, उसको शांतिकर्म कहते हैं । जिसके द्वारा जीवोंक वशीभूत किया जाता है, उसका नाम वशीकरण है, जिस द्वारा जीवोंकी प्रवृत्तिका रोध होता है, उस कार्यको स्तंभ कहते हैं । आपसमें मित्रभावापन्न पुरुषोंकी प्रीति नष्ट करने उस प्रक्रियाको विद्वेष कहते हैं । जिसके द्वारा किसी मनुष्यक अपने देश इत्यादिसे दूर किया जाय उसको उच्चाटन कह हैं । जिसके द्वारा जीवका प्राणनाश किया जाय उसका ना

मारण है । यदि यह सब कार्य करने हों तो देवता काल और दिक् इत्यादिको जानकर फिर कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये ॥८॥

अथ षट्कर्मणां देवताः ।

रतिर्वाणी रमा ज्येष्ठा दुर्गा काली यथाक्रमात् ।
षट्कर्मदेवताः प्रोक्ताः कर्मादौ ताःप्रपूजयेत्॥९॥

रति शांतिकर्मकी, वाणी वशीकरणकी, रमा स्तंभनकी, ज्येष्ठा विद्वेषणकी, दुर्गा उच्चाटनकी और भद्रकाली मारण कर्मकी देवता कही गई है; कर्मके आरंभमें इसकी पूजा करनी चाहिये ॥ ९ ॥

अथ षट्कर्मणां दिङ्नियमः ।

ईशचन्द्रेन्द्रनिर्ऋतिवाय्वग्नीनां दिशो मताः ।
यथाक्रमं षट्क्रियासु प्रशस्ता दिश ईरिताः॥१०॥

ईशानदिशा शांतिकर्ममें, उत्तरदिशा वशीकरणमें, पूर्वदिशा स्तंभनमें, नैर्ऋतदिशा विद्वेषणमें, वायुकोण उच्चाटनमें और अग्निकोण मारणकार्यमें प्रशस्त है ॥ १० ॥

अथ षट्कर्मणामृतुकालादिनिर्णयः ।

सूर्योदयात्समारभ्य घटिकादशकं क्रमात् ।
ऋतवः स्युर्वसन्ताद्या अहोरात्रं दिने दिने ॥
वसन्तग्रीष्मवर्षाश्च शरद्धेमन्तशैशिराः ॥११॥

एक अहोरात्र (दिनरात) में अरुणोदयसे आरंभ करके दश दश घडीके हिसाबसे वसन्तादि छः ऋतु होती हैं, अर्थात्

सूर्योदयसे आरंभ करके दश घडीतक वसन्त, फिर दश घडी ग्रीष्म, फिर दश घडी वर्षा, फिर दश घडी शरद, फिर दश घडी हेमन्त और सबसे अंतकी दश घडी शीत ऋतु कही गई है ।। ११ ।।

अन्यच्च ।

वसन्तश्चैव पूर्वाह्णे ग्रीष्मो मध्याह्न उच्यते ।
वर्षा ज्ञेया पराह्णे तु प्रदोषे शिशिरः स्मृतः ॥
अर्द्धरात्रौ शरत्काल उषा हेमन्त उच्यते ।
अन्ये च ऋतवः सर्वे सायाह्नादौ प्रकीर्तिताः।१२॥

अन्य प्रकारसे भी ऋतुका नियम वर्णित है। दिनका पूर्वभाग वसन्त कहा गया है। इसी प्रकार मध्याह्न ग्रीष्म, पराह्ण वर्षा, संध्याकाल शीत, आधीरात शरत् और उषाकाल हेमन्त ऋतु कही गई है ।। १२ ।।

हेमन्तः शान्तिके प्रोक्तो वसन्तौ वश्यकर्मणि ।
शिशिरः स्तम्भने ज्ञेयो ग्रीष्मे विद्वेष ईरितः ॥
प्रावृडुच्चाटने ज्ञेया शरन्मारणकर्मणि ॥ १३ ॥

शान्तिकर्म हेमन्तमें, वशीकरण वसन्तमें, स्तंभन शिशिरमें, विद्वेषण ग्रीष्ममें, उच्चाटन वर्षामें और मारण कर्म शरद ऋतुमें करना चाहिये ।। १३ ।।

अथ षट्कर्मणां तिथिवारनियमः ।

प्रयोक्तव्यानि विधिना तच्च संप्रोच्यतेऽधुना ।
द्वितीया च तृतीया च पञ्चमी सप्तमी तथा ॥

बुधेज्यकाव्यसोमाश्च शान्तिकर्मणि कीर्तिताः ।
गुरुचन्द्रयुता षष्ठी चतुर्थी च त्रयोदशी ॥
नवमी पौष्टिके शस्ता चाष्टमी दशमी तथा ।
पुष्टिर्धनजनादीनां वर्द्धनं परिकीर्तितम् ॥ १४ ॥

अब षट्कर्मकी तिथिवारका नियम कहा जाता है। शान्तिकार्यमें दोयज, तीज, पंचमी और सप्तमी तिथि, एवं बुध, बृहस्पति, शुक्र और सोमवार प्रशस्त हैं। पुष्टिकर्ममें गुरु वा सोमवारसे युक्त छठ, चौथ, तेरस, नौमी, अष्टमी वा दशमी तिथि उत्तम हैं। जिससे धन जन इत्यादिकी वृद्धि हो उसका नाम पुष्टिकर्म है ॥ १४ ॥

दशम्येकादशी चैव भानुशुक्रदिने तथा ।
आकर्षणे त्वमावस्या नवमी प्रतिपत्तथा ॥
पौर्णमासी मन्दभानुयुक्ता विद्वेषकर्मणि ।
षष्ठी चतुर्दशी तद्वदष्टमी मन्दवारका ॥
उच्चाटने तिथिः शस्ता प्रदोषे सुविशेषतः॥१५॥

आकर्षणकार्यमें दशमी, एकादशी, अमावस्या, नवमी वा पडवा तिथि एवं रवि वा शुक्रवार प्रशस्त है। शनि वा रविवारयुक्त पूर्णिमा तिथिमें विद्वेषण कार्य करना चाहिये। उच्चाटनकर्म शनिवारमें एवं छठ, चौदश और अष्टमी तिथिमें करना चाहिये। विशेषकर उच्चाटनकर्ममें प्रदोषकाल प्रशस्त है ॥ १५ ॥

चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा अमावश्या तथैव च ।
मन्दारार्कदिनोपेता शस्ता मारणकर्मणि ॥
बुधचन्द्रदिनोपेता पञ्चमी दशमी तथा ।
पौर्णमासी च विज्ञेया तिथिः स्तंम्भनकर्मणि १६॥

मारणकर्ममें कृष्णा चौदश, अष्टमी वा अमावस्या तिथि, एवं शनि, कुज (मंगलवार) और रविवार प्रशस्त हैं। स्तंभनकर्म बुध वा सोमवार्‌से युक्त पंचमी, दशमी वा पूर्णिमा तिथिमें करना चाहिये ॥ १६ ॥

शुभं शुभोदये कुर्यादशुभान्यशुभोदये ।
रौद्रकर्माणि रिक्तार्के मृत्युयोगे च मारणम्॥ १७॥

जिस समय शुभग्रहका उदय हो तब शान्तिपुष्टि इत्यादि शुभकर्मका अनुष्ठान करै और जब अशुभग्रहका उदय हो तब मारणादि अशुभ कार्यका अनुष्ठान करना चाहिये। रविवार रिक्तातिथिमें विद्वेषण और उच्चाटनादि क्रूर कर्म और मृत्युयोगमें मारणकर्म करना चाहिये ॥१७॥

अथ षट्कर्मणां नक्षत्रनियमः ।

स्तम्भनं मोहनं चैव वशीकरणमुत्तमम् ।
माहेन्द्रे वारुणे चैव कर्तव्यमिह सिद्धिदम् ॥
ज्येष्ठा चैवोत्तराषाढा चानुराधा च रोहिणी ।
माहेन्द्रमण्डलं ह्येतत्सर्वकर्मप्रसिद्धिदम् ॥
स्यादुत्तराभाद्रपदा मूला शतभिषा तथा ।

पूर्वभाद्रपदाश्लेषा ज्ञेया वारुणमध्यगाः ॥
पूर्वाषाढा तु तत्कर्मसिद्धिदा शम्भुना स्मृता ॥ १८ ॥

माहेंद्र और वारुणमण्डलमध्यगत नक्षत्रमें स्तंभन, मोहन और वशीकरण कार्य करने पर वह सिद्ध होता है। ज्येष्ठा, उत्तराषाढा, अनुराधा और रोहिणी, यह चार नक्षत्र माहेन्द्रमण्डलमध्यगत एवं उत्तरभाद्रपदा, मूल, शतभिषा, पूर्वभाद्रपदा, आश्लेषा यह पांच नक्षत्र वारुणमण्डलस्थ हैं। स्वयं श्रीमहादेवजीने कहा है कि इनके अतिरिक्त पूर्वाषाढा नक्षत्रमें भी यह सब कार्य करनेपर वे सफल होते हैं ॥१८॥

विद्वेषोच्चाटनं वह्निवायुयोगे च कारयेत् ।
स्वाती हस्तो मृगशिरा चित्रा चोत्तरफाल्गुनी ॥
पुष्यः पुनर्वसुर्वह्निमण्डलस्थाः प्रकीर्त्तिताः ।
अश्विनी भरणी आर्द्रा धनिष्ठा श्रवणं मघा ॥
विशाखा कृत्तिका पूर्वफाल्गुनी रेवती तथा ।
वायुमण्डलमध्यस्थास्तत्तत्कर्मप्रसिद्धिदाः १९॥

वह्निमण्डलगत और वायुमण्डलगत नक्षत्रमें विद्वेषण और उच्चाटन कर्म करे। स्वाती, हस्त, मृगशिरा, चित्रा, उत्तरफाल्गुनी, पुष्य और पुनर्वसु यह सात नक्षत्र अग्निमण्डलमध्यगत हैं और अश्विनी, भरणी आद्रा, धनिष्ठा श्रवण, मघा, विशाखा, कृत्तिका पूर्वफाल्गुनी और रेवती यह दश नक्षत्र वायुमण्डलमध्यगत कहे गये हैं। जिस जिस कर्ममें जो जो

कर्म प्रशस्त है वह वह कर्म उसी उसी नक्षत्रमें करना चाहिये। ऐसा होनेसेही कार्य सफल होता है ॥ १९ ॥

अथ कालविशेषनिरूपणम् ।

वश्यं पूर्वेऽह्नि मध्याह्ने विद्वेषोच्चाटनं तथा ।
शांतिपुष्टी दिनस्यांते संध्याकाले च मारणम् २०॥

वशीकरणकर्म दिनके पूर्वभागमें, विद्वेषण और उच्चाटन मध्यभागमें, शान्ति और पुष्टिकर्म शेषभागमें और मारण कर्म संध्याकालमें कर सकता है ॥ २० ॥

अथ षट्कर्मणां लग्ननिरूपणम् ।

कुर्याच्च स्तम्भनं कर्म हर्यक्षे वृश्चिकोदये ।
द्वेषोच्चाटादिकं कर्म कुलीरे वा तुलोदये ॥
मेषकन्याधनुर्मीने वश्यशान्तिकपौष्टिकम् ।
मारणोच्चाटने चासौ रिपुभेदविनिग्रहे ॥ २१ ॥

स्तंभनकर्म सिंह वा वृश्चिक लग्नमें; विद्वेषण और उच्चाटन कर्म कर्कट वा तुला लग्नमें, वश्य कर्म मेष, कन्या, धनु वा मीनलग्नमें, शान्तिपुष्टिकर्म मारण, उच्चाटन और शत्रुनिवारण इत्यादि कर्म मेष, कन्या, धनु और मीन लग्नमें करें ॥ २१ ॥

अथ षट्कर्मणां तत्वनियमः ।

जलं शान्तिविधौ शस्तं वश्ये वह्निरुदीदितः ।
स्तम्भने पृथिवी शस्ता विद्वेषे व्योम कीर्तितम्॥
उच्चाटने स्मृतो वायुर्भूम्यग्निर्मारणे मतः ।

तत्तद्भूतोदये सम्यक् तत्तन्मण्डलसंयुतम् ॥
तत्तत्कर्मविधातव्यं मन्त्रिणा निश्चितात्मना॥२२॥

शान्तिकर्म जलतत्त्वके उदयमें, वश्यकर्म अग्नितत्त्वके उदयमें, स्तंभन पृथ्वीतत्त्वके उदयकालमें, विद्वेषण गगनतत्त्वके उदयमें, उच्चाटन वायुतत्त्वके उदयकालमें, एवं मारणकर्म पृथ्वीतत्त्व वा अग्नितत्त्वके उदयकालमें करना चाहिये। इस प्रकार तत्त्वोदयका विचार करके जिस तत्त्वके उदयमें जो जो कार्य कर्तव्य है उस उस तत्त्वके उदयकालमें उस उस कार्यका अनुष्ठान करना चाहिये। कार्यके समय तत्कालीन तत्त्व१का मण्डल करके अनुष्ठान करे॥ २२॥

परचक्रभयादौ वा तीव्ररूपे महाभये ।
न कालनियमो गम्यः प्रयोगाणां कदाचन॥२३॥

शत्रुका भय अथवा अन्य किसी प्रकारका महाभय उपस्थित होनेपर उसको दूर करनेके लिये कालाकालका विचार न करे। इस प्रकारकी विपद्के उपस्थित होनेपर तत्काल शान्तिका विधान करे॥ २३॥

अथ षट्कर्मणां दिङनियमः।

तंत्रांतरे।

इन्द्रे स्तम्भनमुच्चाटमग्नौ सर्वाभिचारकम् ।
याम्ये रक्षसि विद्वेषः शान्तिर्वारुणवायवे ॥

---

१ तत्त्वके विषयको सीखना हो तो "पवनविजयस्वरोदय" नामक ग्रंथ श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस मुंबईसे मँगाकर पढिये।

कुलोत्सादो मरुद्भागे यक्षे कलहविग्रहौ ।
कुर्वीत नोदितं कर्म यच्चान्यद्ब्रह्मणः पदे ॥२४॥

किसी किसी तंत्रमें वर्णित है कि स्तम्भन उच्चाटनकार्यमें पूर्वदिशा, समस्त अभिचार कार्योंमें अग्निकोण, विद्वेषणमें दक्षिण और नैर्ऋत, शान्तिकर्ममें पश्चिम दिशा और वायुकोण, कुलोच्छेदमें वायुकोण और कलहविग्रहादि (लडाई) इत्यादिमें नैर्ऋतकोण प्रशस्त है । जिस जिस कर्मका विषय इस श्लोकमें नहीं कहा है, उस उस कर्मको ईशानकोणमें करना चाहिये ॥ २४ ॥

अथ षट्कर्मणां वर्णभेदः ।

वश्ये चाकर्षणे क्षोभे रक्तवर्णं विचिन्तयेत् ।
निर्विषीकरणे शान्तौ पुष्टौ चाप्यायने सितम् ॥
पीतं स्तम्भनकार्येषु धूम्रमुच्चाटने स्मृतम् ।
उन्मादे शक्रगोपाभं कृष्णवर्णं तु मारणे ॥२५॥

वश्यकर्म, आकर्षण और क्षोभ इन तीन कार्योंमें देवताको लोहित वर्ण, शांति विषदूरीकरण और पुष्टि इन तीन कार्यमें शुभ्रवर्ण, स्तंभनमें पीतवर्ण, उच्चाटनमें धूम्रवर्ण, उन्मादमें लोहितवर्ण और मारण कर्ममें देवताका कृष्णवर्ण ध्यान करना चाहिये ॥ २५ ॥

अथ देवतानामुत्थितादयः ।

उत्थितं मारणे ध्यायेत्सुप्तमुच्चाटने प्रभुम् ।
उपविष्टं सुरेशानि सर्वत्रैवं विचिन्तयेत् ॥२६॥

मारण कर्ममें देवताको उत्थित, उच्चाटनमें निद्रित (सोया हुआ) और अपरापर कार्योंमें तत्तत् देवताको बैठा हुआ ध्यान करे ।। २६ ।।

अथ षट्कर्मणां सात्त्विकादौ वर्णविशेषचिंतनम् ।

आसीनं श्वेतरूपं तु दासोत्विकसमुद्धतम् ॥
राजसे पीतवर्णं तु रक्तं श्याममुदाहृतम् ।
यानमार्गस्थितं तूर्णं कृष्णं तामस उच्यते॥२७॥

सात्त्विककर्ममें समासीन और शुभ्र वर्ण, राजस कर्ममें पीत, लोहित, वा श्याम और तामस कार्यमें यानमार्गगत और कृष्ण-वर्ण कथित है ।। २७ ।।

सात्त्विकं मोक्षकामानां राजसं राज्यमिच्छताम्।
तामसं शत्रुनाशार्थं सर्वव्याधिनिवारणम् ॥
सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं तामसं तु विचिन्तयेत्॥२८॥

मुक्तिकी कामना करनेवाला मनुष्य सात्त्विक कर्मका और राज्यकी अभिलाषा करनेवाला मनुष्य राजस कर्मका अनुष्ठान करे। शत्रुका नाश करनेके लिये और समस्त पीडाओंकी शांतिके लिये तथा सब प्रकारका उपद्रव निवारणके निमित्त तामस कर्मका आचरण करना चाहिये ।। २८ ।।

अथ मन्त्रस्याधिष्ठातृदेवता ।

रुद्रारतार्क्षगन्धर्वयक्षरक्षोऽहिकिन्नराः ।
पिशाचभूतदैत्येन्द्रसिद्धाः किंपुरुषासुराः ॥

सर्वेषामपि मन्त्राणां एते पञ्चदश स्मृताः ।
केचिदष्टादश प्राहुः समग्राणां नृणां मताः ॥२९॥

रुद्र मङ्गल, गरुड, गन्धर्व, यक्ष, रक्ष, भुजंग, किन्नर, पिशाच, भूत, दैत्य, इन्द्र, सिद्ध, विद्याधर, असुर यह पन्द्रह देवता सब मन्त्रोंके अधिष्ठाता हैं। कोई २ अठारह देवता बताते हैं ॥२९॥

अथ मन्त्राणां वर्णसंख्याभेदे संज्ञाः ।

एकमन्त्रात्मको वर्णः कर्तरी समुदाहृतः ।
वर्णाभ्यां सूचिका प्रोक्ता रामसंख्यैस्तु मुद्गरः ॥
चतुर्भिर्मुसलः ख्यातो मन्त्रसंख्याविचारणे ।
क्रूरः शनिः पञ्चवर्णैः षड्भिर्वर्णैस्तु शृंखलः ॥
क्रकचः सप्तभिः शूलश्चाष्टभिर्नवभिः पविः ॥
शक्तिश्च दशभिश्चैकादशभिः परशुः स्मृतः ॥
चक्रं द्वादशभिर्वर्णैः कुलिशः स्यात्त्रयोदशैः ।
चतुर्दशैस्तु नाराचो भुशुण्डी पक्षवर्णकः ॥
पद्मं षोडशभिर्वर्णैर्मन्त्रच्छेदे तु कर्त्तरी ।
भेदे तु कथिता सूची भञ्जने मुद्गरः स्मृतः ॥
मुसलं क्षोभणे बन्धे शृंखलः क्रकचश्छिदि ।
घाते शूलं पविः स्तम्भे शक्तिर्बन्धे च कर्मणि ॥
विद्वेषे परशुं चक्रं सर्वकर्मसु योजयेत् ।

उत्सादे कुलिशः शस्तो नाराचः सैन्यभेदने ॥
भुशुण्डी मारणे पद्मं शान्तिपुष्ट्यादिकर्मणि ।
चक्रंतु रञ्जकं कर्म सर्वत्रैवं प्रयोजयेत् ॥
क्वचिदेवं दर्शितंतु वामाचारविरोधनम् ।
सहस्राक्षरमन्त्रादेः प्रयोगो विधिदर्शनात्॥३०॥

एक वर्णात्मक मन्त्रको कर्त्तरी, द्व्यक्षर मन्त्रको सूची, त्र्यक्षरकोमुद्गर, चतुरक्षरको मुसल, पञ्चारक्षको क्रूर, षडक्षरको शृंखल, सप्त वर्णात्मक मन्त्रको क्रकच, अष्टाक्षरको, शूल, नवाक्षरको वज्र, दशाक्षरको शक्ति, एकादशाक्षरको परशु, द्वादशाक्षरको चक्र, त्रयोदशाक्षरको कुलिश, चतुर्दशाक्षरको नाराच, पंचदशाक्षरको भुशुंडी, और षोडशाक्षर मन्त्रको पद्म कहते हैं। मंत्रच्छेदमें कर्तरी, भेद कर्ममें सूची, भंजनमें मुद्गर, क्षोभणमें मुसल बन्धनमें शृंखल, छेदनमें क्रकच, घातकर्ममें शूल, स्तंभनमें वज्र बन्धनमें शक्ति विद्वेषमें परशु सर्वकर्ममें चक्र, उत्सादमें कुलिश, सैन्यभेदमें नाराच, मारणमें भुशुंडी एवं शक्ति और शांति पुष्टि इत्यादि कर्ममें पद्ममंत्र प्रशस्त है रञ्जक कर्ममें चक्र प्रशस्त है इन सब कर्मोंको वामचारविरोधी जानना सहस्र अक्षरवाले मंत्रादिके प्रयोगमें विधि देखनेसे ॥ ३० ॥

अथ कार्यविशेषे योजनपल्लवादिनिर्णयः ।

पञ्चाशद्वर्णरूपात्मा मातृका परमेश्वरी ।
तत्रोत्पन्ना महाकृत्या त्रैलोक्यभयदायिनी ॥
यथाकामो जपःकार्यो मन्त्राणामपि मे शृणु॥३१

मातृका देवी पञ्चाशद्वर्णरूपिणी है, इन सब वर्णोंसे उत्पन्न मंत्रोंके द्वारा तीनों लोकोंको भय होता है। और मनुष्यगण जिस इच्छासे मंत्र जपते हैं वह उसी इच्छासे सिद्ध होती है ॥३१॥

मन्त्रादौ योजनं नाम्नः पल्लवः परिकीर्त्तितः ।
मारणे विश्वसंहारे ग्रहभूतनिवारणे ॥
उच्चाटने च विद्वेषे पल्लवः परिकीर्त्तितः ।
मन्त्रान्ते नामसंस्थानं योग इत्यभिधीयते ॥
शान्तिके पौष्टिके वश्ये प्रायश्चित्तविशोधने ।
मोहने दीपने योगः प्रयुञ्जन्ति मनीषिणः ॥
स्तम्भनोच्चाटनोच्छेदविद्वेषेषु स चोच्यते ॥३२॥

समस्त मंत्र दो दो प्रकारके हैं पल्लव और योजन । जिस मंत्रके आदिमें नामकी योजना हो, उसका नाम पल्लव है । मारण, संहार, ग्रहभूतवारण, उच्चाटन और विद्वेषण इन सब कार्योंमें पल्लव मंत्रही प्रशस्त है । जिस मंत्रके अंतमें नामकी योजना हो उसको योजन मंत्र कहते हैं । शान्ति, पुष्टि, वशीकरण प्रायश्चित्त मोहन और दीपन इन सब कार्योंमें योजन मंत्रही प्रशस्त है । इसके अतिरिक्त स्तंभन, उच्चाटन, उच्छेद और विद्वेषणमें भी योजन मन्त्रको प्रयोग करे ॥ ३२ ॥

नाम्न आद्यन्तमध्येषु मन्त्रः स्याद्रोधसंज्ञकः ।
मन्त्राभिमुख्यकरणे सर्वव्याधिनिवारणे ॥
ज्वरग्रहविषाद्यार्त्तिशान्तिकेषु स चोच्यते ।
सम्मोहने स एवाथ मन्त्राणामक्षराणि च ॥३३॥

नामके प्रथम, मध्य और अन्तमें मन्त्र होनेसे उसका नाम रोध है। अभिमुखीकरण, सब प्रकार पीडाविदूरण और ज्वर, ग्रह, विषादिकी शान्ति इन सब कार्योंमें यही मन्त्र प्रशस्त है। संमोहन कर्ममें भी रोधमंत्रका प्रयोग करे ।। ३३ ।।

एकैकान्तरितं यत्त ग्रथनं परिकीर्तितम् ।
तच्छान्तिके विधातव्यं नामाद्यन्ते यथा मनुः ॥
तत्संपुटं भवेत्तत्त कीलने परिभाषितम् ।
स्तम्भे मृत्युञ्जये इच्छद्रक्षादिषु च संपुटम् ॥३४॥

नामके एक एक अक्षरके पीछे मंत्र होनेसे उसका पर नाम मन्त्र है। शान्तिकर्ममें इस मन्त्रका प्रयोग करना चाहिये। नामके प्रथम अनुलोम और अन्तमें विलोममें मंत्र होनेसे उसको संपुट कहते हैं। कीलित कार्यमें इसका प्रयोग करे। इस संपुट मंत्रको स्तंभन, मृत्युनिवारण और रक्षादि कार्यमें भी प्रयोग करना उचित है ।। ३४ ।।

मन्त्रामादौ वदेत्सर्वं साध्यसंज्ञामनन्तरम् ।
विपरीतं पुनश्चान्ते संपुटं तत्स्मृतं बुधैः ॥३५॥

पण्डितजन कहते हैं। प्रथम मन्त्र वर्ण उच्चारण करके फिर साध्यनाम उच्चारण करे। इसके पीछे समस्त मन्त्रके अक्षर विलोम क्रमानुसार उच्चारण करनेपर संपुट होता है ।।३५।।

मन्त्रार्णं द्वन्द्वमेकैकं साध्यनामाक्षरं क्रमात् ।
कथ्यते स विदर्भस्तु वश्याकर्षणपौष्टिके ॥३६॥

मंत्रके दो दो अक्षर और साध्यनामके दो दो अक्षर क्रमानुसार उच्चारण करनेपर वह विदर्भ मन्त्र कहा जाता है। वशीकरण, आकर्षण और पुष्टि कार्यमें इसका प्रयोग करना चाहिये ।। ३६ ।।

अथ कर्मविशेषे हुँफट्वषडादीनि ।

बन्धनोच्चाटने द्वेषे संकीर्णे हुंपदं जपेत् ।
फट्कारं छेदने हुँफट् रिष्टिग्रहनिवारणे ॥
पुष्टौ चाप्यायने वौषट् बोधने मलिनीकृतौ ।
अग्निकार्ये जपेत्स्वाहां नमः सर्वत्र चार्चने॥३७॥

बंधन, उच्चाटन, विद्वेषण और संकीर्णमें हुँ, छेदनमें फट्, रिष्टिग्रहशान्तिमें हुँफट्, पुष्टि कर्म, आप्यायन, बोधन कर्म, मलिनीकरण कर्ममें वौषट्, होम करनेमें स्वाहा और अर्चना (पूजा) में नमः शब्द प्रयोग करना चाहिये ।। ३७ ।।

शान्तिपुष्टिवशद्वेषाकृष्टच्चुच्चाटनमारणे ।
स्वाहा स्वधा वषट् हुँच वौषट् फट् योजयेत्क्रमात् ॥
वश्याकर्षणसन्तापं ज्वरे स्वाहां प्रकीर्त्तयेत् ।
क्रोधोपशमने शान्तौ प्रीतौ योज्यं नमो बुधैः॥
वौषट् सम्मोहनोद्दीपपुष्टिमृत्युञ्जयेषु च ।
हुँकारं प्रीतिनाशे च च्छेदने मारणे तथा ॥
उच्चाटने च विद्वेषे वौषट् चान्धीकृतौ वषट् ।
मन्त्रोद्दीपनकार्येषु लाभलाभे वषट् स्मृतम्॥३८॥

स्वाहा यह मंत्र शान्तिकर्म और पुष्टिकर्ममें स्वधा वशीकरणमें, वषट् विद्वेषणमें, हुँ आकर्षणमें, वौषट् उच्चाटनमें और फट् यह मंत्र मारण कर्मकी पूजामें प्रयोग करे। वशीकरण, आकर्षण और ज्वर दूर करनेमें भी स्वाहा मंत्र प्रशस्त है। पण्डितजन कहते हैं कि नमः शब्द क्रोधशांति, शांतिकर्म, और प्रीतिवर्द्धनकार्यमें प्रयोग करना चाहिये। वौषट् यह मंत्र संमोहन, उद्दीपन पुष्टि और मृत्युनिवारण इन सब कार्योंमें, हुँ यह मंत्र प्रीतिभंजन छेदन और मारणमें, वौषट् यह मंत्र उच्चाटनमें और विद्वेषणमें, एवं वषट् यह मंत्र अंधीकरणमें, मंत्र चैतन्यमें और लाभालाभादिकर्मोंमें प्रयोग करना चाहिये ॥ ३८ ॥

अथ मन्त्राणां स्त्रीपुंनपुंसकादिनिरूपणम् ।

स्त्रीपुंनपुंसकत्वेन त्रिधा स्युर्मन्त्रजातयः ।
स्त्रीमन्त्रा वह्निजायान्ता नमोऽन्ताश्च नपुंसकाः॥
हुँफडन्ताः पुमांसः स्युर्वश्यशान्त्यभिचारके ।
क्षुद्रक्रियाद्युपध्वंसे स्त्रियोऽन्यत्र नपुंसकाः॥३९॥

मन्त्र तीन प्रकार के हैं। स्त्री, पुरुष और नपुंसक भेदसे, जिन मंत्रोंके अन्तमें स्वाहा पद रहता है, वे स्त्रीसंज्ञक हैं। जिनके शेषमें नमः शब्दका प्रयोग होता है, वे नपुंसक और जिनके अन्तमें हुँ फट् रहता है। उनको पुरुषसंज्ञक जानना चाहिये पुरुषमन्त्र वशीकरण, शान्ति और अभिचार कार्यमें स्त्रीमन्त्र क्षुद्रक्रियादिके नाशमें और नपुंसक मन्त्रका इनके अतिरिक्त कर्मोंमें प्रयोग होता है ॥३९॥

तारान्त्याग्निविषप्रायो मन्त्र आग्नेय उच्यते।
सौम्याश्च मनवः प्रोक्ता भूयिष्ठेन्द्वमृताक्षराः ॥
आग्नेयमन्त्राःसौम्याःस्युः प्रायशांतेनमोऽन्विताः
मन्त्रः शान्तोऽपि रौद्रत्वं हुँफट्पल्लवितो यदि ॥
सुप्तःप्रबुध्यमानोऽपि मन्त्रः सिद्धिं न गच्छति।
स्वापकालो वामवहो जागरो दक्षिणावहः ॥
स्वापकाले तु मन्त्रस्य जपो न च फलप्रदः।
आग्नेयाः संप्रबुध्यन्ते प्राणे चरति दक्षिणे ॥
वामे चरति सौम्याश्च प्रबुद्धा मन्त्रिणां सदा।
नाडीद्वयगते प्राणे सर्वे बोधं प्रयान्ति च ॥
प्रयच्छन्ति फलं सर्वे प्रबुद्धा मन्त्रिणां सदा॥४०॥

जिस मंत्रके अंतमें ओम् शब्द है, उसका नाम आग्नेय है। जिस मंत्रमें इंदु और अमृताक्षर विद्यमान रहा है, उसको सौम्य मंत्र कहते हैं। यदि आग्नेय मंत्रके अंतमें नमः शब्दका प्रयोग हो तो वह प्रायः सौम्य मंत्रमेंही गिना जायगा। यदि सौम्य मंत्र भी हुँ फट्से पल्लवित हो तो वह रुद्रभावको भजता है अर्थात् वह भी आग्नेयवत् हो जाता है। सुप्त मंत्र किसी समयमें भी सिद्धिप्रदान नहीं करता। जबतक वाम नासिकामें स्वांस चलता है तबतक मंत्रको निद्रावस्था जाननी चाहिये और जब दाहिनी नासिकासे स्वांस चलने लगे, तब मंत्रको जाग्रदवस्था जाननी। निद्रित अवस्थामें मंत्र जपनेसे वह विफल हो जाता है। जब

तक दाहिनी नासिकासे स्वांस चलता है उस काल आग्नेयमंत्र जागता है और जब बाँई नासिकासे स्वांस चलता है उस काल सौम्यमन्त्र जागरित रहता है और जब दोनों नासिकासे स्वांस चलता है तब सबही मन्त्र जागरित रहते हैं। जागते हुए मंत्र को जपनेसे अवश्य सिद्धि प्राप्त होती है, इसमें संदेह नहीं॥४०॥

अथ आसनानि।

आसनानि प्रवक्ष्यामि कर्मणां विहितान्यपि।
पद्मासनं पौष्टिके तु शान्तिके स्वस्तिकासनम्॥
आकृष्टे पौष्टिके तद्वद्विद्वेषे कुक्कुटासनम्।
अर्द्धस्वस्तिकमुच्चाटे अर्द्धस्थापनपार्ष्णिकम्॥
मारणे स्तम्भने तद्वद्विकटं परिकीर्त्तितम्।
वश्ये भद्रासनं तेषां कथ्यते चाथ भावना॥४१॥

अब षट्कर्म साधनमें आसनोंका विषय कहा जाता है पद्मासन बांधकर पुष्टिकर्म, स्वस्तिकासनसे शान्तिकर्म, कुक्कुटासनसे आकर्षणकर्म, पुष्टिकर्म और विद्वेषणकर्म करना चाहिये। इनके अतिरिक्त अर्द्धस्वस्तिकासन द्वारा उच्चाटन, अर्धस्थापनपार्ष्णिकासनसे मारण, विकटासनद्वारा स्तंभन एवं भद्रासन बांधकर वशीकरणकार्य सम्पन्न करना चाहिये॥४१॥

अथ विकटकुक्कुटासनयोर्लक्षणम्।

जानुजंघान्तरालेषु भुजयुग्मं प्रवेशयेत्।
विकटासनमेतत्स्यादुपविश्योत्कटासने।

कृत्वोत्कटासनंचैव समपादद्वयं ततः ॥
वश्ये मेषासनं प्रोक्तं आकृष्टिर्व्याघ्रचर्मणि ॥
उष्ट्रासनं तथोच्चाटे विद्वेषे तूरगासनम् ।
मारणे माहिषं चर्म मोक्षे गजाजिनं भवेत् ॥
अथवा कम्बलं रक्तं सर्वकर्मसु कारयेत् ॥ ४२॥

अब विकटासन और कुक्कुटासनके लक्षण कहे जाते हैं। जानु और जंघाके बीचमें दोनों भुजा प्रवेशित करनेसेही उसको विकटासन कहते हैं। इस प्रकारसे विकटासन करके दोनों पैरोंको समानभागमें स्थापनपूर्वक जानुमें दोनों हाथ प्रवेशित करे। इसीका नाम कुक्कुटासन है। मेषचर्ममें वशीकरण, व्याघ्रचर्ममें आकर्षण, उष्ट्र (ऊंट) चर्ममें उच्चाटन, अश्वचर्ममें विद्वेषण, महिषचर्ममें मारण और हाथीके चर्मपर बैठकर मोक्षसाधन-कर्मका अनुष्ठान करना चाहिये। लालवर्णके कम्बलासन पर बैठकर सबही कार्य साधन कर सकता है ॥ ४२ ॥

अथ षण्मुद्राः ।

षण्मुद्राः क्रमशो ज्ञेयाः पद्मपाशगदाह्वयाः ।
मुसलाशनिखड्गाख्याःशान्तिकादिषु कर्मसु ४३॥

षट्कर्मसाधन में छः प्रकारकी मुद्राका होना आवश्यक है। यथा–पद्म, पाश, गदा, मुसल, वज्र और खड्ग पद्ममुद्राकी सहायतासे शान्तिकर्म. पाशमुद्रासे गदामुद्रासे वशीकरण स्तंभन मुसलमुद्रासे विद्वेषण, वज्रमुद्रासे उच्चाटन और खड्ग मुद्राकी

सहायता मारणकर्म करना चाहिये । जिस कर्ममें जिस मुद्राका विषय लिखा गया है उस मुद्राकी सहायतासे उसी तरह करने पर कार्य सिद्ध होता है ।। ४३ ।।

अथ देवध्यानम् ।

शान्तिपौष्टिकवश्येषु सौन्दर्यातिशयान्विताः ।
सर्वाभरणसंदीप्ताः प्राप्तकालमनोरथाः ॥
ध्यातव्या देवताः सम्यक्सुप्रसन्नाननाम्बुजाः ।
आकर्षणोऽपि तद्वच्च बडिशैरिव मत्स्यकान् ॥
साध्यमाकर्षणे द्वेषे भर्त्स्यमानं जनैरिव ।
वध्यमानो जनैर्दण्डडैरितस्तस्करो यथा ॥
उलूको वा यथारिष्टैर्मन्तव्योच्चाटने रिपुः ।
यत्किञ्चिच्छवमारुह्य सन्दष्टौष्ठपुटः क्रुधा ॥
कर्म कुर्यात्ततो मन्त्रो यथा क्रूरेषु कर्मसु ॥४४॥

षट्कर्मको जिस कार्यमें किस भावसे देवताका ध्यान करे सो कहा जाता है । शांति, पुष्टि, वशीकरण और आकर्षण इन चार कार्योंका साधन करना हो तो देवताको अति सुंदरी सब गहनोंसे विभूषित, नवयौवनसम्पन्न और प्रसन्न वदन ध्यान करना चाहिये । वंशीके द्वारा जिस प्रकार मत्स्य (मछली) को खैंच लिया जाता है. ऐसेही आकर्षण कर्मके द्वारा अभिलषित मनुष्यको अपनी ओर खैंच लिया जाता है । यदि अभिचार

कर्म करना हो शवारूढ (मुरदेपर बैठकर) होकर कार्यका अनुष्ठान करना चाहिये ।। ४४ ।।

अथ षट्कर्मणां कुण्डनिर्णयः ।

विद्वेषे चाभिचारे च त्रिकोणं कुण्डमिष्यते ।
द्विमेखलं कोणमुखं हस्तमात्रंतु सर्वतः ॥
उच्चाटनंतु नैर्ऋत्यां शत्रुपक्षस्य कारयेत् ।
उत्सादनंतु वायव्यां देवानामपि कारयेत् ॥
शत्रूणां तापने शस्तं योन्याख्यमग्निकोणगम् ।
अर्द्धचन्द्रन्तु याम्यायां शत्रूणां मारणे स्थितम् ॥
त्रिकोणं नैर्ऋते कुण्डं रिपूणां व्याधिवर्द्धनम् ।
दाहायाग्नौ च विद्वेषे कुण्डं पूर्णेन्दुसन्निभम् ॥
चतुरस्रं वा कर्त्तव्यं द्वेषादौ तु विचक्षणैः ।
कुण्डं सुलक्षणं कृत्वा तत्र कर्माणि साधयेत् ॥
चतुरस्रे भवेद्वश्यमाकृष्टिस्तु त्रिकोणके ।
कर्षणस्तम्भने देवि बिद्वषं च त्रिकोणके ॥
अथैवोच्चाटनं प्रोक्तं षट्कोणे मारणं स्मृतम् ।
उदीच्यां पौष्टिके कुण्डं वारुण्यां शान्तिकादिषु ॥
उच्चाटे चानिले कुण्डं याम्ये च मारणं भवेत् ।
मानहीनादिकं दोषं नास्ति कुण्डेऽभिचारके ॥

शुभेषु स्युर्विवाहान्ताः क्रियास्ताः क्रूरकर्मणि ।
मारणान्ताः समुद्दिष्टा वह्नेरागमवेदिभिः ॥४५॥

अब षट्कर्मके साधन करनेमें कैसे कुण्डकी आवश्यकता है सो कहते हैं । यदि विद्वेषण कर्मका अनुष्ठान करना हो तो कुंड बनावे । इस कुण्डकी दो मेखला हों और कुण्डको एक हाथकी बराबर करे । नैर्ऋतकोणमें इस कुण्डका मुख रक्खे । यदि शत्रुपक्षका उच्चाटन करना हो तो नैर्ऋतकोणमें और देवोच्चाटन करना हो तो मंडपके वायुकोणमें कुंड बनावे। योनिकुंडमें अरितापन कर्मका अनुष्ठान करना चाहिये । मण्डपके अग्निकोणमें इस कुण्डका होना आवश्यक है । यदि शत्रुका मारण कार्य साधन करना हो तो अर्द्धचंद्रकुंड निर्माण कर मण्डपके दाहिने भागमें यह कुंड स्थापन करना चाहिये । यदि शत्रुकी पीडाको बढाना हो तो त्रिकोण कुण्ड करे और इस कुंडको मण्डपके नैर्ऋतकोणमें रहना उचित है । विद्वेषणमें पूर्णचन्द्रके समान कुण्ड करना चाहिये । और इस कुण्डको मण्डपके अग्निकोणमें रखे । इसके अतिरिक्त विद्वेषणादिमें चतुरस्र (चौकोन)कुण्ड भी कर सकते हैं। कुंडको सर्व सुलक्षणोंसे युक्त करके कार्यका अनुष्ठान करना चाहिये । वशीकरण चतुरस्र (चौकोन) कुंडमें आकर्षण, स्तम्भन और उच्चाटन त्रिकोण कुंडमें, और मारण कर्म षट्कोण कुण्डमें करे । पुष्टि कर्म साधन करना हो तो पश्चिम दिशामें उच्चाटन कार्य वायुकोणमें, और मारण कार्य साधन करना हो तो दक्षिण दिशामें कुण्ड बनाना चाहिये। अभिचारकर्ममें कुण्डके परिमाणमें न्यूनाधिक

(कम जादा) होनेसे भी कोई दोष नहीं होता। आगमके जाननेमें चतुर बुद्धिमान् पुरुष विवाह इत्यादि कर्मको शुभ और स्तंभनसे लेकर मारणतक कर्मोंको क्रूर कर्म कहते हैं ॥४५॥

अथ षट्कर्मणां प्राधान्यनिरूपणम्।

वश्यात्स्तम्भनमुत्कृष्टं स्तम्भनान्मोहनं महत्।
मोहनाद्विद्वेषणं श्रेष्ठं द्वेषादुच्चाटनं वरम्॥
उच्चाटनादपि महन्मारणं सर्वतो महत्।
मारणादधिकं कर्म न भूतं भविष्यति॥
तत्रैव दक्षिणे चित्तं कृत्वा मारणमारभेत्।
शान्तिपुष्टी दिनस्यान्ते सन्ध्याकाले तु मारणम् ४६

स्तंभनकर्म वशीकरणसे श्रेष्ठ है, स्तम्भनसे मोहन, मोहनसे विद्वेषण, विद्वेषणसे उच्चाटन और उच्चाटनसे मारण कर्म श्रेष्ठ कहा गया है। अतएव छहों कर्ममें मारणही सबसे श्रेष्ठ है। इसकी अपेक्षा श्रेष्ठ कार्य न कभी हुआ और न आगे होगा। दिनके शेष अंशमें शांति और पुष्टि कर्म एवं संध्याकालमें मारण कार्यका अनुष्ठान करना चाहिये ॥४६॥

अथ षट्कर्मणां कुम्भस्थापनम्।

शान्तिके स्वर्णकुम्भं च नवरत्नैर्विभूषितम्।
तदभावे रौप्यकुंभं ताम्रं वापि सुलक्षणम्।
अभिचारे लौहकुंभं स्थापयेत्सुसमाहितः॥
उत्सादे काचकुम्भं च मोहने रैत्यकुंभकम्॥

उच्चाटने च मृत्कुम्भं कालमण्डलसंस्थितम् ।
सर्वकर्मणि वा कुर्यात्कुम्भं ताम्रमयं तथा ॥४७॥

अथ षट्कर्म साधनमें कैसे कुम्भकी आवश्यकता है सो कहते हैं यदि शांतिकर्म साधन करना हो तो अनेक रत्नोंसे विभूषित सुवर्णका कुंभ स्थापन करे उसके न मिलने पर चांदी कुंभ और चांदीका कुंभ भी यदि न मिले तो सुलक्षण युक्त तांबेका कुंभ, स्थापन करके कार्य करे । इसी प्रकार अभिचार कार्यमें लोहेका कुंभ, उत्साद कार्यमें कांचका कुंभ, मोहन कार्यमें पीतलका कुंभ और उच्चाटन कार्यमें मट्टीका कुंभ स्थापन करना चाहिये । तांबेके कुंभसे सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं ।। ४७ ।।

अथ कुम्भे पूजानियमः ।

तत्कुम्भंचाथ संस्थाप्य रुद्रं देवीञ्च पूजयेत् ।
उपचारक्रमेणैव देवं ध्यायेद्यथाविधि ॥
शूलहस्तं महारौद्रं सर्ववैरिनिषूदनम् ।
पूर्णचन्द्रसमाभासं रुद्रं वृषभवाहनम् ॥
अथवान्यप्रकारेण ध्यानं कुर्यात्समाहितः ॥
काश्मीरस्फटिकप्रभं त्रिनयनं पञ्चाननं शूलिनं
खट्वाङ्गासिवरप्रसादडमरूचक्राब्जबीजाभयम् ॥
बिभ्राणं दशदोर्भिरक्षजटिलं वीरासने संस्थितम्
गौरीश्रीसहितं सदैवमखिलं ध्यायोच्छिवं चर्मिणम्॥

रुद्रमन्त्रेण कुर्याच्च उपचारान्पृथग्विधान् ।
भद्रकालीञ्च संपूज्य नैवेद्यैश्च पृथग्विधैः ॥
पट्टवस्त्रैरलङ्कारैर्बलिदानैः पृथग्विधैः ।
यत्र न स्यादुपायोऽन्यः शत्रोर्भयनिवृत्तये ॥
तदानन्यगतित्वेन मारणादीनि कारयेत् ॥४८॥

यथाविधि कुंभस्थानपूर्वक अनेक प्रकारके उपचारसे रु और भद्रकाली देवीकी पूजा करे । रुद्रका जिस प्रकार ध्या करना चाहिये अब वही कहा जाता है रुद्रदेव शूलहस्त महाभयकरस्वरूप, सर्व शत्रुनाशक, पूर्णचन्द्रके समान आभायुक्त और वृषभवाहन हैं इस प्रकारसे रुद्रदेवका ध्यान करके पूज करनी चाहिये। मतान्तरमें अन्य प्रकारका ध्यान कर सकता है यथा–काश्मीर स्फटिक सम शरीरकान्ति, त्रिलोचन, पञ्चमु और दश हस्त हैं इन हाथोंमें शूल, खट्वांग (अस्त्रविशेष) असि, वरमुद्रा, प्रसादमुद्रा, डमरू, चक्र, पद्म, बीज औ अभयमुद्रा विद्यमानहै। उनके मस्तकपर जटाजूट, वे वीरासन विराजमान और उनके दोनों पार्श्वमें गौरी और लक्ष्मीदेव विराजमान हैं। इस प्रकार ध्यान करके 'त्र्यंबक यजाम सुगन्धि पुष्टिवर्द्धनं उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् इस रुद्रमंत्रसे देवताकी पूजा करे । इसके पीछे पृथक् नैवेद्या उपचारसे भद्र कालीकी पूजा करे इन देवी देवताकी पूजा पट्टवस्त्र (रेशमी वस्त्र) विभूषण और बलिदानादि समस उपचार भिन्न भिन्न रीतिसे देवे ।। ४८ ।।

दीपादग्निं समानीय धूपाद्वा चान्त्यजादपि ।
विद्वेषणाभिचारे च क्रव्यादंशं न संत्यजेत् ॥
अत्र चैव विधायाग्निं परिस्तीर्य शरैस्तृणैः ।
बिभीत्तकपरिध्या च कल्पयेद्यस्य मारणम् ॥
जुहुयान्निम्बतैलाक्तैः काकोलूकैश्च पिङ्गकैः ।
दारयैनं शोषयैनं मारयेत्यभिधाय च ॥
अष्टोत्तरशतेनैव मनसा जुहुयादृचा ।
होमान्ते विधिवत्कृत्यामाराध्याग्नेश्च सन्निधौ ॥
यो मे च कण्टकं दूराद्दूरं वा चान्तिकेऽपि च ।
पिब हृद्यमसृक् तस्य इत्युक्त्वा च निवेदयेत् ॥
संरक्ष्याग्निं विधानेन नवरात्रिं समापयेत् ।
मृतस्तिष्ठति ज्ञात्वैवं तावदस्य रिपोर्मृतिः ॥
वसनं लोहितं प्रोक्तमुष्णीषं लोहितं स्मृतम् ।
जप होमादौ सङ्कल्प्य तदाचरणमारभेत् ॥४९॥

जहां शत्रुभयके दूर होनेका कोई दूसरा उपाय नही है, वहां विवश होकर मारण कर्मका अनुष्ठान करना चाहिये । शत्रु घरकी दीपाग्नि वा धूपाग्नि लाकर उसके द्वारा अभिचार कर्म करना चाहिये । विद्वेषणादि अभिचारिक कर्मके होम समयमें क्रव्यादश परित्याग न करें। यथाविधि अग्निस्थापन करके शर तृछ द्वारा अग्नि परिस्तरण करे । फिर नीमके तेलमें सने हुए

कौएके पंख और उल्लूके पंखोंसे होम करे। फिर जिसके नाश करनेकी अभिलाषासे कर्म करे, उसको लक्ष्य करके एनं दारय एनं शोषय एनं मारय इस प्रकार वाक्य उच्चारण करके मानसिक मन्त्रसे एकसौ आठ वार होम करे। होमके पीछे अग्निके निकट कृत्या देवीकी पूजा करके 'दूरमें अथवा समीपमें मेरा जो कोई शत्रु है, उसका मांस भक्षण करो' यह कहकर निवेदन करना चाहिये। इस प्रकारके नियमसे अग्निकी रक्षा करता हुआ नव रात्रितक जप होम इत्यादि करके कर्म समाप्त करने पर शत्रुका नाश हो जाता है। मारण कार्यमें वस्त्र और पगडी इत्यादि लाल वर्णकी होनी चाहिये। जप होम इत्यादिके प्रथम संकल्प करके कार्य करे ॥ ४९ ॥

अथ मालानिर्णयः।

सनत्कुमारसंहितायाम्।

तर्जनी मध्यमानामा कनिष्ठा चेति ताः क्रमात्।
तिस्रोऽङ्गुल्यस्त्रिपर्वाणो मध्यमा चैकपर्विका ॥
पर्वद्वयं मध्यमाया मेरुत्वेनोपकल्पयेत् ॥

तत्र क्रममाह सनत्कुमारसंहितायाम्।

अनामा मध्यमारभ्य कनिष्ठादित एव च।
तर्जनीमूलपर्यन्तं दशपर्वसु संजपेत् ॥

तथा।

अनामामूलमारभ्य कनिष्ठादित एव च।
तर्जनीमध्यपर्यन्तमष्टपर्वसु संजपेत् ॥

एतद्वचतन्तु अष्टोत्तरशतादिविषयम् ।

शक्तिविषये पुनः ।

अनामिकात्रयं पर्व कनिष्ठायास्त्रिपर्विका ।
मध्यमायाश्च त्रितयं तर्जनीमूलपर्वणि ॥
तर्जन्यग्रे तथा मध्ये यो जपेत्स तु पापकृत् ॥

इति नारदवचनात् ।

तथा हंसपरमेश्वरे ।

पर्वद्वयमनामायाः परिवर्त्तेन वै क्रमात् ।
पर्वत्रयं मध्यमायास्तर्जन्येकं समाहरेत् ॥
पर्वद्वयंच तर्जन्या मेरुं तद्विद्धि पार्वति ।
शक्तिमाला समाख्याता सर्वतन्त्रे प्रदीपिका ।

तथा ।

अनामामूलमारभ्य प्रादक्षिण्यक्रमेण च ।
मध्यमामूलपर्यन्तमष्टपर्वसु संजपेत् ॥

इदमप्यष्टोत्तरशतादिविषयम् ।

श्रीविद्याविषये पुनः ।

अनामामध्यमायाश्च मूलाग्रं च द्वयं द्वयम् ।
कनिष्ठायाश्च तर्जन्यास्त्रयं पर्व सुरेश्वरि ॥
अनामामध्यमायाश्च मेरुः स्याद्द्वितयं श्रुतम् ।
प्रादक्षिण्यक्रमाद्देवि जपेत्त्रिपुरसुन्दरीम् ॥

इति यामलवचनात् ।

कनिष्ठामूलमारभ्य प्रादक्षिण्यक्रमेण च ।
तर्जनीमूलपर्यन्तमष्टपर्वसु संजपेत् ॥

इदमप्यष्टोत्तरशतविषयम् ।

मुण्डमालातन्त्रे ।

अनामिकाद्वयं पर्व कनिष्ठादिक्रमेण तु ।
तर्जनीमूलपर्यन्तं करमाला प्रकीर्तिता ॥
अंगुलीर्न वियुञ्जीत किञ्चिदाकुञ्चिते तले ।
अंगुलीनां वियोगाच्च छिद्रे च स्रवते जपः ॥

अन्यत्रापि ।

अंगुल्यग्रेषु यज्जप्तं यज्जप्तं मेरुलंघने ।
पर्वसन्धिषु यज्जप्तं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥
गणनाविधिमुल्लंघ्य यो जपेत्तज्जपं यतः ।
गृह्णन्ति राक्षसास्तेन गणयेत्सर्वथा बुधः ॥

विश्वसारे ।

जपसंख्या तु कर्तव्या नासंख्यातं जपेत्सुधीः ।
न संख्याकारकस्यास्य सर्वं भवति निष्फलम् ॥

तन्त्रे ।

हृदये हस्तमारोप्य तिर्यक्कृत्वा करांगुलीः ।
आच्छाद्य वाससा हस्तौ दक्षिणेन जपेत्सदा ॥

नाक्षतैर्हस्तपर्वैर्वा न धान्यैर्न च पुष्पकैः ।
न चन्दनैर्मृत्तिकया जपसंख्यांतु कारयेत् ॥
जपते यादृशी माला संख्यानेऽपि च तादृशी ॥

अब मालाका निर्णय किया जाता है । सनत्कुमारसंहितामें लिखा है । करमालामें तर्जनी अनामा और कनिष्ठाके तीन ३ पर्व एवं मध्यमांगुलीका एक पर्व ग्रहण करै और मध्यमाके अन्य दो पर्व मेरुरूपमें कल्पित करे। करमालाके संबंधमें जो क्रम है, वह सनत्कुमारसंहितामें वर्णित है। यथा अनेक मध्यपर्वसे कनिष्ठादिक्रमसे तर्जनीके मूलपर्यन्त जो दश पर्व हैं, उनमें जप करे । जब अष्टोत्तरशतादि जपे तब पूर्वोक्त नियमानुसार शतादि संख्यक जप पूरा होनेपर अनामिकाके मूलपर्वसे आरंभ करके कनिष्ठादिके क्रमानुसार तर्जनीके मध्य, पर्वतक अष्टपर्वमें आठ वार जप करे । शक्तिमन्त्रके जपनेका नियम यह है कि, अनामाके तीन पर्व, कनिष्ठाके तीन पर्व, मध्यमाके तीन पर्व और तर्जनीका मूलपर्व इन दश पर्वमें जप करे । जो मनुष्य तर्जनीके अग्र और मध्यपर्वमें शक्तिमन्त्र जपता है, वह व्यक्ति पापकारी होता है, यह श्रीनारदजीके वचनसे प्रकाशित है । हंसपरमेश्वर ग्रन्थमें कहा है। अनामाके मध्यपर्वसे आरंभ करके कनिष्ठादिसे क्रमानुसार मध्यमाके तीन पर्व और तर्जनीका एक पर्व इन दश पर्वमें जप करे। हे पार्वती ! तर्जनीके ऊपर स्थित दो पर्वको मेरु जानना चाहिये । इसीको समस्त तंत्रशास्त्रमें शक्तिमाला कहा है । अष्टोत्तरशतादि संख्यक यदि शक्तिमन्त्र

जपना हो तो पूर्वोक्त नियमानुसार शतादि संख्यक जपकर अनामिकाके मूलपर्वसे आरंभ करके कनिष्ठादि क्रमसे मध्यमाके मूलपर्वमें आठ वार जप करे। श्रीविद्याका मन्त्र जपनेके विषयमें अनामाका मूल और अग्र यह दो पर्व, मध्यमाका मूल और अग्र यह दो पर्व कनिष्ठाके तीन पर्व और तर्जनीके तीन पर्व इन दश पर्वमें जप करे। हे देवि ! अनामा और मध्यमाके दो पर्वको मेरु जानना चाहिये। श्रीविद्याके अष्टोत्तरशतादि संख्यक जपमें पूर्वोक्त नियमानुसार शतादि संख्यक जप कर कनिष्ठाके मूलपर्वसे आरंभ करके तर्जनीके मूलपर्वतक अष्टपर्वमें प्रदक्षिणके क्रमानुसार आठ वार जप करे। मुण्डमाला तन्त्रमें कहा है। अनामाके मध्य पर्वसे आरंभ करके कनिष्ठादि क्रमसे तर्जनीके मूलपर्वतक इन दश पर्वको करमाला कहते हैं। जपके समय अंगुली अलग न करके हाथ कुछेक सिकोडकर जप करना चाहिये। अंगुली अलग न करनेसे अंगुलीके छिद्रों द्वारा जपके फलकी हानि होती है। अन्य ग्रन्थोंमें भी कहा है कि अंगुलीके अग्रभागमें अथवा मेरुको उलांघकर जो जप किया है और पर्वसन्धिमें जो जप किया जाता है वह विफल हो जाता है। जिस जिस मन्त्रके जप विषयमें जिस प्रकार गणनाकी विधि लिखी है, उसको उलांघकर जो पुरुष मन्त्र जपते हैं, उनके जपका फल राक्षस ले लेते हैं, अतएव बुद्धिमान् पुरुष सदा गणनाकी विधिके अनुसार मन्त्रका जप करें। विश्वसारतन्त्रमें कहा है कि, पंडितजन जपकी संख्याके नियम करके जप करें। जो पुरुष विना संख्या नियत किये जप करता है उसका सब

जप निष्फल होता है। अन्यान्य तन्त्रोंमें कहा है हृदय (छाती) पर हाथ रखकर अंगुलियोंको कुछेक टेढा करके दोनों हाथ वस्त्रसे आच्छादन पूर्वक दाहिने हाथसे जप करे। अक्षत (चावल) हस्तपर्व, धान्य, पुष्प, चन्दन और मट्टीके द्वारा जपकी संख्या नियत न करे। जिस स्थानमें जिस मालाका जप कहा है उस स्थानमें उसी मालासे संख्या नियत करे॥

अथ वर्णमाला।

सनत्कुमारीये।

क्रमोत्क्रमगतैर्माला मातृकार्णैः क्षमेरुकैः।
सबिन्दुकैः साष्टवर्गैरन्तर्यजनकर्मणि॥
आदि कु चु टु तु पु यु शावोऽष्टौ प्रकीर्त्तिताः।

तत्रायमर्थः।

अकारादिवर्णान् प्रत्येकं सबिन्दुं कृत्वा शतं संजप्य अकारादीनां वर्णानां कवर्गदीनाञ्चान्त्य वर्णं सानुस्वारं कृत्वा पूर्वमुच्चार्य जपः कर्त्तव्यः अनेन प्रकारेणाष्टोत्तरशतसंख्यजपो भवति। अन्तर्यजन इत्युपलक्षणम्॥

तथा च।

सबिन्दुं वर्णमुच्चार्य पश्चान्मन्त्रं जपेद्बुधः।
अकारदीक्षकारान्तं बिन्दुयुक्तं विभाव्य च॥

वर्णमाला समाख्याता अनुलोमविलोमिका ॥

इति नारदवचनात् ।

प्रकारान्तरं विशुद्धेश्वरे ।

अनुलोमविलोमेन वर्गाष्टकविभेदतः ।
मन्त्रेणान्तरितान्वर्णान्वर्णैनान्तरितान्मनून् ॥
कुर्याद्वर्णमयीं मालां सर्वतन्त्रप्रकाशिनीम् ।
चरमार्णं मेरुरूपं लङ्घनं नैव कारयेत् ॥

तथा मालिनीविजये सूत्रनियमः ।

अन्तर्विद्रुमभासमानभुजगीं सुप्तोत्थवर्णोज्ज्वला ।
मारोहप्रतिरोहतः शतमयीं वर्गाष्टकाष्टोत्तरम् ॥

अत्र वैशम्पायनसंहितायाम् ।

प्रलयानलतः पूर्वं रुद्ररूपेण मूर्त्तिना ।
उद्धृतं पृथिवीबीजमतोऽन्ते तं नियोजयेत् ॥
प्रलयोद्धरितं बीजं लकारमनलात्पुनः ।
द्विलकारविधावत्र पुनरन्ते नियोजयेत् ॥

एतेन लकारद्वय ज्ञेयमिति ।

अब वर्णमालाका निर्णय किया जाता है । सनत्कुमारतत्रमें लिखा है आकारादिसे क्ष तक सब अक्षरोंको वर्णमाला कहते हैं इन इक्यावन अक्षरकी अकारसे ह तक पञ्चाशद्वर्णमाला और क्ष उसका मेरु है इन सब अक्षरोंमें अनुस्वार जोडकर क्रमानु-

सार अर्थात् अकारसे आरंभ करके ह तक और हकारसे आरंभ करके अकारतक इस प्रकार अनुलोम विलोमके क्रमानुसार जप करे, यह माला अन्तर्यजनके कार्यमें प्रशस्त है । वर्णमाला अष्ट वर्गमें विभक्त है यथा अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग. यवर्ग, शवर्ग अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः यह सोलह वर्ण अवर्ग हैं क ख ग घ ङ कवर्ग, च छ ज झ ञ चवर्ग, ट ठ ड ढ ण टवर्ग, त थ द ध न तवर्ग, प फ ब भ म पवर्ग, य र ल व यवर्ग,, श ष स ह शवर्ग इस वर्णमालाके जपनेका क्रम यह है । अकारादिके प्रत्येक वर्णमें अनुस्वार जोडकर एक एक वर्णके पीछे एक एक वार मन्त्र उच्चारण पूर्वक जप करे इस प्रकार एक सौ आठवार जप करना उचित है । केवल अन्तर्यजनकार्यमें इस वर्णमालाकी उत्तमता पूर्वमें कही गई है, वह उपलक्षमात्र है, वाह्य पूजादिमें भी वर्णमालाका जप कर सकता है । प्रथम तो अं यह वर्ण उच्चारण करके एक वार मूलमन्त्रको जप करे । इसी प्रकार ह तक अनुस्वारयुक्त एक एक वर्णके पीछे एक एक वार मंत्र जपकर पुनर्वार इसे आरंभ करके अ पर्यत एक एक वर्णके पीछे एक एक बार मन्त्र जपना चाहिये, इसीको वर्णमालाजप कहते हैं । विशुद्धेश्वर तन्त्रमें लिखा है अकारादिसमस्त वर्ण अष्टवर्ग भेदसे अनुलोम विलोम वर्णद्वारा मन्त्र और मन्त्रद्वारा वर्ण अन्तरित करके वर्णमयी मालासे जप करे। सब तन्त्रोंमेंही इस मालाकी विधि है । समस्त वर्णका जो अन्तिम अक्षर क्ष है वही मालाका मेरु है अत एव जपके समय मेरुका उलांघना ठीक नहीं है । मालिनी विजयतन्त्रमें

वर्णमालाके सूत्रका (डोरेका) नियम कहा है, यथा विद्रम अर्थात् प्रवाल (मूंगा) की समान प्रकाशमान् सूत्ररूप निद्रिता जो सर्पाकार कुलकुण्डलिनी शक्ति है वही वर्णमालाका सूत्र है। उनके आरोहण और अवरोहरमें शतसंख्या एवं अष्ट-वर्गमें अष्टसंख्या होती है। वैशम्पायनसंहितामें लिखा है कि पूर्वकालमें रुद्ररूपी श्रीमहादेवजीने जिस समय पृथ्वीका उद्धार किया उस समय पृथ्वीके साथ पृथ्वी बीज लकारका भी उद्धार किया था, इसी कारण वर्णमालामें दो लकार विद्यमान है सुतरां वर्णमालाकी गिनतीमें हकार वर्णके पीछे फिर लवर्णका पाठ करना चाहिये।

अथ मालायां मणिनिर्णयः।

पद्मबीजादिभिर्माला बहिर्योगे शृणुष्व ताः।
रुद्राक्षशंखपद्माक्षपुत्रजीवकमौक्तिकैः॥
स्फाटिकैर्मणिरत्नैश्च सौवर्णैर्विद्रुमैस्तथा।
राजतैः कुशमूलैश्च गृहस्थस्याक्षमालिका॥
अंगुलीगणनादेकं पर्वण्यष्टगुणं भवेत्।
पुत्रजीवैर्दशगुणं शतं शंखैः सहस्रकम्॥
प्रवालैर्मणिरत्नैश्च दशसाहस्रिकं स्मृतम्।
तदेव स्फाटिकैः प्रोक्तं मौक्तिकैर्लक्षमुच्यते॥
पद्माक्षैर्दशलक्षं स्यात् सौवर्णैः कोटिरुच्यते।
कुशग्रन्थ्या कोटिशतं रुद्राक्षैः स्यादनन्तकम्॥
सर्वैर्विरचिता माला नृणां मुक्तिफलप्रदा॥

कालिकापुराणे ।

रुद्राक्षैर्वा यदि जपेदिन्द्राक्षैः स्फाटिकैस्तथा ।
नान्यन्मध्ये प्रयोक्तव्यं पुत्रजीवादिकं च यत् ॥
यद्यन्यत्तु प्रयुञ्जीत मालायां जपकर्मणि ।
तस्य कामं च मोक्षं च न ददाति प्रियङ्करी ॥

मुण्डमालायाम् ।

श्मशानजातधुस्तूरैर्माला धूमावतीविधौ ।
नरांगुल्यस्थिभिर्माला ग्रथिता सर्वकामदा ॥
नाडचा संग्रथनं कार्यं रक्तेन वाससा प्रिये ।
सदा गोप्या प्रयत्नेन जनन्या जारवत्प्रिये ॥

कामनाभेदे ।

पद्माक्षैर्विहिता माला शत्रूणां नाशिनी मता ।
कुशग्रन्थिमयी माला सर्वपापप्रणाशिनी ॥
पुत्रजीवफलैः क्लृप्ता कुरुते पुत्रसम्पदम् ।
निर्मिता रौप्यमणिभिर्जपमालेप्सितप्रदा ॥
प्रवालैर्विहिता माला प्रयच्छेद्विपुलं धनम् ॥

भैरवीविद्यायान्तु वाराहीतन्त्रे ।

सुवर्णमणिभिर्माला स्फाटिकीं शंखनिर्मिताम् ।
प्रवालैरेव वा कुर्यात्पुत्रजीवं विवर्जयेत् ॥

पद्माक्षंचैव रुद्राक्षं भद्राक्षंचैव विशेषतः ॥

त्रिपुरामन्त्रजपादौ तु रक्तचन्दनबीजादिभिः प्रशस्ता ।

तथा च तन्त्रे ।

रक्तचन्दनमाला तु भोगमोक्षप्रदा भवेत् ॥

तथा ।

वैष्णवे तुलसीमाला गजदन्तैर्गणेश्वरे ।
त्रिपुराया जपे शस्ता रुद्राक्षै रक्तचन्दनैः ॥

मुण्डमालायाम् ।

महाशंखमयी माला नीलसारस्वते विधौ ॥

महाशंखस्तु तन्त्रे ।

नृललाटास्थिखण्डेन रचिता जपमालिका ।
महाशंखमयी माला ताराविद्याजपे प्रिये ॥
कर्णनेत्रान्तरस्थास्थि महाशंखः प्रकीर्तितः ॥

मणिनियमस्तु मुण्डमालायाम् ।

अन्योन्यसमरूपाणि नातिस्थूलकृशानि च ।
कीटादिभिरदुष्टानि न जीर्णानि नवानि वै ॥

तथा च गौतमीये ।

पञ्चाशन्मणिभिर्माला त्रिंशद्भिर्धनसिद्धये ।
सर्वार्थाः सप्तविंशत्या पञ्चदश्याभिचारिके ॥
पञ्चशद्भिः काम्यसिद्धिः स्यात्तथा चतुरोत्तरैः ।
अष्टोत्तरशतैः सर्वसिद्धिरुक्ता मनीषिभिः ॥

अब बाह्यपूजामें विदित मालाकी मणियोंका निर्णय किया जाता है। बाह्यपूजामें पद्मबीजादिकी माला प्रशस्त है। रुद्राक्ष, शंख, कमलगट्टे, जीवपुत्रिका (जियापोता), मोती, स्फटिक, (फटिकमणि), मणि, रत्न, सुवर्ण, मूँगे, चांदी और कुशमूल इनमें किसी एकके द्वारा गृहस्थ व्यक्ति जपमाला बनावे। अंगुलीसे जप करनेपर एक गुना फल होता है, और अंगुलीपर्वमें जप करनेपर अठगुना, जीवपुत्रिका (जियापोता) की मालासे दशगुना, शंखकी मालासे सौगुना, मूंगेकी मालासे हजारगुना मणि और रत्नकी मालासे दशहजार गुना, स्फटिककी मालासे दशसहस्रगुण, मोतियोंकी मालासे लक्षगुण, कमलकी मालासे दशलक्षगुण, सुवर्णनिर्मित मालासे करोडगुण, कुशमूलनिर्मित मालासे सौ करोड गुण और रुद्राक्षकी बनी मालासे जप करनेपर अनन्तफल मिलता है। जिन सब मालाओंका विषय कहा गया यह सबही माला मनुष्यको मुक्तिफल प्रदान करती हैं। कालिकापुराणमें लिखा है कि, रुद्राक्ष, इन्द्राक्ष और स्फटिकादि निर्मित मालामें जीवपुत्रिकादिकी अन्य कोई माला न मिलावे जो पुरुष एक जातीय मालामें अन्य जातीय माला मिलाकर जप करता है भगवती उसकी कामना और मोक्षफल प्रदान नहीं करती ।। मुंडमालातंत्रमें लिखा है कि, धूमावतीके विषयमें श्मशानके धतूरेकी माला श्रेष्ठ है। हे प्यारी ! मनुष्यकी अंगुलीकी हड्डीके द्वारा माला बनाकर जप करनेस समस्त कामना पूर्ण होती है। उक्त माला मनुष्यकी नाडीके द्वारा ढककर मातृजारवत् सदा गुप्त रक्खें। कामना भेदसे

अलग अलग द्रव्यके द्वारा माला बनावे । यथा शत्रुका नाश करनेके कार्यमें कमलगट्टेकी माला, पापनाशन कार्यमें कुशमूलकी माला, पुत्रसम्पद् मिलनेके कार्यमें जीवपुत्रिकाकी माला, अभिलाषित फल प्राप्त करनेके लिये चांदीकी माला, और विपुलधन प्राप्त करनेकी इच्छा होनेपर मूंगेकी मालासे जप करना चाहिये । भैरवीविद्याके विषयमें वाराहीतन्त्रमें लिखा है सुवर्ण मणि, स्फटिक, शंख और मूंगेकी माला बनावे । जीवपुत्रिका (जीयापोता) कमलगट्टे, रुद्राक्ष और भद्राक्षकी माला न बनावे। त्रिपुरसुन्दरीके मन्त्र जपमें रक्तचंदन बीजमाला प्रशस्त है अन्य तंत्रमें लिखा है कि रक्तचन्दन बीजमाला भोग और मोक्षकी देनेवाली है विष्णुका मन्त्र जपनेमें तुलसीकी माला, गणेशमन्त्रके जपनेमें गजदन्तकी माला, त्रिपुरामंत्रके जपनेमें रुद्राक्ष और लालचन्दनकी माला श्रेष्ठ है । मुंडमाला तंत्रमें कहा है तारामन्त्रके जपनेमें महाशंखनिर्मित माला प्रशस्त है । मनुष्यके ललाटकी हड्डी द्वारा बनी हुई जपमाला को महाशंखमयी माला कहते हैं, यह माला ताराविद्याके मंत्र जपनेमें प्रशस्त है । कान और आँखके बीचकी हड्डीको महाशंख कहा जाता है । मुण्डमाला तन्त्रमें जो मणियोंके लक्षण कहे हैं, सो कहते हैं । जिन सब मणियोंकी माला बनावे, वे सब मणि परस्पर समान,अथच अतिस्थूल अथवा अत्यन्त छोटी न हों और कीटादिसे भक्षित वाजीर्ण न हों ऐसी मणियोकी माला बनानी चाहिये । गौतमीयतन्त्रमें लिखा है कि पंचाशन्मणिकी माला बनावे किन्तु अर्थसिद्धिके कार्यमें तो मणि सर्वकामनाके साधन करनेमें सत्ताईस

मणि, मारणादि अभिचार कार्यमें पन्द्रह मणि कामसिद्धिके विषयमें चउवन और सब कार्योंकी सिद्धिके लिये एकसौ आठ मणियोंद्वारा माला वनावे । ऐसा तन्त्रशास्त्रके जानने वाले पंडित कहते हैं ।

जपांगुलिनियमः ।

शान्त्यादिस्तम्भवश्येषु वृद्धाग्रेण च चालयेत् ।
अंगुष्ठानाभिकाभ्यान्तु जपेदाकर्षणे मनुम् ॥
अंगुष्ठतर्जनीभ्यान्तु विद्वेषोच्चाटयोर्जपेत् ।
कनिष्ठांगुष्ठयोगेन मारणे जप ईरितः ॥

शांति, पुष्टि, स्तम्भन और वशीकरणमें अँगूठेके अग्रभागसे माला चलावे । अँगूठे और अनामिका अँगुलीसे आकर्षणमें माला चलावे । अँगूठे और तर्जनी अँगुलीसे विद्वेषणमें माला चलावे और अँगूठे एवं कनिष्ठा अँगुलीसे मरणमें जप करे ।

जपदिङ् नियमः ।

जपेत्पूर्वमुखो वश्ये दक्षिणां चाभिचारके ।
पश्चिमां धनदां विद्यादुत्तरे शान्तिकं भवेत् ॥
आयुष्यरक्षाशान्तिश्च पुष्टिं वापि करिष्यति ॥

वशीकरणकार्यमें पूर्वकी ओर मुख करके जप करना चाहिये अभिचार (मारणादि) कार्यमें दक्षिणकी ओर मुख करके जप करना उचित है धनकी अभिलाषा होनेपर पश्चिमकी ओरको मुख करके और आयुकी रक्षाके लिये शान्ति और पुष्टि कर्ममें उत्तरकी ओरको मुख करके जप करना चाहिये ।

जपलक्षणम् ।

यः श्रूयतेऽन्यैः स तु वाचिकः स्यादुपांशुसंज्ञो निजदेहवेद्यः। निष्कम्पदन्तौष्ठमथाक्षराणां यच्चिन्तनं स्यादिह मानसौख्यः ॥

जप तीन प्रकारका कहा गया है। वाचिक उपाशु और मानसिक । जप करते समय यदि मन्त्रको दूसरा पुरुष सुन सके तो उसे वाचिक कहते हैं । जपते समय मन्त्र अपने आपकोही सुनाई आवे उसको उपांशु कहते हैं । और जपते समय होठ एवं जीभ न चले मनही मनमे ध्यान करता हुआ जप करे तो वह जप मानसिक कहाता है ।

षट्कर्मजपनियम:

पराभिचारे किल वाचिकः स्यादुपांशुरुक्तोऽप्यथ शान्तिपुष्टौ। मोक्षेषु जापः किल मानसौख्यः संज्ञा त्रिधा पापनुदे तथोक्ता ॥

अभिचार (मारणादि) कर्ममें वाचिक जप, शान्ति और पुष्टिकार्यमें उपांशु जप, एवं मोक्षकी साधनामें मानसिक जप करना उचित है ।

षट्कर्महोमकुंडनियम: ।

शान्तिके पौष्टिके चैव होमः स्याद्योग्यसाधनैः। कार्यं प्राग्वदनेनाथ सौम्येन वदनेन वा ॥

शान्ति और पुष्टि कर्ममें पूर्वको वा उत्तरको मुख करके होमादि करना चाहिये ।

आकृष्टौ वायुकुण्डे च कौबेरदिङ्मुखेन तु ।
नैर्ऋतीदिङ्मुखस्तस्मिन्कुण्डे विद्वेषणे हुनेत् ॥

आकर्षण कार्यमें उत्तरको मुख करके वायुकोणस्थ कुंडमें हवन करे, विद्वेषणमें नैर्ऋतकोणको मुख करके वायुकोणस्थ कुण्डमें हवन करै ।

आग्नेयीदिङ्मुखस्त्वेतत्कुण्डे मारुतकेऽपि वा ।
उच्चाटने हुनेन्मंत्री मारणे याम्यदिङ्मुखः ॥
जुहुयाद्याम्यकुण्डे तु मन्त्री तत्साधनैस्ततः ॥

उच्चाटन कर्म्ममें अग्निकोणको मुख करके वायुकोणस्थ कुण्डमें हवन करै और मारणमें दक्षिणको मुख करके दक्षिण दिग्वर्त्ती कुण्डमें हवन करे ।

वज्रलाञ्छितकुण्डे वा ग्रहभूतनिवारणे ।
वायव्यदिङ्मुखा वश्ये कुण्डे योन्याकृतौ हुनेत् ॥
वज्रलाञ्छितकुण्डे वा स्तम्भे प्राग्वदनो हुनेत् ॥

ग्रहभूतादिक निवारणमें षट्कोण कुण्डमें वायुकोणको मुख करके और वशीकरणमें त्रिकोण कुण्डमें हवन करे, स्तंभनके प्रयोगमेंभी पूर्वको मुख करके षट्कोण कुंडमें हवन करना चाहिये ।

षट्कर्म हवनद्रव्यनिरूपणम् ।

द्रव्याण्यथ प्रवक्ष्यामि तत्तत्कर्मानुसारतः ।
शान्तिके तु पयः सर्पिस्तिलाः क्षीरद्रुमेण वा ॥

अमृताख्या लता चैव पायसं तत्र कीर्तितम् ॥

दूध, घी, पीपलादि वृक्षके पत्ते और गिलोयसे शान्ति कर्म्ममें हवन करै ।

पौष्टिके तु प्रवक्ष्यामि होमद्रव्याण्यतः परम् ।
बिल्वपत्रैस्तथाज्यैः स्याज्जातीपुष्पैस्तथैव च ॥

बेलपत्र, घी और चमेलीके फूलोंसे पुष्टिकर्ममें हवन करै ।

कन्यार्थी जुहुयाल्लाजैः श्रीकामः कमलैस्तथा ।
दध्ना च श्रियमाप्नोति चान्नैश्चान्न घृतप्लुतैः ॥
समृद्धौ जुहुयान्मन्त्री महादारिद्र्यशान्तये ॥

कन्याकी अभिलाषासे खीलोंद्वारा, स्त्रीकी अभिलाषासे कमलद्वारा और महासमृद्धिकी इच्छासे दरिद्रके दूर करनेके लिये दही और घीसे होम करै ।

लक्षहोमाल्लभेच्छांति घृतबिल्वतिलैर्निधिम् ॥

घृत, बिल्व और तिलसे लक्ष हवन करने पर महानिधि प्राप्त होती है ।

आकर्षणे च हवनं प्रियंगु बिल्वकं फलम् ।
जातीपलाशकुसुमैः सैन्धवैरुयहमेव च ॥

प्रियंगु, बेल, चमेलीके फूल, पलाशके फूल और सेंधानमकसे आकर्षणमें हवन करै ।

राजिकालवणैर्वापि वश्ये वा पौष्टिकादिषु ।
वश्यार्थी जातिकुसुमैराकृष्टो करवीरजैः ॥

सफेद सरसों और लवणसे पुष्टिकर्ममें, चमेलीके फूलोंसे वशीकरणमें और कनेरके फूलोंसे आकर्षणमें हवन करे।

कार्पासनिम्बैस्तक्राक्तैः साध्यकेशैरथापि वा ॥

उच्चाटने काकपक्षैरथ वा मोहने पुनः ॥

उच्चानीय मनुष्यके केशोंसे वा कपासके बीच और नीमके बीज मठेमें मिलाकर उससे उच्चाटन कर्ममें और कौवेके परोंसे मोहन कर्ममें हवन करै।

उन्मत्तबीजैर्जुहुयाद्विषरक्तेन मारणम् ॥

धतूरेके बीज और रक्तमिश्रित विषसे मारणमें हवन करै।

अजापयस्तथा सर्पिः कार्पासास्थि नृणामपि ।

तन्मांसश्चापि साध्यस्य नखलोमगणैरपि ॥

एकीकृत्य हुनेन्मंत्री शत्रुमारणकांक्षया ॥

बकरीका दूध, घी,कपासके बीज मनुष्यकी हड्डी, मनुष्यका मांस और जिसको मारै उस मनुष्यके नाखून और रोमोंको मिलाय मारणकी इच्छासे मनुष्य हवन करै।

जुहुयात्सार्षपैस्तैलैरथ वा शत्रुमारणे ॥

अथवा सरसोंके तेलसे मारण कर्म्ममें हवन करै।

रोहीबीजैस्तिलोपेतैरुत्सादे जुहुयाद्यवैः ॥

रोहितके बीज, तिल और जौसे उत्पादनकर्ममें हवन करै।

तुषकंटकसंयुक्तैर्बीजैः कार्पासकैरपि ।

सर्षपैर्लवणाक्तैश्च हुनेत्सर्व्वोऽभिचारके ॥

तुषयुक्त कपासके बीज, सरसों और लवणसे अभिचार कर्म में हवन करे।

काकोलूकच्छदैःक्रूरैः कारस्करबिभीतकैः।
मरीचैः सर्षपैः सिक्थैरर्कक्षीरैः कटुत्रयैः॥
कटुतैलैः स्नुहीक्षीरैः कुर्य्यान्मारणकर्म्मणि॥

काक और उल्लू आदि क्रूरपक्षीके पर, कुचिला, बिभीतक मिर्च, सरसों, सिक्थ, आकका दूध, सोंठ, मिर्च, पीपल, कटुतैल और शेंडके दूधसे मारण कर्ममें हवन करै।

आयुष्कामे घृततिलैर्दूर्वाभिराम्रपर्णकैः॥

घी, तिल, दूर्वा और आमके पत्तोंसे आयुर्वर्द्धन कर्म्ममे हवन करै।

प्रयुक्तैराम्रपर्णैश्च ज्वरं सद्यो विनाशयेत्।
गुडूच्या मृत्युजयने तथा शान्तौ गजाश्वयोः॥

आमके पत्तोंसे हवन किया जाय तो शीघ्र ज्वर दूर हो जाता है मृत्युको जीतनेके लिये एवं घोडा और हाथीको शान्तिके लिये गिलोयसे हवन करै।

गौरैस्तु सर्षपैर्हुत्वा सद्यो रोगं हरेद्गवाम्।
वृष्टिकामो वैतसीभिः समिद्भिः पत्रकैस्तथा॥

सफेद सरसों द्वारा हवन करे तो गौओंकी पीड़ा शीघ्र नष्ट हो जाती है। वर्षाकी इच्छासे बेतकी समिधें और बेंतकी पत्तों-द्वारा हवन करै।

हुत्वा पुष्टिमवाप्नोति पुत्रजीवैस्तु पुत्रकम् ।
घृतगुग्गुलहोमेन वाक्पतित्वं प्रजायते ॥

जीवपुत्रिकाकी समिधों द्वारा हवन करनेसे पुष्टिलाभ होता है घी और गूगल द्वारा होम करनेसे वाक्पति होता है ।

मल्लिकाजातिविद्रुमनागपुन्नागसम्भवैः ।
पुष्पैः सरस्वतीसिद्धिस्तथा सर्वार्थसाधनम् ॥

मल्लिकापुष्प, जातीपुष्प, मूंगा, नागकेशरके फूल और पुन्नागके पुष्प द्वारा हवन करनेसे सरस्वती सिद्ध होती है ।

पयसा लवणैर्वापि हुनेद्वृष्टिनिवारणे ॥

दूध और लवणद्वारा हवन करनेसे वृष्टि रुक जाती है ।

अथवह्नेर्जिह्वा ।

पद्मरागा सुवर्णाख्या तृतीया भद्रलोहिता ।
लोहितानन्तरं श्वेता धूमिनी च करालिका ॥
राजस्यो रसना वह्नेर्विहता काम्यकर्मसु ।
विश्वमूर्तिस्फुलिङ्गिन्यौ धूम्रवर्णा मनोजवा ॥
लोहिताख्या करालाख्या काली तामस्य ईरिताः।
एताः सप्त नियुज्यन्ते क्रूरकर्मसु मन्त्रिभिः ॥
स्वस्वनामसमानाभाः स्युर्जिह्वाः कनकरेतसः ।
हिरण्या गगना रक्ता कृष्णान्य सुप्रभा मता ॥

बहुरूपातिरक्ता च सात्त्विक्यो योगकर्मसु ।
सन्यासा रुद्रभागे द्रुतकनकनिभा कर्षणादौ
हिरण्या वैदूर्या पूर्वभागे प्रभवति गगना स्तंभ
नादौ रसज्ञा ॥ रक्ता बालार्कवर्णा हुतवहविदिशि
द्वेषणादौ प्रशस्ता कृष्णा नीलाम्बुजाभा दिशि
दनुजपतेर्मारणे सुप्रशस्ता ॥ वारुण्यां सुप्रभासा
प्रतिदिशि रसना शान्तिके शोणवर्णा हेमाभा
चातिचारुः पवनदिशि गतोच्चाटने संप्रशस्ता॥
मध्ये कुण्डस्यचान्तः प्रभवति बहुरूपा यथार्था-
भिधाना ॥ वह्नेर्जिह्वाः सुधीरैर्हवनविधिसमुज्जृं-
भिता लोकनीयाः ॥

अनन्तर अग्निकी जिह्वाका नाम और किस कर्ममें किस जिह्वासे होम करना चाहिये, वह कहा जाता है । पद्मरागा, सुवर्णा, भद्रलोहिता, श्वेता, धूमिनी और करालिका, अग्निकी इन कई एक जिह्वाको राजसी जिह्वा कहते हैं, काम्यकर्ममें इन सब जिह्वाओंकी आवश्यकता है । विश्वमूर्त्ति, स्फूलिंगिनी धूम्रवर्णा मनोजवा, लोहिता, कराला और काली यह कई जिह्वा तामसी कही गई हैं, मारणादि क्रूर कार्यमें इन सब जिह्वाओंकी आवश्यकता है । इन समस्त जिह्वाओंका वर्ण उनके नामानुसार स्थिर करना चाहिये । हिरण्या, गगना, रक्ता, कृष्णा, सुप्रभा, बहुरूपा और अतिरिक्ता इन कई एकको

अग्निकी सात्त्विक जिह्वा कहते हैं, योगकर्ममें इन सब जिह्वाओंकी आवश्यकता होती है । इनके अतिरिक्त वह्निके ईशान कोणमें सुवर्णवर्ण हिरण्या नामवाली जो जिह्वा है आकर्षण कार्यमें उसकी आवश्यकता होती है । पूर्वदिशामें गगना नामवाली एक जिह्वा है, वह नीलकान्तमणिकी समान नीलवर्ण है, स्तम्भन इत्यादि कार्यमें उसकी आवश्यकता होती है । अग्निकोणमें । रक्तनामवाली जो जिह्वा है वह तरुण अरुणकी समान लोहितवर्ण है, विद्वेषण कार्यमें उसका प्रयोजन होता है । नैर्ऋतकोणमें कृष्णा नामवाली एक जीभ है, उसका वर्ण नील पद्मके समान है, मारणादि कर्ममें वह प्रशस्त है । पश्चिमदिशामें सुप्रभा नामवाली एक जिह्वा है, उसका वर्ण लोहित है, शांतकार्यमें वह प्रशस्त है । वायुकोणमें अतिरक्तानामक जो जिह्वा है, उच्चाटन कर्ममे उसकी आवश्यकता होती है, उसका वर्ण सुवर्णकी समान है । इनके अतिरिक्त कुण्डके बीचमें बहुरूपानाम्नी एक जिह्वा है, उस जिह्वामें होम करनेसे अर्थलाभ होता है ।

वह्नेर्नामानि ।

पूर्णाहुत्यां मृडो नाम शान्तिके वरदस्तथा ।
पौष्टिके बलदश्चैव क्रोधोऽग्निश्चाभिचारिके ॥
वश्यार्थे कामदो नाम वरदाने च चूडकः ।
लक्षहोमे वह्निनाम कोटिहोमे हुताशनः ॥

किस कर्ममें अग्निका कौनसा नाम उच्चारण करके होम करना चाहिये इस समय वही कहते हैं। मृड नामसे पूर्णाहुतिमें, वरदनामसे शांतिकर्ममें, बलदनामसे पुष्टिकर्ममें क्रोधनामसे अभिचारकर्ममें, कामदनामसे वशीकरणमें चूडकनामसे वलिदानमें, वह्निनामसे लक्षहोममें और हुताशननाम उच्चारण करके कोटि होम करे।

अथ होमव्यवस्था।

द्रव्याशक्तौ घृतं होमे त्वशक्तौ सर्वतो जपेत्।
मूलमन्त्राद्दशांशः स्यादङ्गादीनां जपक्रिया॥
अशक्तावुक्तहोमस्य जपस्तु द्विगुणो मतः।
येषां जपे च होमे च संख्या नोक्ता मनीषिभिः॥
तेषामष्टसहस्राणि संख्योक्ता जपहोमयोः।
स्वाहान्तेनैव मन्त्रेण कुर्याद्धोमं बलिं तथा॥
नमोऽन्तेन नमस्कारमर्चनञ्च समाचरेत्।
मन्त्रान्ते नाम संयोज्य तर्पयामीति तर्पणम्॥
संख्यानुक्तौ जपे होमे चाष्टोत्तरसहस्रकम्।

यदि यज्ञीयवस्तुका अभाव हो तो केवल मात्र घीके द्वारा होम करना चाहिये। मूल देवताका मन्त्र जितना जपे, उसका दशांश अंगदेवताका मन्त्र जपना चाहिये। घृतके होममें असमर्थ होनेपर होमकी संख्यासे दूना जप करे। जिस जिस स्थानमें होम और जपकी संख्या नहीं कही गई है, वहां आठ

हजार जप और आठ हजार होम करे। होमकर्म और बलिदानमें मन्त्रके पीछे स्वाहाशब्द प्रयोग करे। पूजा कालमें अन्तमें नमःशब्द प्रयोग करना चाहिये तर्पणके समय मन्त्रके अन्तमें देवताका नाम जोड देवे जिस स्थानमें जप और होमकी संख्याका उल्लेख नहीं है वहां एक हजार आठ जप और होम करना चाहिये ॥

अथ स्रुक्स्रुवनियमः ॥

षट्त्रिंशदंगुला स्रुक् स्याच्चतुर्विंशांगुलास्रुवः ।
मुखं कंठं तथा वेदीं सप्त चैकाष्टभिः क्रमात् ॥
आयामानाहतो दण्डो विंशतिश्च षडंगुलः ।
वेदरामांगुलैः कुण्डो गतौं हि चतुरंगुलः ॥
खातं वेदांगुलैर्वृत्तं अंगुलंत्रितयं खनेत् ।
मेखला द्व्यंगुला तद्वच्छोभा शेषं विचिन्तयेत् ॥
वेदीं त्र्यंशेन विस्तारं कुर्यात्कुण्डमुखाग्रयोः ।
कनिष्ठाग्रमितं रन्ध्रं स्रुचो घृतविनिर्गमे ।
कार्षिणकद्व्यंगुलं खातं पङ्के मृगपदाकृतिः ।
द्वाविंशत्यंगुलो दण्ड आनाहश्च कृतांगुलः ॥
दण्डमूलाग्रयोर्गण्डो स्रुवे कङ्कणवद्भवेत् ।
सुवर्णरूप्यताम्रैर्वा स्रुक्स्रुवौ दारुजावपि ॥
आयसीयौ वा स्रुक्स्रुवौ कारस्करमयावपि ।

नागेन्द्रलतयोर्विद्यात्क्षुद्रकर्मणि संस्थितौ ॥
चन्दनं खदिराश्वत्थप्लक्षचूतविकंकताः
चम्पामलकसारश्च पलाशाश्चेति दारवः ॥

अब स्रुक् और स्रुवका निमम कहा जाता है स्रुक् छत्तीस अंगुलि प्रमाण और स्रुव चौवीस अंगुलि प्रमाण करना चाहिये उनका मुख सात अंगुल प्रमाण कंठ एक अंगुल और बेदी आठ अगुलकी बराबर करे दंडको चौडाई और लंबाई क्रमानुसार बीस और छः अंगुल करनी चाहिषे स्रुक् और स्रुव इन दोनोंका कुण्डभाग चार अंगुल अथवा तीन अंगुल विस्तृत और उसमें चार अंगुल गर्त्त करे गोलाकार और तीन अंगुल प्रमाण खात करना चाहिये। गर्तके बाहर दो अंगुल मेखला और उसके बाहर शोभा करनी चाहिये कुंडके मुख और अग्रभागका विस्तार वेदीके तीसरे अंशकी बराबर करना चाहिये स्रुक्के अग्रभागमें घृत निकालनेके लिये जो छेद करे, वह कनिष्ठाग्रकी बराबर होना आवश्यक है । यदि स्रुक् और स्रुव बनाना हो तो सोना चांदी, तांबा, लोहा, कुंचिलाकाष्ठ(कुचलेकी लकडी) वा अन्य काष्ठद्वारा निमणि करे । छोटे कार्यमें नागेन्द्रलता द्वारा प्रस्तुत करना चाहिये । यदि काष्ठद्वारा स्रुक् और स्रुव बनावे तो चन्दन, खैर, पीपल, पिलखन आम (कठाई), चम्पा आमला और पलाश (ढाक) इनमें जिस किसी काष्ठसे बना सकता है ।

अथ होममुद्राः ।

न देवाः प्रातिगृह्णन्ति मुद्राहीनां यथाहुतिम् ।

मुद्रयैवेति होतव्यं मुद्राहीनं न भोक्ष्यति ॥
मुद्राहीनश्च यो मोहाद्धोममिच्छति मन्दधीः ।
यजमानं स चात्मानं पातयेत्तेन निश्चितम् ॥
तिस्रो मुद्राः स्मृता होमे मृगी हंसी च शूकरी ।
शूकरी करसंकोची हंसी मुक्तकनिष्ठिका ॥
मृगी कनिष्ठातर्जन्योर्होममुद्रेयमीरिता ।
अभिचारिककार्येषु शूकरी परिकीर्त्तिता ॥
नमः स्वाहा वषट् वौषट् हुं फडन्ताश्च जातयः ।
शान्तौ वश्य तथा स्तंभे विद्वेषोच्चाटमारणे ॥

अब होमकार्यमें मुद्राका नियम कहा जाता है। मुद्राके विना आहुति देनेसे देवता उसको ग्रहण नहीं करते अतएव मुद्राकी सहायतासेही होम करना चाहिये। मुद्राके विना भोजन न करे। जो दुर्बुद्धि मोहके वशीभूत होकर विना मुद्रा होमका अनुष्ठान करता है। वह आत्मा और यजमानको पतित करता है। होमकार्यमें तीन प्रकारकी मुद्राका व्यवहार करना चाहिये। मृगी, हंसी और शूकरी। हाथोंके सकोडनेसे शूकरी मुद्रा, कनिष्ठाके अतिरिक्त अन्यान्य अंगुलियोंसे हंसी मुद्रा एवं कनिष्ठा और तर्जनीसे मृगी मुद्रा होती है। अभिचारकर्ममें शूकरीमुद्राही प्रशस्त है। शान्तिकर्ममें नमः शब्द, वशीकरणमें स्वाहा, स्तंभनमें वषट्, विद्वेषमें वौषट्, उच्चाटनमें हुँ और मारणकर्ममें फट् शब्दका प्रयोग करके होम करना चाहिये। मन्त्रके अन्तमें यह सब शब्द जोड देवे।

अथ शान्तिकर्म ।

ज्वरशांतिः ।

ॐ शान्ते शान्ते सर्वारिष्टनाशिनी स्वाहा ।
एकलक्षजपेनापि सर्वशान्तिर्भवेद्ध्रुवम् ॥

ॐ शान्ते शान्ते इत्यादि उपरोक्त मन्त्र एक लाख जपनेसे ज्वर और अन्यान्य सब प्रकारके रोगोंकी शान्ति होती है इसमें सन्देह नहीं * ।

कुकृत्याशांतिः ।

ॐ सँ साँ सिँ सीँ सुँ सूँ सेँ सैँ सोँ सौँ सँ सः वँ वाँ विँ वीँ वुँ वूँ वेँ वैँ वोँ वौँ वँ वः हँसः अमृतवर्चसे स्वाहा । अनेन मन्त्रेण उदकशराव अष्टोत्तरशताभिमन्त्रितं पिबेत् प्रातरुत्थाय सर्वव्याधिरहितः संवत्सरेण भविष्यति ।

एक नवीन शरावेमें जल भरकर उक्त मन्त्र द्वारा वह जल एक सौ आठ वार अभिमन्त्रित करके प्रातःकाल में सेवन करे । इससे सब प्रकारके रोग दूर होते हैं और यदि कोई दुष्ट किसी प्रकार अपना अनभल करे अथवा कुदृष्टि लग जाय, उसकी भी शान्ति हो जाती है ।

---

* प्रथम जिस प्रकार पूजा और होमकी विधि कही है उसी नियमसे सब कार्य सम्पन्न करके फिर मन्त्र जपना चाहिये सब कार्योंमेंही यह विधि निर्दिष्ट है ।

इति शान्तिकर्म ।

अथ वशीकरणम् ।

पुष्ये पुनर्नवामूलं करे सप्ताभिमन्त्रितम् ।
बद्ध्वा सर्वत्र पूज्येत सर्वलोकवशङ्करः ॥
ओं नमः सर्वलोकवशङ्कराय कुरु कुरु स्वाहा ॥

पुष्यनक्षत्रमें पुनर्वा (विशखपरा) की जड लाकर इस मन्त्रसे सात वार अभिसंत्रित करके हाथमें बाँधनेसे सब लोक वशीभूत होते हैं । यहां यह भी जान रखना आवश्यक है कि उक्त मन्त्र यथाविधि एक लाख जपकर सिद्ध होनेपर कार्यमें प्रयोग करे ।

रविवारे गृहीत्वा तु कृष्णधुस्तूरपुष्पकम् ।
शाखालतां गृहीत्वा तु पत्रं मूलं तथैव च ॥
पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनं समम् ।
तिलके स्त्रीं वशीकुर्याद्यदि साक्षादरुन्धती ॥

रविवारके दिन काले धतूरेके फूल, शाखा, लता, पत्ते और जड लेकर पीस लेवे और फिर इसके साथ कपूर कुंकुम एवं गोरोचन मिलाकर ललाटमें तिलक धारण करे यह तिलक प्रथम जो स्त्री देखेगी वह अरुन्धती होनेपर भी वशीभूत होगी इसमें सन्देह नहीं ।

ओम् नमः कामाख्या देवि अमुकीं मे वशङ्करी स्वाहा । अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धिः ॥

समस्त नारियोंके वशीकरण कार्यमें प्रथम उपरोक्त ओ३म्

नमः कामाख्यादेवी इत्यादि मन्त्र एकसौ आठ वार यथाविधि जपद्वारा सिद्ध करके फिर वशीकरणकार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये नहीं तो कार्य सिद्धि नहीं होती।

ब्रह्मदण्डी चिताभस्म यस्याङ्गे निक्षिपेन्नरः।
वशीभवति सा नारी नान्यथा शङ्करोदितम्॥

ब्रह्मदण्डी और चिताकी भस्म एकत्र करके जिस स्त्रीके अंगपर फेंकी जाय वह वशीभूत होती है। महादेवजीने कहा है कि, यह वचन कदापि मिथ्या होनेवाला नहीं है।

गोदन्तं नरदन्तञ्च पिष्ट्वा तैलेन पेषयेत्।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा कान्तावश्यकरं परम्॥

नील गायका दांत और मनुष्यका दांत एकत्र करके तेलके साथ पीसलेवे फिर इसके द्वारा ललाटमें तिलक करनेसे उसका दर्शन करतेही अपनी स्त्री वशीभूत होती है।

कुंकुमं चन्दनञ्चैव कर्पूरं तुलसीदलम्।
गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं परम्॥
ओम् नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकमही-पतिं मे वशी कुरु कुरु स्वाहा। अष्टोत्तरशत-जपेन सिद्धिः॥

यदि राजवशीकरण करना हो तो प्रथम उपरोक्त ओम् नमो भास्कराय इत्यादि मन्त्र यथाविधि अष्टोत्तरशत जपद्वारा सिद्ध करके फिर कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये। कुंकुम, लाल चन्दन,

कपूर और तुलसीदल यह सब पदार्थ गायके दूधमें मथकर ललाटमें तिलक धारण करनेपर उस तिलकको देखतेही राजा वशीभूत होता है ।

अपामार्गस्य बीजानि गृहीत्वा पुष्यभास्करे ।
खाद्ये पाने प्रदातव्यं राजवश्यकरं परम् ॥

पुष्य नक्षत्रमें चिरचिरेके बीज लेकर वह बीज राजाके भोजन अथवा पानीके सहित मिलाकर सेवन करानेसे उसको वशीभूत किया जाता है ।

गोरोचनं गात्रमलं कदलीरससंयुतम् ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा पतिवश्यकरं परम् ॥
ओम् नमो महा यक्षिणि पतिं मे वश्य कुरु कुरु स्वाहा । अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धिः ॥

पतिवशीकरण करना हो तो प्रथम यथाविधिपूर्वक पूर्वकथित रूपसे पूजा होमादि करके उपरोक्त मन्त्र एक सौ आठ वार जपद्वारा सिद्ध कर फिर कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये । गोरोचन अपने शरीरका मल और केलेका रस यह तीन पदार्थ एकत्र कर ललाटमें तिलक लगानेसे उस तिलकके देखतेही पति वशीभूत होता है ।

ह्रीं ह्रीं कालिकालिस्वाहा । लक्षजपेन त्रिपथेसिद्धिः ।

त्रिराहेमें बैठकर उपरोक्त मन्त्र एक लाख जपनेसे क्या पुरुष क्या नारी सबही वशीभूत होते हैं ।

इति वशीकरणम् ।

अथ स्तम्भनम् ।

आसन स्तम्भनम् ।

ओम् नमो दिगम्बराय अमुकासनस्तम्भनं कु
कुरु स्वाहा । अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धिः ॥
श्वेतगुञ्जाफलं क्षिप्तं नृकपाले तु मृत्तिकाम् ।
बलिं दत्त्वा तु दुग्धस्य तस्य वृक्षो भवेद्यदा ।
तस्य शाखालता ग्राह्या यस्याग्रे तां विनिक्षिपेत्
तस्य स्थाने भवेत्स्तम्भः सिद्धियोग उदाहृतः

यदि आसन स्तंभन करना हो तो प्रथम ओम् नमो दिगम्ब राय इत्यादि मन्त्र एक सौ आठ वार जपद्वारा सिद्ध करके फि कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये। एक मनुष्यकी खोपडीमें मि भरकर उसमें सफेद चोंटलीके बीज बो देवे और फिर उसक जडको नित्य दूधसे सींचे फिर उस बीजसे वृक्ष उत्पन्न होनेप उसकी शाखा, मूल और लता जिसके सन्मुख डाली जा उसीका आसन स्तंभित होगा फिर वह पुरुष उठकर दूस स्थानमें नहीं जा सकेगा।

अग्निस्तम्भनम् ।

ओम् नमो अग्निरूपाय मम शरीरे स्तम्भनं कु
कुरु स्वाहा अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धिः ।
वसां गृहीत्वा माण्डूकीं कौमारीरसपेषिताम् ।
लेपमात्रे शरीराणां अग्निस्तम्भः प्रजायत ॥

यदि अग्नि स्तम्भन करना हो तो प्रथम उपरोक्त मन्त्र अष्टोत्तर शत जपद्वारा सिद्ध करके फिर कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये । मेंडककी चरबी ला घीकुवारके रसमें मथकर देहमें लेप करनेसे अग्नि स्तंभित होती है अर्थात् उसका शरीर अग्निमें नहीं जलता ।

आज्यं शर्करया पीत्वा चर्वयित्वा च नागरम् ।
तप्तलोहं मुखे क्षिप्तं वक्त्रं न दह्यते क्वचित् ॥

शर्करा और घृत सेवन करके सोंठ चाबनेसे उस समय यदि उसके मुखमें तपाहुआ लोहा लगाया जाय, तो मुख नहीं जलेगा।

शस्त्रस्तम्भनम् ।

ॐ अहो कुम्भकर्ण महाराक्षस नैकषागर्भसम्भूत परसैन्यस्तम्भन महाभगवान् रुद्र आज्ञापयति स्वाहा । अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धिः ।

खर्जूरीमुखमध्यस्था कटिबद्धा च केतकी ।
भुजदंडस्थिते चार्के सर्वशस्त्रनिवारणा ॥

ऊपर लिखे 'ॐ अहो कुम्भकर्ण' इत्यादि मंत्र यथाविधि अर्थात् पूर्वकथित नियमानुसार पूजा होमादिपूर्वक अष्टोत्तरशत जपकर सिद्ध होनेपर फिर स्तम्भनकार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये। मुखमें खजूरकी जड, कमरमें केतकीकी जड और बाहुमें आककी जड धारण करनेसे सब अस्त्र स्तंभित किये जाते हैं अर्थात् उस व्यक्तिके देखनेपर अस्त्र स्तंभित हो जाते हैं ।

गृहीत्वा रविवारे तु बिल्वपत्रञ्च कोमलम् ।
पिष्ट्वा बिससमं सद्यः शस्त्रस्तम्भनलेपनात् ॥

रविवारके दिन कोमल बेलपत्र लेकर उनको पद्ममृणालके सहित एकत्र पीस लेवें । फिर अंगमें लेपन करनेसे सब शस्त्र स्तंभित हो जाते हैं ।

सैन्यस्तम्भनम् ।

ॐ नमः कालरात्रित्रिशूलधारिणि मम शत्रुसैन्यस्तम्भनं कुरु स्वाहा। अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धिः।
रविवारे तु गृह्णीयात् श्वेतगुञ्जाफलं सुधीः ।
निखनेच्च श्मशाने वै पाषाणे तत्र दापयेत् ॥
अष्टौ च योगिनीः पूज्या रौद्री माहेश्वरी तथा
वाराही नारसिंही च वैष्णवी च कुमारिका ।
लक्ष्मीर्ब्राह्मी च सम्पूज्या गणेशं बटुकं तथा। ।
क्षेत्रपालः सदा पूज्यः सेनास्तम्भो भविष्यति।
पृथक् पृथग्बलिं दत्त्वा दशानामविभागतः ।
मांसं मद्यं तथा पुष्पं धूपं दीपावलिक्रिया ॥
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा शंकरोदितम्।

ऊपर (ॐ नमः कालरात्रि) नामक जो मन्त्र लिखा गया है यह मन्त्र पूर्वोक्त विधिसे अष्टोत्तरशत जपद्वारा सिद्ध करः फिर सैन्यस्तम्भन कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये। रविवारके दि

सफेद चोटलीका फल लेकर श्मशानमें गाड देवे। उसके ऊपर एक टुकडा पत्थरका रखकर रौद्री, माहेश्वरी, वाराही, नारसिंही, वैष्णवी, कौमारी, महालक्ष्मी और ब्राह्मी इन आठ योगिनीकी पूजा करे एवं गणेश बटुक और क्षेत्रपालकी अलग अलग पूजा और बलिदान करे। मांस और मदिराके द्वारा इन सब देवताओंकी पूजा करनेसे शत्रुसैन्य स्तंभित होती है। इस प्रक्रियाको साधारण पुरुषोंके निकट प्रकाशित न करे महादेवजीने स्वयं इस प्रकार कहा है इसमें सन्देह न करना चाहिये।

सैन्यविमुखीकरणम्।

ॐ नमो भयङ्कराय खड्गधारिणे मम शत्रुसैन्यं पलायिनं कुरु कुरु स्वाहा। अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धिः।

भौमवारे गृहीत्वा तु काकोलूकौ तु पक्षिणौ।
भूर्जपत्रे लिखेन्मन्त्रं तस्य नाम समन्वितम्॥
गोरोचने गले बद्धा काकोलूकस्य पक्षिणः।
सेनानीसन्मुखं गच्छेन्नान्यथा शंकरोदितम्॥
शब्दमात्रे सैन्यमध्ये पलायन्तेऽतिनिश्चितम्।
राजा प्रजा गजादिश्च नान्यथा शंकरोदितम्॥

युद्धस्थलमें जिस उपायसे शत्रुकी सेनाको रणसे विमुख करना चाहिये वह कहा जाता है। ऊपर (ॐ नमो भयङ्कराय) इत्यादि जो मंत्र लिखा रहा है यह मन्त्र नियमानुसार अष्टोत्तरशत जप कर सिद्ध होनेपर फिर कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये।

मंगलवारके दिन काक और उल्लूको लेकर गोरोचनद्वारा भोज-पत्रपर इस मन्त्रके साथ शत्रुका नाम लिख फिर यह भोजपत्र काक और उल्लूके गलेमें बाँधकर उनको छोडदेव जिस समय यह दोनों पक्षी शत्रुके सन्मुख जाँयगे शत्रु उसी समय रणमें पीठ दिखाकर भागेगा क्या राजा, क्या प्रजा, क्या हाथी, क्या घोडा क्या पैदल इन पक्षियोंके देखतेही सब अत्यन्त भय मानते हैं।

जलस्तम्भनम्।

ॐ नमो भगवते रुद्राय जलं स्तम्भय स्तम्भय ठः ठः ठः।

पद्मकं नाम यद्द्रव्यं सूक्ष्मचूर्णन्तु कारयेत्।
वापीकूपतडागादौ निक्षिपेत्स्तम्भते जलम्॥

यदि जलस्तम्भन करना हो तो प्रथम ऊपर लिखा है (ॐ नमो भगवते रुद्राय) इत्यादि मन्त्र नियमानुसार अष्टोत्तर शत जपद्वारा सिद्ध करके फिर कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये पद्माखको भली प्रकार पीसकर इस मन्त्रसे एक सौ आठ वार अभिमन्त्रित करे फिर इसको वापी (बावडी) कूप (कुआ) तडागादि (तालावादि) में डालनेसे तत्काल जलस्तंभन होता है।

मेघस्तंभनम्।

इष्टकाद्वयमादाय श्मशानाङ्गारसंपुटे।
स्थापयेद्वनमध्ये च मेघस्तम्भनकारकम्॥

---

१ मनुष्यस्तंभन, गौभैंसादिस्तंभन, निद्रास्तंभन, मेघस्तम्भन, नौकास्तंभन इन कई एक कार्योंमें भी इसी मन्त्रकी आवश्यकता है।

श्मशानके अँगारोंमें दो ईंटें रखकर किसी निर्जन वनमें स्थापन करे इस प्रकार कार्य करनेसे मेघस्तंभन होता है।

नौकास्तम्भनम् ।

तरण्यां क्षीरकाष्ठस्य कीलं पञ्चांगुलं क्षिपेत् ।
नौकास्तम्भनमेतद्धि मूलदेवेन भाषितम् ॥

क्षीरीवृक्षकी लकडीका पांच अँगुल प्रमाण कीलक बनाकर, नौकामें डाल देनेसे वह नौका स्तंभित होती है स्वयं मूलदेव ऐसा कह गये हैं।

मनुष्यस्तम्भनम् ।

नीत्वा रजस्वलावस्त्रं गोरोचनसमन्वितम् ।
यस्य नाम क्षिपेत्कुम्भे सद्यः स्तम्भनकारकः ॥

रजस्वला स्त्रीके वस्त्र लेकर गोरोचन मिलाय शत्रुका नाम उच्चारणपूर्वक कलशके भीतर डाल देनेसे वह व्यक्ति स्तंभित होता है।

निद्रास्तंभनम् ।

मूलं बृहत्या मधुकं पिष्ट्वा नस्यं समाचरेत् ।
निद्रास्तम्भनमेतद्धि मूलदेवेन भाषितम् ॥

बृहतीकी जड (कटेरीकी जड) और मुलैठी एकत्र पीसकर नस्य (हुलास) सूंघनेपर निद्रा स्तंभित होती है। मूलदेव इस प्रक्रियाको कह गये हैं।

गोमहिष्यादिस्तम्भनम् ।

उष्ट्रस्यास्थि चतुर्दिक्षु निखनेद्भूतले ध्रुवम् ।
गोमहिष्यादिकस्तम्भः सिद्धियोग उदाहृतः ।
उष्ट्ररोमं गृहीत्वा तु पशूपरि विनिक्षिपेत् ।
पशूनां भवति स्तम्भः सिद्धियोग उदाहृतः ॥

गोष्ठस्थान अथवा गोशालाके चारों ओर ऊंटकी हड्डी गाडदेनेसे गौ भैंस इत्यादि स्तंभित होती हैं। ऊंटके रोम किसी पशुके ऊपर डाल देनेसे भी वह स्तंभित हो जाता है।

इति स्तंभनम् ।

अथ मोहनम् ।

ओम् ह्रीं कालि कपालिनि घोरनादिनि वि[श्वं]
विमोहय जगन्मोहय सर्वं मोहय ठः ठः ठ[ः]
स्वाहा । लक्षजपेन सिद्धिः ॥

यदि मोहनकार्य करना हो तो प्रथम यथाविधि पूजा हो[म] इत्यादि करके यह मन्त्र लक्षजपद्वारा सिद्ध होनेपर कार्य[में] प्रवृत्त होना चाहिये।

श्वेतगुञ्जारसैः पेष्यं ब्रह्मदंडचाश्च मूलकम् ।
लेपमात्रे शरीराणां मोहनं सर्वतो जगत् ॥

सफेद चौंटलीके रससे ब्रह्मदंडीकी जड पीसकर सब शरी[]रमें लेप करनेपर जगत्‌को मोहित किया जाता है।

गृहीत्वा तुलसीपत्रं छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
अश्वगन्धासमायुक्तं विजयाबीजसंयुतम् ॥
कपिलाक्षीरसार्द्धेन वटी रक्तिप्रमाणतः ।
भक्षिता प्रातरुत्थाय मोहयेत्सर्वतो जगत् ॥

प्रथम तो तुलसीपत्र लेकर छायामें सुखावे। फिर उसमें भंगके बीज और असगन्ध मिलाकर कपिलाके दूधमें मथकर एक रत्ती प्रमाण गोली बनावे। प्रातःसमय यह गोली सेवन करने से सम्पूर्ण विश्वको मोहित किया जाता है।

श्वेतार्कमूलं सिन्दूरं पेषयेत्कदलीरसे ।
अनेनैव तु तन्त्रेण तिलकं लोकमोहनम् ॥

सफेद आककी जड और सिंदूर एकत्र कदलीरसमें पीसकर ललाटमें तिलक करनेसे समस्त लोकोंको मोहित किया जाता है।

विल्वपत्रं गृहीत्वा तु छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
कपिलापयसा सार्द्धं वटीं कृत्वा तु गोलकम् ॥
एभिस्तु तिलकं कृत्वा मोहनं सर्वतो जगत् ॥

प्रथम तो बेलके पत्ते छायामें सुखाकर चूर्ण करले, इस चूर्णके साथ कपिलाका दूध मिलाकर गोली बनालेनी चाहिये। इस गोलीको घिसकर ललाटमें तिलक करने से मनुष्य सब जगत्को मोहित कर सकता है।

इति मोहनम् ।

अथ विद्वेषणम् ।

ॐ नमो नारायणाय अमुकं अमुकेन सह विद्वे
कुरु कुरु स्वाहा ॥

समस्त विद्वेषण कार्यके प्रथम नियमानुसार उक्त मं अष्टोत्तरशत जप द्वारा सिद्ध करके फिर कार्यमें प्रवृत्त होन चाहिये ।

एकहस्ते काकपक्षमुल्लूपक्षं करेऽपरे ।
मन्त्रयित्वा मिलत्यग्रं कृष्णसूत्रेण बन्धयेत् ।
अञ्जलिं च जले चैव तर्पयेत् हस्तपक्षके ।
एवं सप्तदिनं कुर्यादष्टोत्तरशतं जपेत् ॥
गृहीत्वा गजकेशं च गृहीत्वा सिंहकेशकम् ।
गृहीत्वा मृत्तिकापादं पुत्तली निखनेद्भुवि ॥
अग्निस्तस्योपरिस्थाप्यो मालतीकुसुमं हुनेत्
विद्वेषं कुरुते तस्य नान्यथा शंकरोदितम् ॥

इस हाथमें कौवेके पंख और दूसरे हाथमें उल्लूके पं लेकर प्रथमोक्त मन्त्र पाठपूर्वक दोनों पंखोका अग्रभाग मिला कर काले डोरेसे बाँध देवे । फिर यह दोनों पंख हाथमें लेक जलमें तर्पण करना चाहिये । एक सप्ताह (सात दिन तक) इस प्रकार तर्पण करके प्रतिदिन विद्वेषण मन्त्र एक सौ आ वार जपे । फिर हाथी और सिंहके बाल लाकर जिन दो मनु ष्योंमें विद्वेष उत्पन्न करना हो, उनकी दो पुतली बनाकर उ

बालोंके सहित किसी स्थानमें गाड देवे। पीछे उस स्थानमें अग्नि रखकर मालतीके फूलोंसे होम करना चाहिये इस प्रकार करनेसे उन दोनों पुरुषोंके बीच विद्वेषभाव उत्पन्न होता है। महादेवजी स्वयं ऐसा कह गये हैं।

गृहीत्वा गजदन्तं च गृहीत्वा सिंहदन्तकम्।
पेषयेत् नवनीतेन तिलकं द्वेषकारकम्॥

हाथीका दांत और सिंहका दांत माखनके साथ एक एकत्र पीसकर जिन दो मनुष्योंके कपालमें तिलक लगा दिया जाय उन दोनोंके बीच विद्वेष उत्पन्न होता है।

इति विद्वेषणम्।

अथोच्चाटनम्।

ॐ नमो भगवते रुद्राय दंष्ट्राकरालाय अमुकं पुत्रबांधवैः सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रमुच्चाटयोच्चाटय हुँफट् स्वाहा ठः ठः। अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धिः॥

यह मन्त्र नियमानुसार एक सौ आठ बार जपद्वारा सिद्ध करके फिर उच्चाटन कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये। उच्चाटन कर्मके किसी स्थानमें मन्त्रका उल्लेख होनेसे वहां भी यही मंत्र जानना चाहिये।

काकोलूकस्य पक्षं तु हुत्वा चाष्टाधिकं शतम्।
यन्नाम्ना मन्त्रयोगेन तदास्योच्चाटनं भवेत्॥

उच्चाटन मन्त्रके सहित उद्देश्य मनुष्यका नाम उच्चारण करके कौवे और उल्लूके पंखोंद्वारा एक सौ आठ होम करनेपर उस मनुष्यका उच्चाटन होता है।

ब्रह्मदण्डी चिताभस्म शिवलिङ्गे प्रलेपयेत्।
सिद्धार्थं चैव संयुक्तं शनिवारे क्षिपेद्गृहे॥
उच्चाटनं भवेत्तस्य जायते मरणान्तिकम्।
विना मन्त्रेण सिद्धिश्च सिद्धियोग उदाहृतः॥

एक शिवलिंग बनाकर उसपर ब्रह्मदंडी और चिताकी भस्मद्वारा लेप करे और उसके सिद्धार्थ (सफेद सरसों) युक्त कर शनिवारकी रात्रिमें जिसके घर फेंकाजाय, उस पुरुषका उच्चाटन होता है इस कार्यकी सिद्धिमें किसी मंत्रके पढनेकी आवश्यकता नहीं है।

इत्युच्चाटनम्।

अथाकर्षणम्।

ॐ नमो आदिपुरुषाय अमुक आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा। अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धिः॥

यह मंत्र नियमानुसार अष्टोत्तरशत जपद्वारा सिद्ध करके फिर आकर्षण कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये। इसके विपरीत करनेसे कभी कार्य सिद्ध नहीं होगा।

कृष्णधुस्तूरपत्राणां रसं रोचनसंयुतम्।
भूर्जपत्रे लिखेन्मन्त्रं श्वेतकरवीरलखनैः॥

यस्य नाम लिखेन्मध्ये खदिराङ्गारेण दापयेत् ।
शतयोजनमायाति नान्यथा शङ्करोदितम् ॥

काले धतूरेके पत्तोंका रस और गोरोचन इन पदार्थ द्वारा सफेद कनेरकी लेखनीसे भोजपत्रपर प्रथमोक्त मन्त्र सहित जिस पुरुष का नाम लिखकर जलते हुये खैरके अँगारोंमें तपाया जाय वह पुरुष शतयोजन (चार सौ कोस) दूर होनेपर भी खिंचकर आजाता है महादेवजी स्वयं इस प्रकार कह गये हैं ।

अनामिकाया रक्तेन लिखेन्मन्त्रं च भूर्जके ।
यस्य मध्ये लिखेन्नाम मधुमध्ये च निक्षिपेत् ॥
तदा चाकर्षणं याति सिद्धियोग उदाहृतः ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥

अनामा अँगुलीके रक्तद्वारा मन्त्रसहित जिस मनुष्यका नाम भोजपत्रपर लिखकर मधुमें रक्खे, वही मनुष्य खिंचकर आता है यह योग देवताओंको भी दुर्लभ है जिस किसी मनुष्यको यह योग नहीं देना चाहियें ।

इत्याकर्षणम् ।

अथ मारणम् ।

स्वाहा मारय हुँ अमुकं ह्रीं फट् ।
यन्त्रमिदं लिखेद्भूर्जे रोचनाकुंकुमेन तु ।
भौमे वा मन्दवारे च गले बद्ध्वारिं नाशयेत् ॥

ॐ चण्डालिनि कामाख्यावासिनि वनदुर्गे क्लीं क्लीं ठः स्वाहा । अयुतजपेन सिद्धिः ॥

ओम् चण्डालिनि कामाख्या वासिनि वन दुर्गे क्लीं क्लीं ठः स्वाहा यह मन्त्र यथाविधि दश हजार जपद्वारा सिद्ध करके तब मारण कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये जो मनुष्य आततायी है अर्थात् जो मनुष्य वध करनेमें उद्यत हुआ है, ऐसे मनुष्यपर मारण क्रियाका प्रयोग कर सकता है । इसके अतिरिक्त दूसरे किसी मनुष्यपर इसका प्रयोग करनेसे कार्य सिद्ध होना तो दूर रहे, वरन अपनेकोही मृत्युके मुखमें गिरना पडता है । अतएव साधक जन इस विषयमें विशेष सावधानीसे कार्य करें । ऊपर जो यन्त्र अंकित हो रहा है भोजपत्रपर गोरोचन और कुंकुम-द्वारा यह यंत्र अंकित करके मंगलवारमें अथवा शनिवारके दिन गलेमें धारण करनेपर उद्‌देश्य आततायी शत्रु मृत्युके काल गालमें गिर जाता है ।

इतिमारणम् ।

अथ भूतिनीसाधनम् ।

उन्मत्तभैरव्युवाच ।

व्योमवक्त्र महाकाय स्थित्युत्पत्तिलयात्मक ।
भूतिनीसाधनं ब्रूहि कृपा मे यदि वर्त्तते ॥

उन्मत्तभैरवीने उन्मत्त भैरवसे पूछा कि हे व्योमवक्त्र ! महाकाय ! आप सृष्टि स्थिति और प्रलयके करनेवाले हैं, यदि मुझपर आपकी कृपा हो, तो भूतिनीसाधानका वर्णन कीजिये।

उन्मत्तभैरव उवाच ।

भूतिनीसाधनं वक्ष्ये क्रोधराजेन भाषितम् ।
दरिद्राणां हितार्थाय संसारार्णवतारकम् ॥

उन्मत्तभैरवने कहा हे भैरवी ! मैं दरिद्री पुरुषोंका हित करनेके लिये क्रोधराजकथित भूतिनीसाधन तुम्हारे निकट वर्णन करता हूं, सुनो । यह साधन संसारसमुद्रसे पार उतार देनेवाला है।

भूतिनी कुण्डलधारिणी च ।
सिन्दूरिणी चाप्यथ हारिणी च ॥
नटी तथा चातिनटी च चेटिका ।
कामेश्वरी चापि कुमारिका च ॥

भूतिनी, कुण्डलधारिणी, सिन्दूरिणी, हारिणी, नटी, अतिनटी, चेटिका, कामेश्वरी और कुमारिका इत्यादि अनेक रूप धारणपूर्वक साधककी अभिलाषानुसार पत्नी जननी अथवा भगिनी रूपमें दर्शन देकर उसका मनोरथ पूर्ण करते हैं।

ॐ ह्रौं क्रूँ क्रूँ क्रूँ कटु कटु ॐ अमुकं क्रूँ क्रूँ क्रूँ ॐ अः । इति भूतिनीमन्त्रः ।

चम्पावृक्षतले रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
दिनानि त्रीणि जापान्ते उदारार्चनमाचरेत् ॥
धूपंच गुग्गुलुं दत्त्वा पुना रात्रौ जपेन्मनुम् ।
अर्द्धरात्रे गते देवि समागच्छति भूतिनी ॥

दद्याद्गन्धोदकेनार्घ्यं तुष्टा मात्रादिका भवेत् ।
मातेत्यष्टशतानांच वस्त्रालङ्कारभोजनम् ॥
भगिनी चेत्तदा नारी दूरादाकृष्य सुन्दरीम् ।
रसं रसाञ्जनं दिव्यं विधानं च प्रयच्छति ।
भार्या च पृष्ठमारोप्य स्वर्गं नयति कामिता ।
दीनाराणां सहस्राणि नित्यं रसरसायनम् ॥
भोजनं कामिकं देवी साधकाय प्रयच्छति ॥

रात्रिकालमें चम्पावृक्षके नीचे बैठकर आठ हजार भूतिनीका मन्त्र जपना चाहिये। भूतिनीका मन्त्र ऊपर लिखा है। इस प्रकार तीन दिन जपकर महापूजा करनी चाहिये। फिर गूगलकी धूप देकर पुनर्वार जप करनेमें प्रवृत्त होवे। आधीरात बीत जानेपर भूतिनीदेवी आती है उस काल चन्दनके जलसे अर्घ्य देना चाहिये। इस प्रकार करनेपर भूतिनीदेवी प्रसन्न होकर साधककी अभिलाषानुसार भार्या जननी वा भगिनीके रूपमें प्रकट होती है। जननी होनेपर आठसौ वस्त्र, गहने और आहार प्रदान करती है। यदि भगिनीरूपमें आवे तो दूरसे सुंदर स्त्री लाकर साधकको देती है और अनेक प्रकारके रसायन खाद्य पदार्थ अर्पण करती है। यदि स्त्रीके रूपमें आवे तो साधकको पीठपर चढाकर स्वर्गधाममें ले जाती है और प्रति दिन हजार स्वर्णमुद्रा (अशरफी) और नाना प्रकारके रसयुक्त अभिलाषानुसार खानेके पदार्थ अर्पण करती है। मन्त्रके जिस स्थानम

अमुक शब्द है तहां भूतिनीकी कुण्डलधारिणी इत्यादिमें जिसकी इच्छा हो उसका नाम लेना चाहिये ।

रात्रौ गत्वा श्मशाने च जपेदष्टसहस्रकम् ॥
जपान्ते कुण्डलवती समागच्छति सन्निधिम् ॥
रुधिरार्घ्येण सन्तुष्टा मातृवत् पालयत्यपि ।
पञ्चविंशतिदीनारं ददाति म्रियतेऽन्यथा ॥

रात्रिके समय श्मशानमें जाकर आठ हजार मन्त्र जपे जपके अन्तमें कुण्डलवती भूतिनी देवी साधकके पास आती है उस काल साधक रक्तसे अर्घ्य देवे इस प्रकार करनेसे देवी प्रसन्न होकर माताकी समान साधककी रक्षा करती है और पचीस सुवर्ण मुद्रा (अशरफी) प्रदान करती है ।

शून्ये देवालये रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
सिन्दूरिणी समायाति भार्याकर्म करोति च ॥
वस्त्रादिभोजनं तुष्टा द्वादशेऽह्नि प्रयच्छति ।
पञ्चविंशतिदीनारं भोज्यं चापि रसायनम् ॥

रात्रिके समय सूने देवमन्दिरमें बैठकर आठ हजार मन्त्र जपना चाहिये इस प्रकार करनेपर सिन्दूरिणी देवी आकर भार्या कर्म साधन करती है और बारहवें दिन प्रसन्न होकर वस्त्र भोजनादि और पचीस सुवर्ण मुद्रा प्रदान करती है ।

गत्वैकलिङ्गं यामिन्यां जपेदष्टायुतं ततः ।
हारिणी शीघ्रमागत्य भाषते किंकरोमि च ॥

साधकेनापि वक्तव्यं भार्या भव सुशोभने ।
कामिताष्टो दीनाराणि भोज्यं यच्छति कामिनी॥

एक शिवलिंगके समीप बैठकर रात्रिकालमें आठ अयुत मंत्र जपना चाहिये इस प्रकार करनेपर हारिणी देवी शीघ्रतासे आकर साधकसे कहती है कि मैं तुम्हारा क्या कार्य करूं तब साधक कहे कि हे सुन्दरी ! आप मेरी भार्या होइये यह कहनेपर भूतिनी देवी प्रसन्न होकर आठ काञ्चन मुद्रा और भोजनके पदार्थ प्रदान करती है ।

वज्रपाणिगृहं गत्वा सन्निधौ प्रतिमां लिखेत् ।
दत्त्वा पुष्पं कारवीरं जपेदष्टसहस्रकम् ॥
नटचर्द्धरात्रे आयाति साधकस्यान्तिक वशात् ।
सरक्तचन्दननार्घ्यं दत्त्वा ज्ञापयसीति किम् ॥
वक्तव्यं साधकेनापि किङ्करीति भवेति च ।
वस्त्रालङ्करणं भोज्यमन्वहं प्रति यच्छति ॥
व्ययं सर्वं प्रकर्त्तव्यं न किञ्चिद्धारयेद्गृहे ।

वज्रपाणिके मन्दिरमें जाकर प्रतिमूर्ति अंकित करे फिर कनेरके फूलों द्वारा पूजा करके आठ हजार मन्त्र जपना चाहिये। इस प्रकार जप करनेपर आधीरातके समय नटी देवी साधकके निकट आती है। उनके आनेपर लाल चन्दनके जलसे अर्घ्य देवे। इस प्रकार करनेसे देवी प्रसन्न होकर साधकके पास आकर कहती है कि, तुम्हारा क्या कार्य करूं ? तब साधक कहे कि हे देवि!

तुम मेरी टहलनी होजाओ। तब देवी साधककी टहलनी होकर उसको नित्य वस्त्र, गहने और खानेके पदार्थ अर्पण करती है।

नीचगासङ्गमं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ॥
सप्तमाहावसानेषु पूजां कुर्यादनुत्तमाम् ॥
तिरोभावं गते सूर्ये धूपयेच्चन्दनेन च ॥
जपेद्यावदर्द्धरात्रं समायाति महानटी ॥
आगता सा भवेद्भार्या नित्यं स्वर्णपलं शतम् ।
प्रभाते याति सन्त्यज्य सर्वशेषं व्ययेद्बुधः ॥
तद्व्ययोभावतो भूयो न ददाति प्रकुप्यति ॥

नदीके संगम स्थानमें जाकर मूल मंत्र आठ हजार जपना चाहिये। इस प्रकार सात दिन जप करके अनेक भांतिके उपचारसे देवीकी पूजा करनी चाहिये। जब सूर्य अस्त हो उस समय चन्दनद्वारा धूप देनेपर आधीरातमें महानटी साधकके पास भार्याके रूपमें आती है और फिर नित्य साधकको सौ पल सुवर्ण देकर प्रातःसमय लौट जाती है।

याभिन्यां स्वगृहद्वारे जपेदष्टसहस्रकम् ।
त्र्यहं यावज्जपान्तेऽसौ समायात्यन्तिके पुनः ॥
चेटीकर्म करोत्येवं गृहसंस्कारकर्म च ।
करोति क्षेत्रजं कर्म वज्रपाणिप्रसादजः ॥

रात्रिकालमें अपने घरके दरवाजेपर बैठकर आठ हजार मन्त्र जपना चाहिये। इस प्रकार तीन दिन जप करनेपर

भूतिनी साधकके निकट आकर गृहसंस्कारादि (झाड़ना बुहारना आदि) दासीका कार्य करती है।

गत्वा मातृगृहं रात्रौ मत्स्यमांसं प्रदापयेत्।
सहस्रन्तु जपेत् कामेश्वरीं सप्त दिनावधि॥
आगता यदि चेद्भक्त्यार्घ्येण सन्तोषिता सती।
वदेत्किमाज्ञापयसि भव भार्या प्रिया मम॥
आशाश्च पूरयत्वेवं राज्यं यच्छति कामिता॥

रात्रिके समय मातृगृहमें जाकर मत्स्य, मांस अर्पण पूर्वक नित्य एक हजार कामेश्वरी मन्त्र जपना चाहिये। इस प्रकार सात दिन जप करनेपर कामेश्वरी साधकके निकट आती है तब साधक भक्तिसहित अर्घ्य देवे फिर देवी प्रसन्न होकर साधकसे कहेंगी कि, तुम्हारी क्या आज्ञा है? साधक कहै कि, तुम मेरी भार्या हो जावो तब देवी प्रसन्न होकर साधकके सब मनोरथ पूर्ण करती है और उसको राज्याधिकार भी प्रदान करती है।

रात्रौ देवगृहं गत्वा शुभां शय्यां प्रकल्पयेत्।
जातीपुष्पेण वस्त्रेण सितगन्धेन पूजयेत्॥
धूपश्च गुग्गुलं दत्त्वा जपेदष्टसहस्रकम्।
जपान्ते शीघ्रमायाति चुम्बत्यालिङ्गयत्यपि॥
सर्वालङ्कारसंयुक्ता सम्भागादिसमन्विता।
यच्छत्यष्टौदानाराणि भार्या भवति कामिता॥

वाससी भोजनं दिव्यं कामिकञ्च रसायनम् ।
कुबेरस्य गृहादेव द्रव्यमाकृष्य यच्छति ॥
इयाह भगवान् क्रोधभूपतिः स्वयमेव हि ॥

रात्रिके समय किसी देवमंदिरमें जाय उत्तम शय्या बनाय चँबेलीके फूल, वस्त्र और सफेद चन्दनसे पूजा करे। फिर गूगलकी धूप देकर आठ हजार मन्त्र जपना चाहिये। जपके अन्तमें देवी आकर साधकको चुम्बन और आलिंगन करती है। देवी अनेक प्रकारके गहनोंसे विभूषित होकर पत्नीरूपमें सम्भोगादि करनेके पीछे साधकको आठ सुवर्णमुद्रा (अशरफी) दो वस्त्र, सुंदर भोजन कुबेरके घरसे धन लाकर देती है। भगवान् क्रोधराज इस प्रकारसे भूतिनीसाधन वर्णन कर गये हैं ॥

इति भूतिनीसाधनम् ।

अथाष्टनागिनीसाधनम् ।

उन्मत्तभैरव्युवाच ।

सुरासुरजगत्त्राणदायक प्रमथाधिप ।
कालवज्र वद त्वं मे नागिनीसिद्धिसाधनम् ॥

उन्मत्त भैरवीने कहा हे प्रमथाधिप ! आप देव दानव इत्यादि त्रिभुवनकी रक्षा करनेवाले हैं, अब कृपाकर मुझसे नागिनीसाधनका वर्णन कीजिये ।

उन्मत्तभैरव उवाच ।

अथाष्टनागराजानां सिद्धिसाधनमुच्यते ।
परिषन्मण्डलं नत्वाक्रोधराजं सुरेश्वरम् ॥

मनुमासां प्रवक्ष्यामि यथा क्रोधेन भाषितम्।

उन्मत्त भैरवने कहा मैं देवदेव क्रोधराजको प्रणाम करके तुमसेही नागिनीसाधन और क्रोधराजकथित नागिनी मन्त्र कहता हूं।

पञ्चरश्मेः पूर्मनुना प्रोक्तोऽनन्तमुखीमनुः ॥
विषबीजात्पूः कर्कोटमुखी प्रोक्तो महामनुः ॥
प्रालेयात्पद्मिनीपूः स्यात् पद्मिनीमनुरीरितः।
प्रालेयात्कालजिह्वा पूश्चतुर्थो मनुरीरितः ॥
विषान्महापद्मिनीपूरुक्तोयं पद्मिनी पुरा।
प्रालेयाद्वासुकी प्रोक्तो मुखीपूर्वमुखीमुखी ॥
तारात्कूर्चद्वयाद्भूपमुखीपूर्वपरो मनुः।
प्रालेयात् शंखिनीं गृह्य ततो वायुमुखीपदम् ॥
कूर्चद्वयान्तमुद्धृत्य शंखिनीमनुरीरितः ॥

अब आठ नागिनीके आठ मन्त्र कहे जाते हैं। "ॐ पूः अनन्तमुखी स्वाहा" इस मन्त्रसे अनन्तमुखी नागिनीकी उपासना करनी चाहिये। "ॐ पूः कर्कोटमुखी स्वाहा" इस मन्त्रसे कर्कोटमुखी नागिनीकी, "ॐ पूः पद्मिनीमुखी स्वाहा" इस मन्त्रसे पद्मिनीमुखी नागिनीकी, "ॐ कालजिह्वा पूः स्वाहा" इस मन्त्रसे तक्षकमुखी नागिनीकी, "ॐ महापद्मिनी स्वाहा" इस मन्त्रसे महापद्ममुखी नागिनीकी, "ॐ वासुकीमुखी स्वाहा" इस मन्त्रसे वासुकीमुखी नागिनीकी, "ॐ हूँ हूँ

पूर्वभूपमुखी स्वाहा" इस मन्त्रसे कुलीरमुखी नागिनीकी एवं "ॐ शंखनी वायुमुखी हुँ हुँ" इस मन्त्रसे शंखनी नागिनीकी उपासनादि करे।

गत्वा तु नागभुवनं लक्षमेकं जपेन्मनुम्।
तुष्टा भवन्ति नागिन्यो अनया पूर्वसेवया॥

नागलोकमें जाय एक लाख नागिनीमन्त्र जपनेपर अष्टनागिनी प्रसन्न होती हैं।

गत्वा नागभुवं शुक्लपञ्चम्यां दापयेद्बलिम्।
यथोक्तगन्धपुष्पाद्यैः पूजयित्वा जपंचरेत्॥
सहस्रं शीघ्रमायाति नागकन्यान्तिकं स्वयम्।
क्षारेणसार्घ्यं निवेद्याथ वक्तव्यं स्वागतं पुनः॥
कामिता सा भवेद्भार्यो चाष्टौ मुद्राः प्रयच्छति॥

शुक्लपक्षीय पञ्चमी तिथिके दिन नागपुरमें गमनपूर्वक बलिदान करके गन्धपुष्पादि उपचारसे पूजा करके जप करे। इस प्रकार जप करनेसे हजार नागकन्या आती हैं। तब साधक दूधकेद्वारा अर्घ्य देकर स्वागत पूछे इस भांति करनेपर नागिनी पत्नी (भार्या) होकर साधकके मनोरथ पूर्ण करती हैं और आठ मुद्रा (अशरफी) अर्पण करती हैं।

नाचगासङ्गमं गत्वा क्षाराहारी जपंचरेत्।
सहस्रमन्वहं दिव्या नागिन्यायाति सन्निधिम्॥
चन्दनेन निवेद्यार्घ्यं भार्या भवति कामिता।
दीनारमन्वहं पञ्च भोज्यं यच्छति कामिकम्॥

नदीके संगमस्थानमें जाय दूधभोजनपूर्वक नागिनीका मन्त्र एक हजार जपना चाहिये। इस प्रकार करनेपर नागकन्या नित्य साधकके समीप आती है तब साधक चन्दनके जलसे अर्घ्य देवे। फिर नागकन्या साधककी पत्नी होकर उसको पांच अशरफी और अनेक प्रकारसे भोजनके पदार्थ अर्पण करती है।

नागस्थाने निशि स्थित्वा जपेदष्टसहस्रकम्।
नागिन्यायाति पूजान्ते शिरोरोगेण संयुता॥
किं करोमि वदेद्वत्स भव मातेति साधकः।
वस्त्रालङ्करणं भोज्यं मानंचापि प्रयच्छति॥
तद्वत्पञ्चदीनाराणि व्ययितव्यानि शेषतः॥
तद्व्ययाभावतो भूयो न ददाति प्रकुप्यति॥

रात्रिके समय नागस्थानमें बैठकर आठ हजार नागिनीका मंत्र जपे इस प्रकार जप करनेपर नागिनी शिरोरोगसे ग्रसित होकर साधकके समीप आती है और साधकसे सम्बोधन करके कहती है कि, हे वत्स! मैं तुम्हारा क्या कार्य साधन करूं? तब साधक कहे कि तुम मेरी जननी (माता) हो जाओ फिर नागिनी प्रसन्न होकर वस्त्र, गहने मनोहर भोजनके पदार्थ और पांच सुवर्ण मुद्रा (अशरफी) देती है साधक उन सब मुद्राको व्यय कर दे क्योंकि, समस्त व्यय न करनेसे देवी क्रोधित होती है और फिर मुद्रा नहीं देती।

रात्रौ सरोवरं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
नागिन्यायाति जापान्ते भार्या भवति कामिता ॥
यद्यद्ददाति द्रव्याणि व्ययं कुर्यादशेषतः ।
व्ययाभावेन सा भूयो न ददाति प्रकुप्यति ॥

रात्रिकालमें सरोवरके किनारे जाय आठ हजार बार मन्त्रका जप करनेपर नागिनी आकर साधककी पत्नी हो अभिलाषित वस्तु अर्पण करती है साधक नित्य वह सब वस्तु व्यय (खर्च) कर देवे यदि उसमेंसे थोडीसी भी बच रहेगी तो नागिनी कुपित होगी और फिर कुछ नहीं देगी ।

नीचगासंगमं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
नागकन्या समायाति जपान्ते साधकान्तिकम् ॥
सूर्यवर्णासनं दत्त्वा वक्तव्यं स्वागतं पुनः ।
भार्याभूतान्वहं स्वर्णं ददाति च शतं पलम् ॥

जिस किसी नदीके संगम स्थानमें जाकर आठ हजार बार नागिनीका मंत्र जपना चाहिये जपके अन्तमें नागकन्या साधकके समीप आकर उपस्थित होती है तब साधक नागिनीको सूर्य वर्णका आसन देकर कुशल पूछे इस प्रकार करनेसे नागिनी साधककी पत्नी होकर नित्य शतपल (१०० पल) सुवर्ण प्रदान करती है ।

रात्रौ सरोवरं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्तेऽन्तिकमायाति नागकन्या मनोहरा ॥

अन्वहं भगिनी भूत्वा दीनारं वाससी पुनः ।
तुष्टा यच्छति यामिन्यां साधकायोरगात्मजा ॥

रात्रिके समय सरोवर पर जाय पूर्व कथित नागिनीका मन्त्र आठ हजार बार जपना चाहिये जपके अंतमें सुंदरी नागकन्या साधकके समीप आती है और साधककी भगिनीस्वरूप होकर नित्य स्वर्णमुद्रा और वस्त्र अर्पण करती है तथा साधकपर प्रसन्न होकर रात्रिमें नागकन्या लाकर साधकका मनोरथ पूर्ण करती है ।

गत्वा नागभुवं नाभिजलादुत्तीर्यसाधकः ।
जपेदष्टसहस्रन्तु जपान्ते नागकन्यका ॥
स्वयमन्तिकमायाति सपुष्पं मूर्ध्नि दापयेत् ।
ददात्यष्टौ दीनाराणि भार्या भवति कामिता ॥
कामिकं भोजनद्रव्यमन्वहं सा प्रयच्छति ॥

नागभवनमे जाय नाभिके बराबर जलमें उतरकर आठ हजार नागिनीका मन्त्र जपना चाहिये । जपके अन्तमें नागकन्या साधकके निकट आती है उस काल साधक उनके मस्तकपर पुष्प डाले । इस प्रकार करनेपर नागिनी साधककी पत्नी होकर उसको नित्य आठ अशरफी और भोजनके पदार्थ प्रदान करती है ।

रात्रौ नागभुवं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
भूयश्च सकलां रात्रिं जपेत् प्रयतमानसः ॥

साधकान्तिकमायाति सर्वालंकारभूषिता ।
पुष्पचन्दनतोयार्घ्यं दत्त्वा स्वागतमाचरेत् ॥
कामिता सा भवेद्भार्या सिद्धिद्रव्यं प्रयच्छति ।
रसं रसायनं भोज्यं राज्यं यच्छति नित्यशः ॥

रात्रिके समय नागभवनमें जाय पूर्व कथित नागिनीमन्त्र आठ हजार जपकर पुनर्वार संयत मनसे रात्रिके समय जप करना चाहिये। इस प्रकार करनेपर नागिनी सब गहनोंसे विभूषित होकर साधकके समीप आती है । तब साधक पुष्प, चन्दन, गन्ध और जलके द्वारा अर्घ्य देकर स्वागत पूछे। इससे नागिनी प्रसन्नतासहित साधककी भार्या होकर उसको संचित द्रव्य नाना रसयुक्त खाद्य, राज्य, धन इत्यादि प्रदान करती है।

गत्वा नागभुवं रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते नागकन्या च याति साधकसन्निधिम् ॥
कामिता सा भवेद्भार्या सर्वाशाः पूरयत्यपि ।
दीनारं कामिकं भोज्यं नित्यं यच्छति वाससी ॥

रात्रिके समय नाग भानमें जाकर नागिनीका मन्त्र आठ हजार जपना चाहिये। जपके अन्तमें नागकन्या साधकके समीप आती है और पत्नी होकर उसके सब मनोरथ पूर्ण करती है और प्रतिदिन साधकको दिव्य वस्त्र, भोज्य पदार्थ और स्वर्णमुद्रा (अशरफी) प्रदान करती है ।

गत्वा नागान्तिकं रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते नागकन्यासौ झटित्यायाति सन्निधिम् ॥
दद्याच्छिरसि पुष्पाणि भार्या भवति कामिता ।
दिव्यवस्त्राण्यलङ्कारं भोजनादीनि यच्छति ॥

रात्रिके समय नागस्थानमें जाकर पूर्वकथित नागिनीका मंत्र आठ हजार बार जपना चाहिये। जपके अन्तमें नागकन्या साधकके समीप शीघ्रतासहित आती है उस काल साधक नागकन्याके मस्तकपर पुष्प रक्खे। इस प्रकार करनेसे नागकन्या उसकी भार्या होकर उसको उत्तमोत्तम वस्त्र, गहने और भोज्य पदार्थ इत्यादि प्रदान करती है।

इति नागिनीसाधनम् ।

अथ किन्नरीसाधनम् ।

उन्मत्तभैरव्युवाच ।

भिन्नाञ्जनचयप्रख्य रवीन्द्वग्निविलोचन ।
करालवदन ब्रूहि किन्नरीसिद्धिसाधनम् ॥

उन्मत्तभैरवीने कहा हे करालवदन? आपके तीन नेत्रमें सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि विराजमान रहती है। आपका शरीर दलित अंजनके समान है आप मुझसे किन्नरीसाधन वर्णन कीजिये।

उन्मत्तभैरव उवाच ।

गुह्यकाधिपतिं क्रोधराजोवाच महेश्वरः ।
किन्नरीः साधयिष्यामि मारयिष्यामि देवताः ॥

त्रैधातुकं महाराज्यं दास्यामि त्वयि नान्यथा।
अथातः संप्रवक्ष्यामि किन्नरीसिद्धिसाधनम् ॥
येनानुष्ठितमात्रेण लभ्यन्ते सर्वसिद्धयः ॥

उन्मत्तभैरवने कहा हे देवि! क्रोधराज महेश्वरने गुह्यकाधिपति कुबेरके निकट जो किन्नरीसाधन प्रकट किया था, मैं इस समय वही तुमसे कहता हूं। इस साधनके प्रसादसे मनुष्य देवताओंका भी नाश कर सकता है। इसके द्वारा त्रिभुवनका आधिपत्यका लाभ होता है और सब मनोरथ पूर्ण होते हैं।

मनुमासां प्रवक्ष्यामि क्रोधभूपप्रसादतः।
हालाहालान्मनोहारिणी शिवोऽन्तं मनुमुद्धरेत् ॥
प्रालेयात् सुभगे वह्निप्रियान्तमपरो मनुः।
विषाद्विशालनेत्रेऽग्निवल्लभान्तस्तृतीयकः ॥
पञ्चरश्मि समुद्धृत्य तदन्ते सुरतप्रिये।
वह्निजायान्त उक्तोऽसौ चतुर्थः किन्नरीमनुः ॥
विषबीजं समुद्धृत्त्य सुमुख्यग्रे द्विठो मनुः।
सृष्टिर्दिवाकरमुखि शिवोऽन्तश्चापरो मनुः ॥

किन्नरीसाधन छः प्रकारका है। वह छः प्रकार मन्त्र कहता हूं। (१) ॐ मनोहारिणि हौं। (२) ॐ सुभगे स्वाहा। (३) ॐ विशालनेत्रे स्वाहा। (४) ॐ सुरतप्रिये स्वाहा। (५) ॐ सुमुखि स्वाहा। (६) ॐ दिवाकरमुखि स्वाहा।

मनोहारिणीसाधनम् ।

शैलमूर्ध्नि समास्थाय जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते महतीं पूजां गोमांसेन प्रकल्पयेत् ॥
धूपंच गुग्गुलं दत्त्वा यामिन्यां जपमाचरेत् ।
अर्द्धरात्रे समायाति न भेतव्यं कदाचन ॥
वदेत् किमाज्ञापयसि भव भार्यैति साधकः ।
त्रिदिवं पृष्ठमारोप्य दर्शयत्यपि यच्छति ॥
कामिकं भोजनं स्वर्गे सिद्धिद्रव्यं प्रयच्छति ॥

अब मनोहारिणी नामक किन्नरीका साधन कहा जाता है। रात्रिके समय साधक पर्वतके शिखर पर बैठकर "ॐ मनोहारिणी हौं" यह मन्त्र आठ हजार जपे । जप समाप्त होनेपर नील गोमांससे पूजा करनी चाहिये फिर गूगलकी धूप देकर जप करे आधीरातमें किन्नरी साधकके पास आती है साधक किन्नरीको देखकर कभी न डरे किन्नरी आकर साधकसे पूछेगी कि तुम क्या आज्ञा देते हो ? तब साधक कहे कि, तुम मेरी भार्या हो जाओ तव किन्नरी साधकको अपनी पीठपर चढाकर स्वर्गका दर्शन करावेगी तथा भोजन और अन्यान्य अभिलाषित वस्तु प्रदान करेगी ।

सुभगासाधनम् ।

पर्वते वा वने वाऽपि मन्दिरे वायुतं जपेत् ।
निराहारोपि जापान्ते दिव्यनीरजपाणिना ॥

उपचारयति सा तुष्टा भार्या भवति कामिता ।
ददात्यष्टौ दीनाराणि प्रत्यहं परितोषिता ॥

साधक उपवासी रहकर पर्वत वा वनमें अथवा देवमन्दिरमें जाकर 'ॐसुभगे स्वाहा' यह मन्त्र दश हजार जपे जपके अंतमें सुभगा नाम्नी किन्नरी साधकके निकट आती है और प्रसन्न होकर मनोहर हस्तकमल द्वारा साधककी सेवा करती है इस प्रकार साधककी पत्नी होकर प्रति दिन उसको आठ स्वर्णमुद्रा देती है ।

विशालनेत्रासाधनम् ।

नीचगातटमासाद्य जपेदयुतसंख्यकम् ।
प्रपूज्य सकलां रात्रिं प्रजपेद्रजनीक्षये ॥
किन्नरी शीघ्रमायाति भार्या भवति कामित।
ददात्यष्टौ दीनाराणि प्रत्यहं परितोषिता ॥

अब विशालनेत्रानाम्नी किन्नरीका साधन कहा जाता है । साधक रात्रिकालमें नदीके तटपर जाकर 'ॐ विशालनेत्रे स्वाहा' यह मन्त्र दश हजार जपे और किन्नरीकी पूजा करके समस्त रात्रि उक्त किन्नरीका मन्त्र जपना चाहिये। इस प्रकार करनेपर रात्रिके अन्तमें किन्नरी साधकके समीप आती है और उसकी भार्या होकर प्रतिदिन प्रसन्न चित्तसे उसको आठ स्वर्णमुद्रा प्रदान करती है ।

सुरतप्रियासाधनम् ।

नीचगासङ्गमे रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते शीघ्रमायाति चात्मानं दर्शयत्यपि ॥
स्थित्वा पुरो द्वितीयेऽह्नि वचनं भाषितं पुनः ।
तृतीये दिवसे प्राप्ते भार्या भवति कामिता ॥
ददात्यष्टौ दीनाराणि प्रत्यहं दिव्यवाससी ।

अब जिस प्रकार सुरतप्रिया नाम्नी किन्नरीका साधन करना चाहिये वह कहा जाता है । साधक रातके समय किसी नंदीके संगम स्थानमें जाकर 'ॐ सुरतप्रिये स्वाहा' यह मन्त्र आठ हजार जपे। प्रथम दिनही जपके अन्तमें यह किन्नरी शीघ्रतासे साधकके समीप आकर अपनी दिव्य मूर्ति दिखाती है । दूसरे दिन फिर इसी प्रकार साधकके जपावसानमें आकर सन्मुख अवस्थित हो बातें करती है और तीसरे दिन इसी भाँति जपके अन्तमें आकर साधककी भार्या होती है और प्रतिदिन उसको दिव्य वस्त्र और आठ अशरफी प्रदान करती है ।

सुमुखीसाधनम् ।

शैलमूर्द्धन्यन्वहं मांसाहारेणायुतकं जपेत् ।
जपान्ते पुरतः स्थित्वा चुम्बत्यालिंगयत्यपि ॥
तूष्णीम्भावेन सन्तुष्टा भार्या भवति कामिता।
ददात्यष्टौ दीनाराणि दिव्यं कामिकभोजनम् ॥

अब सुमुखी नाम्नी किन्नरीका साधन कहा जाता है। साधक नित्य पर्वतके शिखरपर चढकर मांसाहारप्रदानपूर्वक 'ॐसुमुखि स्वाहा' यह मन्त्र अयुत संख्यक जप करे। जपके अन्तमें किन्नरी साधकके समीप आकर मौनभावसे उसको चुम्बन और आलिंगन करती है और प्रसन्न चित्तसे उसकी पत्नी हो जाती है और फिर नित्य उत्तम भोज्य पदार्थ और आठ अशरफियां अर्पण करती है।

दिवाकरमुखीसाधनम्।

शैलमूर्ध्नि समास्थाय जपेदयुतसंख्यकम् ॥
रात्रावभ्यर्च्य प्रजपेन्मन्त्रमष्टसहस्रकम् ॥
किन्नर्यन्तिकमायाति वाञ्छितार्थं प्रयच्छति।
दीनाराणि ददात्यष्टौ भार्या भवति कामिता ॥
रसं रसायनं सिद्धिद्रव्यं भोज्यं प्रयच्छति ॥

अब जिस प्रकार दिवाकरमुखी किन्नरीका साधन करना चाहिये, सो कहा जाता है। साधक रात्रिके समय पर्वतके शिखरपर बैठकर 'ओम् दिवाकरमुखी स्वाहा' यह मन्त्र अयुत (दश हजार) जपे और यथाविधि दिवाकरमुखीकी पूजा करके पुनर्वार यह मन्त्र आठ हजार जपना चाहिये। जपके अन्तमें किन्नरी साधकके समीप आती है और भार्या होती है। फिर प्रतिदिन कोई न कोई वांछित वस्तु, आठ अशरफियां और नाना रसयुक्त भोज्य पदार्थादि प्रदान करती है।

इति किन्नरी साधनम्।

अथ शवसाधनं वा श्मशानसाधनम् ।

महारुद्र उवाच ।

अथातः संप्रवक्ष्यामि शवसाधनमुत्तमम् ।
श्मशानसाधनं यत्तु तदाश्चर्यकरं परम् ॥
येन विज्ञानमात्रेण सिद्धो भवति साधकः ॥

महारुद्रने देवी रुद्राणीसे कहा था कि, हे देवी ! अब तुमसे शवसाधन कहता हूं, इसीको श्मशानसाधन भी कहते हैं । यह परम अद्भुत है, इसके जानलेनेपर सहजमेंही साधकको सिद्धि मिल सकती है ।

अमावश्यां भौमवारे उपवासी जितेन्द्रियः ।
श्मशानालयमागत्य शवोपरि समारुहेत् ॥
मायाबीजं समुद्धृत्य पुटितं प्रणवेन तु ।
शवशब्दं समुच्चार्यमेनं पदमुदीरयेत् ।
साधयद्वितयञ्चैव वह्निजाया ततः परम् ।
एतन्मन्त्रं जपेच्चैव दशसहस्रसंख्यकम् ॥
शवसाधनमेतत्तु सिध्यति नात्र संशयः ।
यद्यदाज्ञापयति तत्कुरुते हि सुनिश्चितम् ॥
जपान्ते पूजनं कार्यं श्मशाने निर्जने तथा ।
षोडशैरुपचारैस्तु श्यामां श्यामलसुन्दरीम् ॥

अमावस्यायुक्त मङ्गलवारमें उपवासी और जितेन्द्रिय और

रात्रिके समय श्मशानमें जाय शव (मुरदे) पर चढ बैठे और 'ॐ ह्लीं ॐ शवमेनं साधय साधय स्वाहा' यह मंत्र दश हजार जप करे। इस प्रकार करनेसेही शवसाधन सिद्ध होता है। साधक उस शवको जो आज्ञा देगा शव तत्काल उस कार्यको करेगा। जपके पहिले श्मशानमें बैठकर यथाविधि षोडशोपचारसे श्यामा देवीकी पूजा करके फिर जप करनेमें प्रवृत्त होना चाहिये।

इति शवसाधनं वा श्मशानसाधनम्।

अथ योगिनीसाधनम्।

उन्मत्तभैरव उवाच।

अथातः संप्रवक्ष्यामि योगिनीसाधनोत्तमम्।
सर्वार्थसाधनं नाम देहिनां सर्वसिद्धिदम्॥
अतिगुह्या महाविद्या देवानामपि दुर्लभा।
यासामभ्यर्चनं कृत्वा यक्षेशो भुवनाधिपः॥
तासामाद्यां प्रवक्ष्यामि सुराणां सुन्दरीं प्रिये।
यस्याश्चाभ्यर्चनेनैव राजत्वं लभते नरः॥

उन्मत्त भैरवने कथाप्रसंगमें उन्मत्त भैरवीसे कहा था कि, हे देवी! अब मैं तुमसे अति उत्तम योगिनी साधन कहता हूं, इसका साधन करनेसे सर्वार्थ सिद्धि होती है यह अत्यन्त गोपनीय और देवताओंको भी दुर्लभ है, इसीकी आराधना करके कुबेर त्रिभुवनके अधिपति हुए हैं इसकी आराधना करनेसे राज्य प्राप्त होता है।

अथ प्रातः समुत्थाय कृत्वा स्नानादिकं शुभम् ।
प्रासादञ्च समासाद्य कुर्यादाचमनं ततः ॥
प्रणवान्ते सहस्रारं हुँ फट् दिग्बन्धनं चरेत् ।
प्राणायामं ततःकुर्यान्मूलमन्त्रेण मन्त्रवित् ॥
षडंगं मायया कुर्यात् पद्ममष्टदलं लिखेत् ।
तस्मिन्पद्मे तथा मन्त्री जीवन्यासं समाचरेत् ॥
पीठे देवीं समभ्यर्च्य ध्यायेद्देवीं जगत्प्रियाम् ।
ॐ पूर्णचन्द्रनिभां देवीं विचित्राम्बरधारिणीम् ॥
पानात्तुंगकुचां वामां सर्वज्ञामभयप्रदाम् ।
इति ध्यात्वा च मूलेन दद्यात्पाद्यादिकं शुभम् ॥
पुनर्धूपं निवेद्यैव नैवेद्यं मूलमन्त्रतः ।
गन्धचन्दनताम्बूलं सकर्पूरं सुशोभनम् ॥
प्रणवान्ते भुवनेशि आगच्छ सुरसुन्दरि ।
वह्नेर्जाया जपेन्मन्त्रं त्रिसन्ध्यञ्च दिने दिने ॥
सहस्रैकप्रमाणेन ध्यात्वा देवीं सदा बुधः ।
मासान्तदिवसं प्राप्य बलिपूजां सुशोभनाम् ॥
कृत्वा च प्रजपेन्मंत्रं निशीथे याति सुन्दरी ।
सुदृढं साधकं ज्ञात्वा याति सा साधकालये ॥
सुप्रेम्णा साधकाग्रे सा सदास्मरमुखीं ततः ।

दृष्ट्वा देवीं साधकेन्द्रो दद्यात्पाद्यादिकं शुभम् ॥
सचन्दनं सुमानसो दत्त्वाभिलषितं वदेत् ।
मातरं भगिनीं वाथ भार्या वा भक्तिभावतः ॥
यदि माता तदा वित्तं द्रव्यञ्च सुमनोहरम् ।
नृपतित्वं प्रार्थितं यत्तद्ददाति दिने दिने ॥
पुत्रवत्पालयेल्लोके सत्यं सत्यं सुनिश्चितम् ।
स्वसा ददाति द्रव्यञ्च दिव्यं वस्त्रं तथैव च ॥
दिव्यकन्यां समानीय कन्या कन्यां दिने दिने।
यद्यद्भवति भूतञ्च भविष्यतीति तत्पुनः ॥
तत्सर्वं साधकेन्द्राय निवेदयति निश्चितम् ।
यद्यत्प्रार्थयते सर्वं ददाति सा दिने दिने ॥
मातृवत्पालितं लोके कामनाभिर्मनोगतैः ।
भार्या वा यदि सा देवी साधकस्य मनोहरा ॥
राजेन्द्रः सर्वराजानां संसारे साधकोत्तमः ।
स्वर्गे लोके च पाताले गतिः सर्वत्र निश्चिता ॥
यद्यद्ददाति सा देवी कथितुं नैव शक्यते ।
त्वया सार्द्धञ्च सम्भोगं करोति साधकोत्तमः ।
अन्यस्त्रीगमनं त्याज्यमन्यथा नश्यति ध्रुवम् ॥

प्रातःकाल शय्यासे उठकर स्नान संध्या इत्यादि समापन करनेके पीछे 'ह्रौं' इस मन्त्रसे आचमन करना चाहिये। 'ॐ सहस्रारं हुँ फट्' इस मन्त्रसे दिग्बन्धन कर मूलमन्त्रसे प्राणायाम करना चाहिये। 'ह्रीं' इस मन्त्रसे षडङ्गन्यास करके अष्टदल पद्म अंकित करे। फिर उस पद्ममें प्राणप्रतिष्ठा कर पीठपूजा-पूर्वक देवीका ध्यान करे। जिस प्रकारसे ध्यान करना चाहिये वह मूलमें लिखा है। इस प्रकार ध्यान करके मूलमन्त्रसे पाद्य इत्यादिके द्वारा पूजा करनी चाहिये। फिर पुनर्वार मूल मन्त्रस धूप निवेदन करके नैवेद्य प्रदान करना चाहिये पीछे गन्ध चन्दन और कपूरादि वासित ताम्बूल अर्पण करे। नित्य तीनों संध्यामें ध्यान करनेके पीछे 'ॐ आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा ह्रीं' यह मूलमन्त्र एक हजार जपना चाहिये। इस प्रकार एक मासतक जप करके अन्तिम दिन यथाविधि पूजापूर्वक बलि देवे फिर एकाग्रमनसे जप करना चाहिये। निशीथकालमें देवी साधककी दृढ भक्ति देखकर उसके पास आती है, वह सदा हास्य मुख और प्रेममें भरी हुई साधकके निकट रहती है तब साधक देवीका दर्शन करके पाद्यादि अर्पण करे फिर चन्दनके सहित पुष्प प्रदान करके अपने मनकी अभिलाषा प्रकाशित करे अर्थात् साधक देवीको जननी, भगिनी अथवा भार्या कहकर सम्बोधन करे यदि साधक, जननी कहकर सम्बोधन करे तो धन, उत्तम वस्तु, राज्य और जिस जिस वस्तुकी प्रार्थना करता है, देवी प्रदान करती है यदि साधक भगिनी कहकर पुकारे तो देवी नाना प्रकारकी वस्तु और दिव्य वस्त्र प्रदान पूर्वक दिव्य

कन्या लाकर देती है इस साधनके प्रसादसे साधक भूत भविष्य और वर्तमान तीनों कालका ज्ञाता हो जाता है। साधक जो प्रार्थना करे देवी वही प्रदान करती है यदि देवी साधककी भार्या हो जाय तो साधक सब राजाओंमें श्रेष्ठ होता है इस साधनके प्रसादसे साधक स्वर्ग और पातालमें जा सकता है। यह साधन करनेपर देवी जो जो अर्पण करती है, उसका वर्णन करना कठिन है। यदि देवी साधककी भार्या हो जाँय तो साधक अन्य स्त्रीके साथ सम्भोग नहीं कर सकता क्योंकि दूसरी स्त्रीके साथ सहवास करनेपर क्रोधराज उस साधकका नाश कर देते हैं।

इति योगिनीसाधनम्।

अथ दुष्टदमनम्।

ॐ कक्कोल्ल कक्कोल्ल किलि किलि शोषय शोषय मथ मथ विद्रावय विद्रावय नाशय नाशय झङ्कार झङ्कार क्रूँ क्रूँ ह्रीं फट्। अमावश्यायां भौमे त्रिमार्गे लक्षजपेन सिद्धिः।

चोरभय दूर करने, व्याघ्रभय नाश और हाथीके भय दूर इत्यादि दुष्ट दमन कार्यमें प्रवृत्त होनेके प्रथम उपरोक्त मन्त्र लक्षजपद्वारा सिद्ध करके कार्यारंभ करे। मंगलवारकी अमावस्या तिथिमें रात्रिके समय तिराहेमें बैठकर जप करना चाहिये।

चौरभयनिवारणम्।

शुक्लपक्षयुते पुष्ये गुञ्जामूलं समुद्धरेत्।
बद्धं शिरसि शय्यायां चौरबाधाहरं परम्॥

शुक्लपक्षके पुष्य नक्षत्रमें चौंटलीकी जड उखाडकर अपने मस्तक और शय्यापर रखनेसे तस्करका भय दूर हो जाता है।

व्याघ्रराजभयादिनिवारणम् ।

धात्र्यन्तु बन्धकं ग्राह्यमाश्लेषाया प्रयत्नतः ।
हस्ते बद्धं भयं हन्ति चौरव्याघ्रादिराजकम् ॥

आश्लेषा नक्षत्रमें आमलेके वृक्षका बंदा लाकर हाथमें बाँधनेसे उसको तस्कर राजा और चोरका भय नहीं रहता।

युद्धे शत्रुदमनम् ।

आर्द्रायामाहृतं वंशबंधकं कर्णधारितम् ।
विजयं प्रापयेद्युद्धे शत्रुमध्ये न संशयः ॥

आर्द्रा नक्षत्रमें बांसकी जड लाकर कानमें धारण करनेपर शत्रुदमन होता है अर्थात् शत्रुके साथ संग्राममें विजय प्राप्त होती है ।

गजभयनिवारणम् ।

गृहीत्वा हस्तनक्षत्रे चूर्णयेत्तु छुछुन्दरीम् ।
तल्लेपेन गजा यान्ति दूरतो न तु सम्मुखम् ॥

हस्त नक्षत्रमें एक छछूंदर मारकर उसका चूर्ण करे उस चूर्णको यदि शरीरमें मल लेवे तो उसको देखतेही हाथी डरकर नीचेको मुख किये भाग जाते हैं ।

व्याघ्रभयनिवारणम् ।

श्वेतापराजितामूलं हस्तस्थं वारयेद्गजान् ।
श्वेतं बृहतिमूलञ्च हस्तस्थं व्याघ्रभीतिनुत ॥

सफेद अपराजिता (विष्णुकांता) की जड हाथमें धारण करनेपर हाथी उसको देखकर भाग जाते हैं और सफेद बृहतीकी जड बांधनेसे व्याघ्रका भय दूर होता है।

इति दुष्टदमनम् ।

अथ षण्डीकरणं सुस्थीकरणञ्च ।

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कामप्रचंडाय हन हन विनतेय मुखेन खण्डय खण्डय स्वाहा। अयं मन्त्रः सर्वषण्डीकरण प्रयोज्यः। रात्रौ निर्जने अयुतजपेन सिद्धिः।

षण्डीकरण कार्यमें ऊपर लिखे मन्त्रकी आवश्यकता है। प्रथम तो रात्रिके समय निर्जनमें उक्त मन्त्र दश हजार जप द्वारा सिद्ध करके फिर कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये।

नक्षत्रे ह्यनुराधायां लांगलीमूलमुद्धरेत्।
निशामूत्रस्थले पुंसो निखनेत् षण्डतां व्रजेत्॥
समुद्धृत्य पुनः स्वास्थ्यं पूर्वमन्त्रेण योजयेत्॥

अनुराधा नक्षत्रमें लाङ्गलीकी जड ले आवे फिर जिसको षण्ड करना हो वह जिस स्थानमें मूत्र त्याग करे वह जड उसी स्थानमें गाड देवे। इस प्रकार करनेसे वह व्यक्ति क्लीब होता है जडके उखाड डालनेसे वह व्यक्ति पहिली अवस्थाको प्राप्त होता है।

श्वेतापराजिता कुष्ठं वचा सैन्धवसंयुतम् ॥
शीततोयेन संपिष्य यस्य मूर्धि तु दीयते ॥
अथवा भक्षणादेव स षण्डत्वमवाप्नुयात् ॥

सफेद अपराजिता, कूठ, वच और सेंधा यह सब पदार्थ एकत्र कर शीतल जलमें पीस जिसके मस्तकपर प्रदान करे और जिसको भोजनकी वस्तुके साथ मिलाकर सेवन करावे वह क्लीब (नपुंसक) होता है, इसमें सन्देह नहीं।

नरो मूत्रयते यत्र कृष्णवृश्चिककण्टकम् ।
निखनेज्जायते षण्ड उद्धृत च पुनः सुखी ॥

जिसको क्लीब करना हो वह व्यक्ति जिस स्थानमें मूत्र त्याग करे वहां काले बीछूका काँटा गाड देनेसे वह षण्ड हो जाता है और यह काँटा उखाडकर फेंक देनेसे वह फिर अपनी पूर्व अवस्थाको प्राप्त होता है।

जलौकादग्धचूर्णन्तु नवनीतेन भक्षितम् ।
यावज्जीवं न सन्देहो यूनां षण्डत्वकारकम् ॥
धुस्तूरपुष्पभक्ष्येण पुनः सम्पद्यते सुखम् ॥

जोंकको भनकर उसका चूर्ण कर लेवे। फिर वह चूर्ण माखनके साथ मिलाकर जिसको खिलाया जाय वह जीवन भरके लिये क्लीब हो जाता है। किन्तु धतूरेका फूल भोजन करनेसे यह दोष शमन होता है और फिर पहली अवस्था प्राप्त हो जाती है।

तिलस्य दण्डा विटपस्य चूर्णं ।
प्रसाधितं बस्तपयोऽर्द्धमाषम् ॥
सयावकं शर्करयान्वितञ्च
पीत्वा हरेत्षण्डकतामवाप्य ॥

तिल और उसकी शाखा एकत्र पीसकर बकरीके दूधमें पकावे और उसमें चीनी मिलाकर यावकयुक्त कर सेवन करनेपर षण्डत्वदोषकी शांति होती है ।

निशाविचूर्णं वनसारयुक्तं ।
समीकृतं बस्तपयोवियुक्तम् ॥
भक्तं निपीतं कुरुते निकामं ।
नरस्य षण्डत्वमिति प्रसिद्धम् ॥

हलदीका चूर्ण और लाल चन्दन यह दोनों पदार्थ एकत्र मिलाकर उनमें बकरीका दूध मिलावे । यह अन्नके साथ सेवन करानेसे मनुष्य षण्ड (नपुसक) हो जाता है ।

इति षण्डीकरणम् ।

अथ पादुकासाधनम् ।

काकजङ्घा सिता ग्राह्या गृध्रस्य च वसा तथा ।
अश्वगन्धा समायुक्ता ह्युष्ट्रीक्षीरेण पेषयेत् ॥
अनेन लिप्तपादस्तु योजनानां शतं व्रजेत् ॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय भूतवेतालत्रासनाय

शंखचक्रगदाधराय हन हन महते चन्द्रयुताय हुँ फट् स्वाहा। त्रिलक्षजपेन सिद्धिः। अनेन च त्रिर्लेपनमभिमन्त्रयेत्।

सफेद वर्ण काकजंघा (मसी), गीधकी चरबी और असगध यह सब पदार्थ एकत्र ऊंटनीके दूधमें पीसकर पैरोंमें लेप करनेसे सौ योजन (चार सौ कोस) तक जानेमें समर्थ होता है। यदि यह कार्य साधन करना हो तो प्रथम 'ॐ नमो भगवते' इत्यादि मन्त्र तीन लाख जपसे सिद्ध कर लेना चाहिये। पैरोंमें जो लेप करे वह भी इस मन्त्रसे तीन बार अभिमन्त्रित कर लेवे।

श्वानमार्जारनकुलपित्तं ग्राह्यं समं समम्।
योजनानां शतं गत्वा काकमांसं रसाञ्जनम्॥
पिष्ट्वा पादप्रलेपेन पुनरावर्तते क्षणात्।
ॐ नमो भगवते रुद्राय मांसे समलेकाले खले घोरं प्रघर सर सर स्वाहा।

कुत्ते बिल्ली और नकुल (नौला) इनका पित्त समान भाग लेकर चार सौ कोस दूर गमन करे। फिर इनके साथ कौवेका मांस और रसांजन मिलाकर एकत्र पीस लेवे। इसके द्वारा पैरोंमें लेप करनेसे पलमात्रमें शतयोजन फिरकर आसकता है। इस कार्यमें 'ॐ नमो भगवते रुद्राय' इत्यादि मन्त्रकी आवश्यकता है। पूर्ववत् मन्त्रसिद्धिको भी इस मन्त्रके द्वारा अभिमंत्रित करे।

कीटमैन्दवसिन्दूरं हरिचन्दनवेतसम् ।
अजामांसं तथा रास्नामजाक्षीरेण भावयेत् ॥
पिष्ट्वा पादप्रलेपेन स गच्छेद्योजनायुतम् ।
सुभगः स तु नारीणां ब्रह्मतुल्यो भवेन्नरः ॥
ॐ नमो भगवते रुद्राय नमो ब्रह्मणे नमः सूर्याय
नमश्चन्द्राय शंखनेत्रगदाधराय हिलि हिलि स्वाहा।

इन्द्रगोपकीडा, सिंदूर, कुंकुम, वेतकी लता, बकरेका मांस और रास्ना (रायसनाय) इन सब पदार्थोंको बकरीके दूधमें भावना देकर पीस लेवे। इसके द्वारा चरणोंमें लेप प्रदान करनेपर दश हजार योजन गमन कर सकता है और वह पुरुष स्त्रीजातिका प्रिय और ब्रह्माके समान होता है। इस कार्यमें पूर्ववत् मन्त्रसिद्धि करके उसके द्वारा लेप द्रव्य अभिमन्त्रित कर लेने चाहिये। मन्त्र मूलमें लिख रहा है।

सारिकाया वसानेत्रमन्त्राणि रुधिरं तथा ।
काकपित्ततथा नेत्रं हरिचंदनवेतसम् ॥
शुनो मज्जां वसां तुल्यामुष्ट्रीक्षीरेण भावयेत् ।
पादलेपः प्रकर्तव्यो नमस्कृत्य शिवं ततः ॥
योजनं लक्षमेकन्तु निमिषार्द्धेन गच्छति ।
गगनाशेषचारी च क्रीडत्येव यथा शिवः ॥
खाकोटिशतसंघातं कामयेन्नि मषान्तर ।

ब्रह्मतुल्यो भवेत्सोऽपि लीयते परमे शिवे ॥
ॐ नमश्चन्द्रमसे चन्द्रशेखराय नमो भगवतेतिष्ठ नमो भगवते नमः शिखरे नमःशूलिने नमःपाद-प्रचारिणे वेगिने हुँ फट् स्वाहा ।

ऊपर (ॐ नमश्चन्द्रमसे) इत्यादि जो मन्त्र लिख रहा है यह मन्त्र पूर्ववत् जपद्वारा सिद्ध कर लेना चाहिये । फिर सारिका पक्षी (मैना) की चरबी, नेत्र, आतें और रुधिर और कौवेका पित्त, नेत्र, कुंकुम, वेंतकी लता, कुत्तेकी मज्जा और चरबी यह सब पदार्थ बराबर लेवे और फिर इनको उंटनीके दूधमें पीसकर श्रीमहादेवजीको प्रणामपूर्वक चरणोंमें लेप प्रदान करे। उपद्रव्य उक्त मंत्रसे तीन बार अभिमन्त्रित करके पीछे चरणोंमें लेप करे । इस प्रकार करनेपर आधे निमेषमें वह पुरुष लक्ष योजन दूर जा सकता है । यह पुरुष श्रीमहादेवजीके समान आकाश-मार्गमें विचरण करनेको समर्थ होता है। वह पलमात्रमें अनेकानेक स्त्रियोंसे सम्भोग कर सकता है और वह अन्त समय परब्रह्ममें लीन होता है ।

काकस्य हृदयं नेत्रं जिह्वाञ्चैव मनः शिलाम् ।
गैरिकं चैव सिन्दूरमजमारी च मालती ॥
समं रुद्रजटां चैवं विदार्या सह पेषयेत् ।
तल्लिप्तपादः सहसा सहस्रयोजनं व्रजेत् ॥
वलीपलितनिर्मुक्तो यावदाहूतसंप्लवम् ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय हरितगदाधराय त्रासय त्रासय चालय चालय स्वाहा ॥

कौवेका हृदय, नेत्र और जीभ लाकर उसके साथ मनशिल गेरू, सिन्दूर, अजमारी (कौंछ) मालती फूल, रुद्रजटा (भूतकेशी) और विदारीकन्द यह सब पदार्थ एकत्र पीसकर चरणोंमें लेप करनेपर सहस्र योजन मार्गगमन कर सकता है। और महाप्रलयतक वलीपलितादिसे हीन होता है। मूल लिखित 'ॐ नमो मगवते' इत्यादि मन्त्र द्वारा लेपद्रव्य पूर्ववत् अभिमंत्रित कर लेवे। उक्त मन्त्र पूर्ववत् सिद्ध कर लेना चाहिये।

विधिना कृकलासस्य पुच्छमादाय दक्षिणम्।
त्रिलोहवेष्टितं वक्त्रे धार्यमिच्छागतिर्भवेत् ॥
ॐ संकोचाय स्वाहा।

कृकलास (गिरगिट) के दाहिनी ओरकी पूंछ लाकर त्रिलोह वेष्टित करे। फिर उसको मुखमें धारण करनेसे वह पुरुष अपनी इच्छानुसार दूर जा सकता है। धारण करनेके समय 'ॐ संकोचाय स्वाहा' इस मन्त्रसे उसको अभिमन्त्रित कर लेना चाहिये। यह मन्त्र पूर्ववत् जप द्वारा सिद्ध कर लेवे।

इति पादुकासाधनम्।

अथ गुटिकासाधनम्।

साधकश्चिह्नालयं गत्वा नित्यं तस्मै निवेदयेत्।
देवताबुद्ध्यातिभक्त्या भक्षणार्थं किञ्चित्किंचि-

दाममांसं निक्षिपेत् । यावत्प्रसूता भवति ततः-पारदं रसं सार्द्धनिष्कत्रयं कस्मिंश्चिन्नालिकाद्वये निक्षिपेत् तस्योर्द्धाधश्छिद्रं सिक्थकेनरुद्ध्वा चिल्लालयं गत्वाऽण्डद्वयस्योपरि नालिकाद्वयं निधाय लौहशलाकायां नालिकामध्यमार्गे तदण्डं लघुहस्तेन वधयित्वा शलाकामुद्धरेत् । तेनैव मार्गेणाण्डमध्ये यथाम्भो गच्छति तथा यत्नं कुर्यात् । ततश्छिद्रं चिल्लाविष्ठयालिम्पेत् ततस्तद्वृक्षाधो नित्यमतिबल्युपहारेण पूजां कुर्यात् । यावत् स्वयमेवाण्डानि स्फोटयन्ति तावन्नित्यमुपरि गत्वा वीक्षयेत । स्फुटिते सति गुटिकाद्वयं ग्राह्यम् । ततो वृक्षादुत्तीर्य यो गिलति मनुष्यस्तस्मै एका देया । अपरां स्वयं मुखे धारयेत् । योजनद्वादशं गत्वा पुनरेव निवर्त्तते ॐ ह्रीं हुँ फट् चिल्लचक्रेश्वरी परात्परेश्वरे पादुकानाशनं देहि मे देहि स्वाहा। अनेन मन्त्रेण जपं पूजाञ्च कुर्यात्।

प्रथम तो चीलपक्षीके घोंसले पर जाय, उसको देवता जानकर पूजा करे। नित्य इस प्रकार पूजा करके भोजनके लिये थोडा थोडा कच्चा मांस देवे प्रसवसमयतक इस प्रकार भोजन

देकर प्रसवके अन्तमें दो नल निर्माण करके उसके ऊपर नीचेके छिद्र मोमसे बंद कर देवे। फिर तिनमें साढे तीन तोला पारा भरकर वह दोनों नल दोनों अंडोंके ऊपर रखे और एक लोहेकी सलाई नलके ऊपरी मुखमें प्रवेशित करके सावधानीसे दोनों अंडे वेधकर सलाई निकाल लेवे। इस प्रकार सावधानी और कोमल हाथोंसे अंडा वेधे, जिससे उन छिद्रोंके द्वारा अंडोंमें नलका पारा घुस जाय और अंडे न फूटें। फिर उन अंडोंके छेद चीलकी बीटसे बन्द करके वृक्षके नीचे अंडोंके फूटनेतक नित्य बलि और अनेक प्रकारके उपहारसे पूजा करे। जबतक यह अंडे अपने आप न फूटें तबतक नित्य वृक्षके ऊपर चढकर देखें। इन अंडोंके फूटनेपर दिखाई देगा कि उनमें दो गुटिका हुए हैं। तब यह दोनों गुटिका लाकर एक अपरव्यक्तिको देवे और एक अपने मुखमें रखे। इस प्रकार कार्य करनेपर वह मनुष्य सौ योजन दूर जाकर फिर वहांसे लौटकर आं सकता है। ॐ ह्रीं इत्यादि मूल लिखित मन्त्रसे पूजा और जप करना चाहिये। लक्ष जप द्वारा यह मन्त्र सिद्ध होता है।

अथ मृतसंजीवनीविद्या।

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
रुद्रेभ्यो रुद्ररूपेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥
निशीथे भौमे श्मशाने अन्यैरदृष्टं लक्षजपेन सिद्धिः।
लिङ्गामकोलवृक्षाधः स्थापयित्वा प्रपूजयेत्।
नवं घटंच तत्रैव पूजयेल्लिङ्गसन्निधौ॥

वृक्षं लिङ्गं घटञ्चैव सूत्रेणैकेन वेष्टयेत् ।
चतुर्भिः साधकैः सार्द्धं प्रतिमासं क्रमेण तु ॥
एवं दिवानिशं कुर्यादघोरेण समर्चनम् ।
पुष्पादिफलपाकान्तं साधनं कारयेत्सुधीः ॥
फलानि पक्वान्यादाय पूर्वोक्तं पूरयेद्घटम् ।
तद्घटं पूजयेद्धीमानर्घ्यपुष्पाक्षतादिभिः ॥
तुषवर्जि ततः कृत्वा गजानां वापयेन्मुखम् ।
तन्मुखे टङ्कटं चूर्णं किञ्चित्किंचित्प्रपूजयेत ॥
विस्तीर्णमुखभाण्डान्तः कुम्भकारगणोद्धृतम् ।
मृत्तिकां लेपयेत्तत्र तानि बीजानि लेपयेत् ॥
कुण्डल्याकारयोगेन यत्नादूर्ध्वं मुखानि च ।
तच्छुष्कं ताम्रपात्रोत्थं भाण्डं दद्यादधोमुखम् ॥
आतपे धारयेत्तैलं ग्राहयेत्तं च रक्षयेत् ।
माषार्द्धंचैव तत्तैलं माषार्द्धं तिलतैलकम् ॥
तस्य देयं मृतस्यैतत्सम्यक् तस्यास्यितेन तु ।
तत्क्षणाज्जीवयेत्सत्यं गतो वापि यमालयम् ॥
रोगादिसर्पादिमृताः पुनर्जीवन्ति निश्चयम् ॥

मृतसंजीवनी विद्यामें सबसे पहिले ॐ अघोरेभ्योऽथ इत्यादि ऊपर लिखा मंत्र लक्ष जपद्वारा सिद्ध करलेना चाहिये । मंगल-

वार निशीथकालके समय श्मशानमें बैठकर गुप्त रीतिसे जप करना चाहिये। अंकोल वृक्षके नीचे शिवलिंग स्थापनपूर्वक उस लिंगके समीप एक नूतन घट स्थापन करके पूजा करे। इस प्रकार दिन रात अघोर मन्त्रसे पूजा करनी चाहिये। जबतक इस वृक्षमें फूल और फल उत्पन्न न हों तबतक नित्य पूजा करके फल पकने पर उसको लेवे। अनन्तर पुनर्वार पुष्प अक्षत अर्घ्य इत्यादिसे उस घटमें पूजा करे। फिर इन सब बीजोंकी भुस्सी छुटाकर एक फैले हुए मुखवाले बरतनमें रखे। इस बरतनके मुखमें कुछेक सुहागेका चूर्ण डालकर कुम्हारके द्वारा उखाडी हुई मिट्टीके द्वारा उस बरतनका मूख लिप्त कर नीचेको मुख करके धूपमें रखे। इस बरतनके नीचे एक तांबेका पात्र रखना चाहिये। इस प्रकार करनेपर उस ताँबेके पात्रमें तेल गिरता है, यह तैल आधा मासा और तिलका तेल आधा मासा एकत्र करके मुरदेके ऊपर छिडकनेसे वह व्यक्ति तत्काल पुनरुज्जीवित होता है। पीडा सर्प घात वा किसी प्रकारही क्यों न मरा हो इस क्रियासे जीवित होगा।

पुष्यभाष्करयोगेन गुडूचीमूलमाहरेत्।
कर्षमुष्णोदकैः पीतमपमृत्युहरं परम्॥

रविवार पुष्यनक्षत्रमें गिलोयकी जड लाकर उसको दो तोले गरम जलके साथ सेवन करनेसे उस व्यक्तिको अकाल मृत्युका भय नही होता है। भोजनके समय पूर्वोक्त मंत्र द्वारा द्रव्य सात बार अभिमन्त्रित कर लेने चाहिये।

अथ रसायनविद्या ।

ॐ नमो हरिहराय रसायनं सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा ।
ग्रान्तरेऽलक्षिते अयुतजपेन सिद्धिः ।
गोमूत्रं हरितालञ्च गन्धकञ्च मनःशिलाम् ।
समं समं गृहीत्वा तु यावत् शुष्यति पेषयेत् ॥
एकादशदिनं यावद्यत्नेन रक्षयेच्छुचिः ।
मन्त्रेण धूपदीपादिनैवेद्यैर्दुग्धमिश्रितैः ॥
तद्वटीं गोलकं कृत्वा वस्त्रेण वेष्टयेत्पुनः ।
मृत्तिकां लेपयेत्तस्य छायाशुष्कन्तु कारयेत् ॥
गर्त्ते कुंडे विनिक्षिते पलाशेन्धनवह्निना ।
ज्वालयेदष्टयामन्तु नान्यथा शङ्करीदितम् ॥
तद्भस्म जायते सिद्धिर्वैद्धि सिद्धिसमाकुलम् ।
ताम्रपात्रे अग्निमध्ये बिन्दुमात्रं नियच्छति ॥
तत्क्षणाज्जायते स्वर्णं नान्यथा शंकरोदितम् ।
दातव्यं गुरुभक्ताय न दद्याद्दुष्टमानसे ॥
सिद्धिपीठे भवेत्सिद्धिर्गायत्रालक्षजापनैः ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं दातव्यं शिवभक्तके ॥
अग्निमुखद्विजातीनां याचकानां विशेषतः ।
गोप्यं गोप्यं महागोप्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥

रसप्रतिक्रियां कृत्वा गोप्यं नैव प्रकाशयेत् ।
वनितापुत्रमित्रादिगोप्यं सिद्धिप्रदायकम् ॥

रसायनविद्याके साधन करनेमें प्रथम मूल लिखित ॐ नमो हरिहराय इत्यादि मन्त्र दश हजार मन्त्रद्वारा सिद्ध करके फिर कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये। अन्यकी दृष्टिसे छिपकर प्रान्तरमें बैठकर जप करे। गोमूत्र, हरताल, गन्धक और मनशिल यह सब बराबर लेकर खरलमें पीसे। जबतक सूखे तबतक भलीभांति पीसकर यत्नसहित पवित्र स्थानमें रक्खे। फिर ग्यारह दिन बीतने पर धूप दीप और दुग्धसमन्वित नैवेद्यादि विविध उपचारोंसे यक्षिणीकी पूजा करनी चाहिये। फिर पूर्वोक्त पिसे हुए पदार्थ गोलाकार करके वस्त्रसे परिवेष्टित करे। फिर मट्टीका लेप करके गर्तके भीतर पलाशकाष्ठ डालकर उसके ऊपर यह गोलक द्रव्य स्थापन करे और ऊपरी भागमें पलाश काष्ठकी आठ पहरतक आँच लगावे। फिर वह भस्म लेकर एक स्थानमें रखनी चाहिये। फिर एक तांबेका टुकडा अग्निमें दग्ध कर उसमें जरा-सी पूर्वोक्त भस्म डालते ही तत्काल वह तांबा सुवर्ण हो जायगा। महादेवजीने स्वयं इस क्रियाका वर्णन किया है यह बात कभी मिथ्या होनेवाली नहीं है। इस क्रियाको साधन करनेके प्रथम किसी सिद्धपीठमें बैठकर एक लाख गायत्रीका जप करे। इस क्रियाको सर्व साधारणके निकट प्रकाशित न करे। यह देवताओंको भी दुर्लभ है। जो पुरुष एकमात्र शिवका भक्त है, उसीके निकट प्रकाशित करे। यह सिद्धिदायक विषय पुत्र, कलत्र, मित्र किसीके भी निकट प्रकाशित न करे।

आनीय बहुयत्नेन सम्बलं तोलकद्वयम् ।
वसुराद्यं शिवश्चाद्यं मायाबिन्दुसमन्वितम् ॥
बीजत्रयश्चाष्टशतं प्रजपेत्सम्बलोपरि ।
अशीतितोलकं मानं कृष्णाधेनुसमुद्भवम् ।
दुग्धमानीय यत्नेन चाष्टोत्तरशतं जपेत् ।
वस्त्रयुक्तन सूत्रेण दुग्धमध्ये विनिक्षिपेत् ॥
उत्तार्य ज्वालयेद्धीमान् मन्दमन्देन वह्निना ।
रिपुर्वेदार्द्धपर्यन्तमर्द्धशेषं भवेद्यदि ॥
तदैवोत्तोल्य तद्द्रव्यं दग्धं तोये विनिःक्षिपेत् ।
निर्धूमं पावके द्रव्यं दृष्ट्वा चोत्थाप्य यत्नतः ॥
तत्रैव प्रजपेन्मन्त्रं सर्वमङ्गलमात्मकम् ।
सार्द्धेन तोलकं ताम्रं वह्निमध्ये विनिःक्षिपेत् ॥
यथा वह्निस्तथा ताम्रं दृष्ट्वा उत्थाप्य यत्नतः ।
गुञ्जाप्रमाणं तद्द्रव्यं सत्यं सत्यं हि शंकरि ॥
रौप्यं भवति तद्द्रव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ।

दो तोला सम्बल (जल) लाकर उसपर 'ॐ हुँ ह्रीं यह त्रिवर्णात्मक मन्त्र एक सौ आठ बार जपकर काली गायका दूध अस्सी तोले लावे और उसपर उक्त मन्त्र अष्टोत्तरशत जपे। फिर यह सम्बल वस्त्रके टुकडेमें पोटली करके उसमें डोरा बाँध देवे और फिर उसको उस दूधके भीतर डालकर

मीठी मीठी आगसे ताप देवे। जब इस दूधमें आधा मूखकर आधा शेष रह जाय तब वह पोटली दूधमेंसे निकालकर जलमें डाल देवे। कुछ देर पीछे उसको जलसे निकालकर अग्निमें डालने पर यदि उसमेंसे धुआँ न निकले, ऐसा होनेसेही समझ लेना चाहिये कि सम्बल कार्यके उपयुक्त हुआ है। अनन्तर इस संबलके ऊपर भागमें पूर्वोक्त मन्त्र आठ हजार बार जपना चाहिये। फिर आधा तोला ताँबा अग्निमें दग्ध करे जब वह ताँबा अग्निके समान होगा तब वह अग्निसे निकालकर सम्बलकी रत्ती लेकर उस ताँबे पर डालतेही वह ताँबा चांदी हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं।

इति रसायनविद्या।

अथ सर्वौषधिकथनम्।

श्वेतापराजितामूलं देवदानीयमूलकम्।
वारिणा पेषितं नस्यं कालदष्टोऽपि जीवति॥

जलके संग सफेद विष्णुक्रांता और बडी तोरईकी जड पीसकर हुलास सूंघने पर सर्पसे काटा हुआ मनुष्य आरोग्यता लाभ करता है।

दधि मधु नवनीतं पिप्पली शृङ्गवेर।
मरिचमपि च कुष्ठं चाष्टमं सैन्धवञ्च॥
यदि दशति सराषस्तक्षको वासुकिर्वा।
यमसदनगतः स्यादानयेत्तत्क्षणेन॥

दही, शहत, मक्खन, पीपल, अदरक, गोल मिर्चें, कूट और सैंधा इन आठ पदार्थोंके सेवन करनेसे क्रुद्ध तक्षक वा वासुकीके डसा हुआ पुरुष भी तत्काल यमालयसे लौट आता है।

अथ विविधमन्त्राः।

तत्र

ॐ	ह्रीं	क्लीं	स्त्री	हुँ	फट
रक्षा	गर्भ	अमुकी	गर्भ	रक्ष	रक्ष
स्वा	हा	श्रीं	क्लीं	फट्	हुँ

मृतवत्सादोषशांतिः।

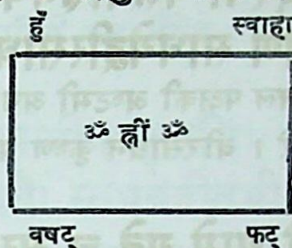
भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुंकुमेन च।
कण्ठे वा वामबाहौ च धृत्वा गर्भवती सती॥
मृतवत्सा दोषहीना भवेच्चैव न संशयः॥

भोजपत्रपर गोरोचन और कुंकुमसे यह मन्त्र लिखकर कंठ अथवा बांई भुजामें धारण करने पर मृतवत्सा दोषकी शान्ति होती है।

वन्ध्यागर्भधारणम्।

चतुष्कोणं समालिख्य भूर्जे वा तालपत्रके।
ऊर्द्धभागे च गगन बिन्दुनादसमन्वितम्॥
अन्यत्र चाग्निपत्नी च लिखेन्मन्त्रमनन्यधीः।
अधोभागे वषट् चैव फट्कारञ्च ततो लिखेत्॥

मध्ये प्रणवपुटितं मायाबीजं समुद्धरेत् ।
विधिना पूजयित्वा च रुद्रं रुद्रकालीं तथा ।
कण्ठे वा वामबाहौ च त्वथवा कटिदेशके ।
वन्ध्या चापि लभेत्पुत्रं धारणान्नात्र संशय ॥



भोजपत्र वा तालपत्रपर उपरोक्त यन्त्र लिखकर यथाविधि रुद्र और रुद्रकालीकी पूजापूर्व कंठ कमर अथवा बाँई भुजामें धारण करनेसे वंध्या (बाँझ) स्त्री भी पुत्र प्राप्त करती है, इसमें सन्देह नहीं ।

अथ काकवन्ध्यादोष शान्तिः ।

अश्वगन्धाया मूलन्तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ।
पेषयेन्महिषीक्षीरैः पलार्द्धं भक्षयेत्सदा ॥
सप्ताहाल्लभते गर्भं काकवन्ध्या चिरायुषम् ॥

मन्त्रस्तु ।

ॐ नमः शक्तिरूपाय अस्या गृहे पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा । अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धिः ॥

पुष्यनक्षत्रयुक्त रविवारमें असगन्धकी जड लाकर उसको

भैंसके दूधमें पीसकर अर्द्ध पल सेवन करे। इससे काकवंध्या स्त्री भी सात दिनके भीतर गर्भ धारण करती है और यथाकालमें दीर्घजीवी पुत्र प्राप्त करती है।

वीरसाधनम्।

अष्टम्यां चतुर्दश्यां पक्षयोरुभयोरपि।
कृष्णपक्षे विशेषेण साधयेद्वीरसाधनम्॥

कृष्ण अथवा शुक्ल पक्षकी अष्टमी अथवा चतुर्दशी तिथिमें वीरसाधन कार्य करे। वीरसाधन कृष्ण पक्षमें विशेष फलका देनेवाला है।

तत् सार्द्धप्रहरे यामे गते च सुरसुन्दरी।
शवं वापि चितां वापि नीत्वा गत्वा यथासुखम्॥
साधयेत्स्वहितं मन्त्री मन्त्रध्यानपरायणः॥
भयं नैव तु कर्त्तव्यं हास्यं तत्र विवर्जयेत्॥
चतुर्दिशं न वीक्षेत मन्त्रमेव समभ्यसेत्।

साधक डेढ पहर रात्रि बीतनेपर चितास्थानसे एक शव (मुरदा) लाकर मन्त्रध्यानपरायण हो अपना हित करनेके निमित्त कार्य करे। साधनके समय साधक किसी प्रकार डरे नहीं, हँसी मसखरी त्याग दे और किसी ओर न देखकर एकाग्र चित्तसे केवल मन्त्रका जप करता रहे।

---

१ पूर्वं पुत्रवती या सा क्वचिद्वन्ध्या भवेद्यदि।
काकवन्ध्या तु सा ज्ञेया चिकित्सा तत्र कथ्यते॥

प्रथम जो एक मात्र पुत्रवती थी और फिर कोई संतान उत्पन्न नही हुई उसका नाम काकवन्ध्या है।

पूजाद्रव्यादि ।

सामिषान्नं गुड़ं छागं सुरा पायसपिष्टकम् ।
नानाफलञ्च नैवेद्यं स्वस्वकल्पोक्तसाधितम् ।

वीरसाधन कार्यमें जिन सब द्रव्यों (वस्तुओं) की आवश्यकता है वह कही जाती है सामिषान्न, गुड, छाग (बकरा) सुरा, खीर, अनेक भांतिके फल, नैवेद्य और स्व स्व देवताओंके पूजा विहित द्रव्य ।

चितास्थानं समानीय सुहृद्भिः शस्त्रपाणिभिः ।
समानगुणसम्पन्नैः साधयेद्वीतभीः स्वयम् ॥

साधक यह सब पदार्थ श्मशान स्थानमें लाकर निर्भय चित्तसे समान गुणशाली अस्त्रधारी बंधुओंके सहित वीरसाधन करे।

अपि च ।

बल्यर्थं सामिषान्नञ्च गुडं छागं तथा मधु ।
पिष्टकं परमान्नं च पयो मूलं फलं तथा ॥
सप्तपात्रं बलिं कृत्वा चतुःपात्रं चतुर्दिशि ।
पात्रत्रयं सदा मध्ये स्थापयेन्मनुनामुना ॥
गुरुं वा भ्रातरं वापि ब्राह्मणान् वापि सुव्रतान् ।
अन्यानपिच रक्षार्थं किञ्चिद्दूरे निवेशयेत् ॥

मतांतरमें लिखा है कि बलिके निमित्त सामिषान्न, गुड, बकरा, शहत, पिट्टी, परमान्न, दूध, फल और मूल यह सब पदार्थ

संग्रह करके वीरसाधन करे। बलिके पदार्थ सात पात्रमें रखकर उनमें चार दिशामें और तीन पात्र बीचमें रखकर मंत्रपाठ पूर्वक निवेदन करे। गुरु, भ्राता अथवा सुव्रत ब्राह्मणोंको अपनी रक्षाके निमित्त थोडी दूरपर नियुक्त करे।

चितालक्षण।

असंस्कृता चिता ग्राह्या न तु संस्कारसंस्कृता।
चाण्डालादिषु संप्राप्ता केवलं शीघ्रसिद्धिदा॥

अब चिताके लक्षण कहे जाते हैं। वीरसाधन कार्यमें असंस्कृत चिताही ग्रहण करे संस्कृत अर्थात् जलसेकादि द्वारा परिष्कृत चितामें वीरसाधन न करे चाण्डालादिके श्मशानमें वीरसाधन करनेसे शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है।

अधिकारिनिरूपणम्।

महाबलो महाबुद्धिर्महासाहसिकः शुचिः।
महास्वच्छो दयावांश्च सर्वभूतहिते रतः॥

वीरसाधन कार्यमें अधिकारी निरूपण किया जाता है। जो महाबलशाली, महाबुद्धि, महासाहसयुक्त, सरलचित्त, दयावान् और सब प्राणियोंका भला करनेमें तत्पर है वही वीरसाधन कार्य करनेका अधिकारी है।

ततः सामान्यार्घ्यं विधाय स्वस्तिवाचनपूर्वकं सङ्कल्पं कुर्यात्। यथा ॐ अद्येत्यादि अमुकगोत्रः श्रीअमुकदेवशर्मा अमुकमन्त्रसिद्धिकामः श्मशानसाधनमहं करिष्ये इति सङ्कल्प्य वस्त्रा-

लङ्कारभूषणाद्यैर्भूषितःपूर्वदिङ्मुखः । अस्त्रान्तकमूलमन्त्रेण प्रोक्षणं यागभूमिषु मूलमन्त्रेण फट्कारान्तेनेत्यर्थः ।

गुरुपादरजो ध्यात्वा गणेशं बटुकं तथा ।
योगिनीं मातृकाश्चैव वामपादपुरःसरम् ॥

तथा च ।

गणेशादिकं सम्पूज्य अस्त्रमन्त्रेणात्मानं संरक्ष्य
अस्त्रमन्त्रेण मन्त्रज्ञो रक्षामात्मनि कारयेत् ॥

ततः । ये चात्रसंस्थिता देवाराक्षसाश्च भयानकाः ।
पिशाचाः सिद्धयो यक्षा गन्धर्वाप्सरसां गणाः ।
योगिन्यो मातरो भूताः सर्वाश्च खेचराः स्त्रियाः ॥
सिद्धिदास्ता भवन्त्वत्र तथा च मम रक्षकाः ।
प्रणम्य मनुनानेन पुष्पाञ्जलित्रयं क्षिपेत् ॥

इस प्रकार अधिकारी पुरुष सामान्य अर्घ्य स्थापन करके स्वशाखोक्त स्वस्तिवाचनपूर्वक संकल्प करे। संकल्पवाक्य मूलमें लिख रहा है। संकल्प करनेके उपरान्त साधक वस्त्रालंकरादि अनेक गहनोंसे विभूषित होकर पूर्वाभिमुख बैठे फट्कारान्त मूलमन्त्रसे यागस्थानको प्रोक्षण करे। फिर गुरुदेवके बायें पैरकी रजका ध्यान करके गणेश, बटुक, योगिनी और मातृकागणकी पूजा करे। अनन्तर साधक फट् इस मन्त्रसे आत्मरक्षा करके

'ये चात्र संस्थिता देवा' इत्यादि मूललिखित मंत्रसे प्रणाम करके तीन अंजली पुष्प प्रदान करे।

श्मशानाधिपतिं पश्चाद्भैरवं कालभैरवम् ।
महाकालं यजेत्पश्चात्पूर्वादिदिक्चतुष्टये ॥
शब्दबीजं ततः पश्चाच्छ्मशानाधिपतत्परम् ।
इममन्ते सामिषान्नबलिं गृह्ण ततः परम् ॥
गृह्णगृह्णापयद्वन्द्वं विघ्ननिवारणं ततः ।
कुरु सिद्धिं ममान्तश्च प्रयच्छ स्वाहयान्वितम्॥
प्रणवाद्येन मनुना प्रथमो बलिरीरितः ।
मायान्ते भैरवात्पश्चाद्भयानकमतः परम् ॥
पूर्ववद्बलिमुद्धृत्य दक्षिणे बलिमाहरेत् ।
पश्चिमे कालदेवाय प्रणवाद्येन कल्पयेत् ॥
शब्दान्ते कालशब्दान्ते भैरवेति ततः परम् ।
स्मशानाधिप इत्येवं पूर्ववच्चोत्तरे हरेत् ॥
होमान्ते च महाकालात्पश्चात्पूर्ववदुच्चरेत् ॥
पाद्यादिभिश्च मन्त्रज्ञो बलिं पश्चान्निवेदयेत् ॥

श्मशानाधिपतिं पञ्चोपचारैः संपूज्यानेन मन्त्रेण बलिं दद्यात् तद्यथा ।

ॐ हूँ श्मशानाधिप इमं सामिषान्नबलिं गृह्ण गृह्ण

गृह्णापय विघ्ननिवारणं कुरु सिद्धिं मम प्रयच्छ
स्वाहा ॥
ततो भैरवं पूर्ववत्सम्पूज्य दक्षिणस्यां ह्रीं
भैरव भयानक इमं सा मषान्नबलिमित्यादि ।
ततः पश्चिमे कालभैरवं सम्पूज्य हूं महाकाल
श्मशानाधिप इमं सामिषान्नबलिमित्यादि ॥
चितामध्ये ततो दद्याद्बलित्रयमनुत्तमम् ।
कालरात्रि महाकालि कालिके घोरनिःस्वने ॥
कालिकायै बलिं दत्त्वा भूतनाथाय दापयेत् ।
शब्दान्ते भूतनाथान्ते श्मशानाधिप इत्यपि ॥
प्रणवाद्येन मनुना दापयेद्बलिमुत्तमम् ।
शब्दान्ते तु सर्वगणनाथान्ते चाधिपाय च ॥
श्मशानमस्तके दत्त्वा पञ्चगव्येन सुन्दरि ।
अद्भिश्च प्रोक्षणं कृत्वा पीतवस्त्रं न्यसत्ततः ॥
भूर्जे वा वटपत्रे वा तत्र पीठमनु न्यसेत् ।
पीठमास्तीर्य तस्मिन्वै बद्धवीरास स्ततः ॥
वीरार्दनेन मनुना रक्षां दिक्षु प्रकल्पयेत् ॥

अस्यार्थः ।

श्मशानास्थ्यादिकं पञ्चगव्येन संप्रोक्ष्य, भूर्जप-

त्रादौ तत्र व्याघ्रचर्मादि पीठमास्तीर्य, तत्र वीरासनक्रमेणोपविश्य, वीरार्दनेन मन्त्रेण चतुर्दिक्षु रक्षां कुर्यात् ॥

वीरार्दनमन्त्रस्तु ।

हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ कालिके घोरदंष्ट्रे प्रचण्डेचण्डे
नायिके दानवान्दारय हन हन शवशरीरे महाविघ्नं
छेदय छेदय स्वाहा हूँ फडिति ॥
अनेन मंन्त्रित लोष्टं दश दिक्षु विनिक्षिपेत् ।
तन्मध्ये भैरवो देवो न विघ्नैः परिभूयते ॥

नीलतन्त्रे ।

कूर्चद्वयं ततो देविमायायुग्मं ततः परम् ।
कालिके घोरदंष्ट्रे च प्रचण्डे चंडनायिके ॥
दानवान्दारयेत्युक्त्वा हनेति द्वितयं पुनः ॥
शवशरीरे महाविघ्नं छेदयद्वितयं पुनः ॥
द्विठान्तो वर्म चास्त्रान्तो वीरार्दनमनुर्मतः ॥

इस विषयका वीरतंत्रमें जो प्रमाण लिखा है वह सब वचन यहां मूलमें दिखाई देंगे। पूर्व दिशामें श्मशानाधिपति, दक्षिण-दिशामें भैरव, पश्चिमदिशामें कालभैरव और उत्तरदिशामें महा कालभैरवकी पूजा करके बलि देनी चाहिये। बलिका मन्त्र और मन्त्रोद्धारका प्रमाण मूलमें स्पष्टरूपसे लिखा है देखनेसे

समझमें आ जायगा। मूललिखित मन्त्रसे पूर्वादिके क्रमानुसार श्मशानाधिपति इत्यादि भैरवगणकी पूजा और बलि देकर चितामें शेष तीन बलि निवेदन करे। यथा (ॐ कालरात्रि महा-कालि) इत्यादि मन्त्रसे कलिका देवीको शेष तीन बलिमेंसे एक बलिका पदार्थ निवेदन करके (ॐ हूँ भूतनाथ श्मशानाधिप इमं सामिषान्नबलिं) इत्यादि मंत्रसे अपर बलि निवेदन करनी चाहिये। फिर (ॐ हूँ सर्वगणनाथ श्मशानाधिप इमं सामिषान्न-बलिं) इत्यादि मन्त्रसे तीसरी बलि देनी चाहिये। इस प्रकार बलि देकर पंचगव्य और जल द्वारा श्मशानकी अस्थि इत्यादि प्रोक्षण करके तदुपरि पीतवस्त्र विन्यास पूर्वक वडके पत्ते अथवा भोजपत्रपर पीठमंत्र लिखकर पीले वस्त्रपर रक्खे। उसपर व्याघ्र चर्मादिका आसन बिछाय वीरासन से बैठ करके वीरार्दन मन्त्रके द्वारा अपनी चारों दिशाकी रक्षा करे। (हूँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ कालिके) इत्यादि मूल लिखित वीरार्दन मन्त्रसे पूर्वादि दशों दिशाओंमें लोहा बखेरे। इस भाँति दशों दिशाकी रक्षा करके वहां बैठकर साधन करनेपर कोई विघ्न बाधा नहीं हो सकती। वीरार्दन मन्त्रोद्धारक जो सब प्रमाण नीलतन्त्रमें लिखे हैं, वे सब वचन यहां मूलमें उद्धृत किये गये हैं।

यदिप्रमादाद्देवेशि साधको भयविह्वलः।
ततस्तैस्तैः सुहृद्गैं रक्षितो नाभिभूयते॥

हे देवेशि! साधन करनेके समय यदि साधक किसी प्रकार भयसे कातर हो जाय, तो तत्काल पूर्वकथित सुहृद्गण उसका

भय निवारण करें। सुहृद्गण सदा ऐसी सावधानीसे रहें कि जिससे किसी प्रकार साधक भयविह्वल न हो।

सितार्ककर्पूरसितवाटचालतूलैर्वर्तिकां निर्माय तत्र प्रदीपं संस्थाप्य देव्यस्त्रेभ्यो नमः इत्यस्त्रं संपूज्य अधस्तात् ज्वलत्प्रदीपं निखनेत॥
हते तस्मिन्महादीपे विघ्नैश्च परिभूयते।
तत्पश्चादस्त्रमन्त्रेण निखनेत्कुलदीपकम्॥

फिर कर्पूरमिश्रित सफेद आक सफेद वाटचालक (सफेद खरेंटी) की रुईसे बत्ती बनाकर दीपक जलायकर उस स्थानमें रक्खे (ॐ देव्यस्त्रेभ्यो नमः) इस मन्त्रसे अस्त्र पूजा करके साधक अपने निचले भागमें यह जलता हुआ दीपक गड्ढा खोदकर रक्खे। इस विषयके जो सब प्रमाण तन्त्रमें लिखे हैं, वे सब वचन मूलमें उद्धृत हुए हैं। इस दीपकके बुझ जानेसे साधकको महाभय उपस्थित होता है।

ततस्तत्कल्पोक्तभूतशुद्ध्यादिन्यासजालं विधाय इष्टदेवतां संपूज्य संकल्प्य मन्त्रं जपेत्। संकल्पस्तु। अद्येत्यादि अमुकगोत्रः श्रीअमुकदेवशर्मा अमुकमन्त्रस्यामुकसंख्यजपमहं करिष्ये। इति सङ्कल्प्य देवताध्यानपुरःसरं मन्त्रं जपेत्।

तथा च।

तत्तत्कल्पविधानेन भूतशुद्ध्यादिकं चरेत्।

षोढ़ा वा तारकं वापि विन्यस्य पूजयेत्ततः ।
मन्त्रध्यानपरो भूत्वा जपेन्मन्त्रमनन्यधीः ॥

फिर स्वीय कल्पोक्त विधानसे भूतशुद्धि और न्यासादिक करके इष्ट देवताकी पूजा पूर्वक संकल्प करके जप आरंभ करे। संकल्प वाक्य मूलमें लिखा है वहां देखकर समझ लेना चाहिये। संकल्पके पीछे अपने हृदयमें देवताका ध्यान करके मन्त्र जपना उचित है। इसका प्रमाण अन्यान्य तन्त्रोंमें लिखा है।

जपनियमस्तु ।

एकाक्षरी यदि भवेद्दिक्सहस्र ततो जपेत् ।
द्व्यक्षरेऽष्टसहस्रं स्यात्त्र्यक्षरे चायुतार्द्धकम् ॥
अतः परन्तु मन्त्रज्ञो गजान्तकसहस्रकम् ।
निशायां वा समारभ्य उदयान्तं समाचरेत् ॥
गजान्तकमिति अष्टोत्तरसहस्रमित्यर्थः ॥

जपका नियम यह है कि, एकाक्षर मन्त्र दश हजार जपना चाहिये। द्व्यक्षर मन्त्र आठ हजार और त्र्यक्षर मन्त्र पांच हजार वार जपना चाहिये। चतुरक्षरादि मन्त्र अष्टोत्तर सहस्र जपना उचित है।

यद्यसह्यभयं कर्णौ नेत्रे वस्त्रेण बन्धयेत् ।
ततोऽर्द्धरात्रपर्यन्तं यदि किञ्चिन्न लक्ष्यते ॥
जयदुर्गाख्यमनुना तेनैव सर्षपान्क्षिपेत् ॥

जयदुर्गामन्त्रस्तु ।

ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा ।
ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवस्तृप्तिकारकः ।
पितृणां स्वर्गदाता त्वं मर्त्यानां मम रक्षकः ॥
भूतप्रेतपिशाचानां विघ्नेषु शान्तिगारकः ॥
इति पठित्वा ईशानादिचतुर्दिक्षु तिलांश्च निःक्षिपेत्
ततः सप्तपदं गत्वा तत्रैव संविशेत् । पुनर्देवतां
संपूज्य जपेत् ॥

रात्रिकालसे आरंभ करके सूर्योदयतक जप करना चाहिये। यदि साधक असह्य भयसे बहुतही घबरा जाय तो वस्त्रसे साधकके कान और नेत्र बाँध देवे। जिससे न वो कुछ देख सके और न सुन सके। यदि आधी राततक करनेपर भी कुछ दिखाई न दे, तो (ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा) इस जयदुर्गा मन्त्रसे ईशानादि चारों कोनमें सरसों और (तिलोऽसि) इत्यादि मन्त्रसे तिल बखेरने चाहिये। फिर पहले बैठनेके स्थानसे सात पैर चलकर उसी स्थानमें बैठ जाय और पुनर्वार देवताकी पूजा करके जप करनेमें प्रवृत्त होवे।

ततो यदि वरं वरयेति वदेत् तदा सत्यं कारयेत् ॥

तथा च ।

वरं वरय चेत्युक्ते साधकः स्थिरमानसः ।
सत्यन्तु कारयित्वा च वरयेद्वरमुत्तमम् ॥

यदि जप करते करते कोई आकर (वर ग्रहण करो) यह बात कहे तब देवताको प्रतिज्ञाबद्ध करके अभिलाषित वर माँगे।

जपादौ तु बलिं दत्त्वा पश्चादपि बलिं हरेत् ।
जपान्ते जपमध्ये वा देहि देहीति भाषिते ॥
तदापि च बलिं दद्यान्महिषं वापि छागलम् ॥
बालञ्च यवपिष्टमयेन ॥

जपके प्रारंभमें जपके मध्यमें और जपके अन्तमें बलि देनी चाहिये। जपके आदि मध्य वा अन्त समयमें देवी जिस काल बलिकी प्रार्थना करे तबही भैंसे अथवा बकरेकी बलि देवे। जौकी पिट्ठीका भैंसा वा बकरा बनाकर बलि देनी चाहिये।

यदा बलिं प्रार्थयते नरं कुञ्जरमेव वा ।
दिनान्तरेऽपि दास्यामि स्वीकृत्य स्वगृहं व्रजेत्॥

जब देवी नर अथवा हाथीके बलिकी प्रार्थना करें तो (दिनान्तरमें बलि दूंगा) इस प्रकार प्रतिज्ञा करके अपने स्थानको चला जाय।

अपरेऽह्नि ततो दद्यात्पिष्टेन नरकुञ्जरान् ॥
पिष्टेनेति यवधान्योद्भवेनेत्यर्थः ॥

दूसरे दिन यवकी पिट्ठी अथवा धानकी पिट्ठीका नर और हाथी बनावे और उसको खड्गद्वारा पूर्वोक्त मन्त्रसे छेदन करे।

तथा।

यवक्षोदमयं वापि शालिक्षोदमयन्तथा।

चन्द्रहासेन विधिवत्तत्तन्मन्त्रेण घातयेत् ॥
जपान्ते तु बलिं दद्याद्देवतायै यथाविधि ।
महिषं छागलं वापि गृहीत्वा वरमेव च ॥
गृहं गच्छेत्स्वसुहृदा सार्द्धं संहृष्टमानसः ॥
ततो दक्षिणां दद्यात् ॥
समाप्य साधनं देवि दक्षिणां विभवावधि ।
गुरवे गुरुपुत्राय तत्पत्न्यै वा निवेदयेत् ॥

तन्त्रान्तरमें जो सब प्रमाण लिखे हैं, वे सब प्रमाण इस स्थानमें उद्धृत हैं। योगिनीहृदयमें लिखा है कि, जपके पीछे उक्त प्रकारसे भैंसे अथवा बकरेकी बलि देकर वर ग्रहण करे और फिर सुहृदजनोंके सहित प्रसन्न चित्तसे अपने घर जाकर अपनी शक्तिके अनुसार गुरु गुरुपुत्र अथवा गुरुकी भार्याको दक्षिणा देनी चाहिये।

इति वीरसाधनम् ।

अथ पुरश्चरणम् ।

कुजे वा शनिवारे वा नरमुण्डं समाहृतम् ।
पञ्चगव्येन मिलितं चन्दनाद्यैर्विशेषतः ॥
निक्षिप्य भूमौ हस्तार्द्धमानतः कानने वने ।
तत्र तद्दिवसे रात्रौ सहस्रं यदि मानतः ॥
एकाकी प्रजपेन्मन्त्री स भवेत्कल्पपादपः ।

मङ्गल अथवा शनिवारके दिन एक नरमुण्ड लाकर उसको पञ्चगव्यसे सिक्त और चन्दन चर्चित करके वनमें अर्द्धहस्त परिमित भूमिके नीचे डाल देवे। इस दिन रात्रिके समय इस स्थानमें अकेला बैठकर एक हजार मन्त्र जपनेसेही पुरश्चरण होता है। इस प्रकार पुरश्चरण करनेसे साधक कल्पवृक्ष स्वरूप होता है।

अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते।
शवमानीय तद्द्वारे तेनैव परिखन्यते॥
तद्दिनात्तद्दिनं यावत्तावदष्टोत्तरं शतम्।
स भवत्सर्वसिद्धीशो नात्र कार्या विचारणा॥

अब अन्य प्रकारसे पुरश्चरणकी रीति कही जाती है। एक शव लाकर पूर्वोक्त प्रणाली (रीति) से दरवाजेमें गाडकर उसपर बैठकर जप करे। जिस दिन प्रथम जप आरंभ करे, उस दिनसे फिर उस दिनतक प्रतिदिन एक सौ आठ बार जप करे। इस प्रकार आठ दिनतक जप करनेसे पुरश्चरण होता है। इस प्रकार पुरश्चरण करनेसे साधक सर्वसिद्धीश्वर होता है।

अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते।
अष्टम्याञ्चचतुर्दश्यां पक्षयोरुभयो पि॥
सूर्योदयं समारभ्ययावत्सूर्योदयान्तरम्।
तावज्जप्त्वा निरातङ्कः सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्॥

अब अन्य प्रकार पुरश्चरणकी रीति कही जाती है। शुक्ल

अथवा कृष्ण पक्षकी अष्टमी तिथिमें सूर्योदयसे आरंभ करके पुनः सूर्योदयतक जप करे। इस प्रकार जप करनेसे एक पुरश्चरण होता है। इस पुरश्चरणके बलमे साधक अणिमादिक अष्टसिद्धियोंका अधीश्वर हो सकता है।

अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते।
शरत्काले चतुर्थ्यादिनवम्यन्तं विशेषतः॥
भक्तितः पूजयित्वा तु रात्रौ तावत्सहस्रकम्।
जपेदेकाकी विजने केवलं तिमिरालये॥
अष्टम्यादिनवम्यान्तमुपवासपरो भवेत्॥

अन्य प्रकारसे पुरश्चरणकी रीति—यथा। शरत्कालमें चतुर्थी तिथिसे नवमीतक प्रतिदिन रात्रिमें भक्तिपूर्वक देवीकी पूजा करके एक हजार मन्त्र जपना चाहिये। सूने और अँधेरे घरमें अकेला बैठकर जप करे अष्टमीसे नवमीतक उपवासी रहकर जप करना चाहिये।

कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत्कृष्णाष्टमी भवेत्।
सहस्रसंख्यजप्येन पुरश्चरणमिष्यते॥

अन्य प्रकार पुरश्चरणकी रीति। यथा कृष्णाष्टमीसे आरंभ करके पुनर्वार कृष्णाष्टमीतक नित्य एक हजार मन्त्रका जप करे। इस प्रकार एक मास जप करनेपर पुरश्चरण होता है।

कृष्णां चतुर्दशीं प्राप्य नवम्यन्तं महोत्सवे।
अष्टमीनवमीरात्रौ पूजां कुर्याद्विशेषतः॥

दशम्यां पारणं कुर्यान्मत्स्यमांसादिभिर्युतम् ।
षट्सहस्रं जपेन्नित्यं भक्तिभावपरायणः ॥

हे देवि ! पक्षकी पूर्व कृष्ण चतुर्दशीसे महानवमीतक प्रतिदिन मन्त्र जपना चाहिये। एवं महाअष्टमी और महानवमीकी रात्रिमें उपवासी रहकर विशेष प्रकारसे देवीकी पूजा करके दशमीके दिन मत्स्यमांसादि द्वारा पारण करे। इस पुरश्चरणके समय भक्तिपूर्वक छे हजार मन्त्र जपना चाहिये।

चतुर्दशीं समारभ्य यावदन्या चतुर्दशी ।
तावज्जप्त्वा महेशानि पुरश्चरणमिष्यते ॥
केवलं जपमात्रेण मन्त्राः सिद्धा भवन्ति हि ॥

चतुर्दशीसे पुनर्वार चतुर्दशीतक प्रतिदिन एक हजार मन्त्र जपना चाहिये। तब पुरश्चरण होता है। इस प्रकार केवल जप मात्र करनेसेही मन्त्रकी सिद्धि होती है होमादि करनेकी आवश्यकता नहीं होती।

सूर्योदयं समारभ्य यावत्सूर्याऽस्तगो भवेत् ।
तावज्जप्त्वा महेशानि पुरश्चरणमिष्यते ॥

हे महेश्वरि ! सूर्योदयसे सूर्यास्ततक लगातार जप करनेसे भी पुरश्चरण होता है।

इति पुरश्चरणम् ।

अथाष्टनायिकासाधनम् ।

जयासाधनम् ।

मन्त्रः । ॐ ह्रीं ह्रीं नमो नमः जये हुँ फट् ।

एक अमावस्यासे दूसरी अमावस्यातक नित्य यह मन्त्र पांच हजार जपना चाहिये । प्रान्तरमें वा अन्य सूने शिवमन्दिरमें बैठकर जप करे । इस प्रकार जप समाप्त होनेपर आधी रातके समय जयानाम्नी नायिका साधकके निकट आकर उसको अभिलषित वर देती है ।

विजयासाधनम् ।

मन्त्रः । ॐ हिलि हिलि कुटी कुटी तुहु तुहु मे वशमानय अः अः स्वाहा । त्रिलक्षजपेन सिद्धिः। नदीतीरस्थश्मशानवृक्षे स्थित्वा रात्रौ प्रजपेत् ॥

नदीतीरस्थ श्मशानमें जो कोई वृक्ष हो, उस वृक्षपर चढकर रात्रिकालमें उपरोक्त मन्त्र जपना चाहिये । तीन लाख जपसे सिद्धि होती है। प्रतिदिन जप करके जिस दिन तीन लाख जप पूर्ण हो उसी दिन विजया नाम्नी नायिका प्रसन्न होकर साधकके वशीभूत होती है ।

रतिप्रियासाधनम् ।

मन्त्रः। हुँ रतिप्रिये साधय साधय जल जल धीर धीर आज्ञापय स्वाहा । षण्मासात्सिद्धिः । रात्रौ नग्ना भूत्वा हविष्याशी नाभिजले स्थित्वा जपेत्॥

रात्रिकालम नंगा होकर नाभिके बराबर जलमें खडा होकर इस मन्त्रको जपना चाहिये। छः मासतक हविष्याशी होकर समस्त रात्रि जप करता रहे। इस प्रकार करनेपर रतिप्रिया नाम्नी नायिका वशीभूत होती है।

काञ्चनकुण्डलीसिद्धिः।

मन्त्रः ॐ लोलजिह्वे अट्टाट्टहासिनि सुमुखिः काञ्चनकुण्डलिनी खे छ च क्षें हुँ। सवत्सरेण सिद्धिः। ग मयपुत्तलिकां कृत्वा पाद्यादिभिःपूजयेत्। त्रिपथस्थवटमूले प्रजपेत्॥

गोबरकी पुतली बनाकर एक वर्षतक पाद्यादि द्वारा कांचनकुण्डलिनी नाम्नी नायिकाकी पूजा और ऊपर लिखित मन्त्र जप करनेसे सिद्धि होती है। तिराहेके बडकी जडमें रातके समय गुप्त भावसे जप करना चाहिये।

स्वर्णमालासिद्धि।

मन्त्रः। ॐ जय जय सर्वदेवासुरपूजिते स्वर्णमाले हुँ हुँ ठः ठः स्वाहा। ग्रीष्मे मरौ पञ्चाग्निमध्ये स्थित्वा जपेत् त्रिमासात्सिद्धिः॥

ग्रीष्मकालमें चैत, वैशाख, ज्येष्ठ इन तीन मास मरुभूमिमें पञ्चाग्निमें अर्थात् चारों ओर चार अग्निकुण्ड और मस्तकपर सूर्यको रखकर इस मन्त्रके जपनेसे स्वर्णमाला सिद्ध होती है।

जयावतीसिद्धिः

मंत्र। ॐ ह्रीँ क्लीँ ह्राँ हुँ द्रुँ ब्लुँ जयावति यमनिकृन्तनि क्लोँ क्लीँ ठः आषाढादित्रिमासान्विरलकाननस्थसरसि स्थित्वा रात्रौ जपेत्॥

निर्जनवनमध्यस्थ सरोवरके जलमें रात्रिके समय खडा होकर आषाढ, श्रावण, भाद्र इन तीन महीने यह मन्त्र जपनेसे जयावती सिद्ध होती हैं।

सुरङ्गिणीसिद्धिः।

मन्त्रः। ॐ ॐ ॐ हुँ हुँ हुँ शीघ्रं सिद्धिं प्रयच्छ सुरसुरङ्गिणि महामाये साधकप्रिये ह्रीँ ह्रीँ स्वाहा षड्वर्षेण सिद्धिः। प्रत्यहं रात्रौ शय्यामुपविश्य सहस्रं जपेत् ॥

प्रतिदिन रात्रिकालमें शय्यापर बैठकर यह मन्त्र एक हजार जपनेसे छः वर्षमें सिद्धि होती है।

विद्राविणीसिद्धिः।

मन्त्रः। हँ यँ वँ लँ वँ देवि रुद्रप्रिये विद्राविणि ज्वल ज्वल साधय साधय कुलेश्वरि स्वाहा। रणमृतास्थीनि गले धृत्वा प्रान्तरे जपेत्। द्वादशलक्षजपेन सिद्धिः ॥

जो मनुष्य युद्धमें मर गया है, उसकी हड्डी गलेमें धारणपूर्वक

प्रान्तरमें रात्रिके समय बैठकर जप करना चाहिये। जिस दिन बारह लक्ष जप पूर्ण हो, उसी दिन सिद्धि प्राप्त होती है।

डाकिनीसिद्धिः।

डं डां डिं डीं द्रीं धूँ धूँ चालिनि मालिनि डाकिनि सर्वसिद्धिं प्रयच्छ हुँ फट् स्वाहा।

शाल्मलीतरौ स्थित्वा ऊर्द्धबाहुना रात्रौ जपेत्।
एवं षड्वर्षेण सिद्धिः॥

रात्रिके समय शाल्मली वृक्षपर चढकर ऊर्ध्वबाहु होकर मन्त्र जपना चाहिये। समस्त रात्रि मन्त्र जपे। छः वर्षपर्यन्त इस प्रकार करनेसे डाकिनीसिद्धि होती है। डाकिनी सिद्ध होनेपर अद्भुत सामर्थ्य उत्पन्न होती है।

भूतसिद्धिप्रेतसिद्धिः।

मन्त्रः। ॐ ह्रौँ क्रौँ क्रौँ क्रुँ फट् फट् क्रट् क्रट् ह्रीं ह्रीं भूत प्रेत भूतिनि प्रेतिनि आगच्छ आगच्छ ह्राँ ह्रीँ ठः ठः।

इस मंत्रसे भूत भूतिनी प्रेत और प्रेतिनी सिद्धि होती है।

वटवृक्षतले रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम्।
धूपं च गुग्गुलुं दत्त्वा पुना रात्रौ जपेन्मनुम्॥
अर्द्धरात्रिगते चैव साध्यश्चागच्छति ध्रुवम्।
दद्याद्गन्धोदकेनार्घ्यं तुष्टो भवति तत्क्षणात्॥

वरं दत्त्वा ततः सोऽपि चिरवश्यो भवेत्सदा ॥

रात्रिकालमें निर्जन वटवृक्षके नीचे बैठकर यह मंत्र आठ हजार जपना चाहिये। दूसरे दिन धूप और गूगलसे पूजा करके फिर रात्रिमें जप करे। आधी रात बीतनेपर भूत, प्रेत, भूतिनी वा प्रेतिनी उपस्थित होगी तब साधक गंध और अर्घ्य द्वारा उनकी पूजा करे ऐसा होनेसे भूतिनी साधकको वर प्रदान करती है और सदा साधकके वशमें रहती है।

पिशाचपिशाचीसिद्धिः।

मन्त्रः। ॐ प्रथ प्रथ फट् फट् हुँ हुँ तर्ज तर्ज विजय विजय जय जय प्रति हत कटु कटु विस्तुर विस्तुर स्फुर स्फुर पिशाचसाधकस्य मे वशं आनय आनय पच पच चल चल स्वाहा।

मन्त्रः। ॐ फट् फट् हुँ हुँ अः भोः भो पिशाचि भिन्द भिन्द छिन्द छिन्द दह दह दह पच पच मर्दय मर्दय पेषय पेषय धून धून महासुरपूजिते हुँ हूँ स्वाहा। दशलक्षजपेन सिद्धिः। रात्रौ उच्छिष्टमुखेन श्मशाने जपेत्।

प्रथम मन्त्रसे पशाच और दूसरे मन्त्रसे पिशाचीकी साधना करनी चाहिये। रात्रिके समय उच्छिष्ट मुखसे श्मशानमें बैठकर जप करे। दश लाख जपनेसे सिद्धि होती है। जपके

समय यदि कोई दूसरा मनुष्य देखले अथवा यदि साधक किसीको देखे तो जप निष्फल हो जाता है।

मृत्युकालज्ञानम्।

द्वादशदलचक्रस्थं मृत्युकालंच वीक्षितम्।
चैत्रादिमाससंख्यानि लिख्यते द्वादशे दले॥
मेषादिराशयः स्थाप्याः सूर्यादिर्लिख्यते ग्रहः।
जन्मऋक्षं जन्मराशि वीक्ष्यते मृत्युकालके॥
शनिभौमकेतुराहुराशिविद्धे तु कष्टदा।
ऋक्षविद्धं राशिविद्धे कालमृत्युर्न संशयः॥
सूर्यवधे मनस्तापं बुधे सौख्यं प्रवर्त्तते।
यात्रायां तार्थजीवे च चन्द्रे स्त्रीसुखसम्पदः॥
भृगुवेधे राज्यलाभं मासे मासे विचारयेत्।
वर्षे द्वादशनामानि मृत्युकाले वदान्त च॥

एक द्वादशदलचक्र अंकित करके मृत्युकाल देखे। इस चक्रके बारह दलमें बारह राशि और चैत इत्यादि बारह महीने एवं सूर्यादि ग्रह लिख। फिर जन्मनक्षत्र और जन्मकी राशिका वेध विचारकर मृत्युकालादिको स्थिर करें। शनि, मंगल, राहु वा केतुके साथ यदि जन्मकी राशिका वेध हो तो मनुष्यको कष्ट होता है। राशिवेध और नक्षत्रवेध होनेसे निश्चय मृत्यु होती है। सूर्यके साथ उक्त शनि इत्यादिका वेध होनेपर मनस्ताप

बुधके साथ वेध होनेसे सुख, चन्द्रके साथ होनेसे सुख-सम्पत्ति और शुक्रके साथ वेध होनेसे राज्य मिलता है।

आत्मरक्षा।

मन्त्रः। ॐ आँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ ह्रूँ ह्रूँ हुँ फट्। रक्ष रक्ष कालिके कुण्डलिके त्रिपुटे अस्त्र-शस्त्र-मार्जर-व्याघ्र-कुडरदंष्ट्रिभ्यो विशेभ्यो शत्रुभ्यो सर्वेभ्यो द्रीं ह्रूँ स्वाहा। आषण्मासाज्जपान्मन्त्र-सिद्धिः। प्रत्यहम् अयुतं जपे। ततः प्रतिदिनं त्रिसन्ध्यं वारत्रयं पठित्वा वक्षसि फूत्कारत्रयं दद्यात्

ऊपर लिखा मन्त्र प्रति दिन दश हजार जपना चाहिये। छै मास जपनेसेही मंत्रकी सिद्धि होती है। फिर नित्य तीनों संध्यामें तीन तीन वार छातीमें फूंक मारे। इस प्रकार करनेपर कुत्ते, व्याघ्र, बिल्ली, दंष्ट्री (दाढोंवाले जन्तु) श्वापद (हिंसक जन्तु) शत्रु और अस्त्र शस्त्र सबसे अपनी रक्षा होती है।

वृश्चिकदूरीकरणम्।

गृहीत्वा शुभनक्षत्रे अपामार्गस्य मूलकम्।
धारयेद्दक्षिणे कर्णे वृश्चिकानां भयं न हि॥

शुभनक्षत्रमें चिरचिरेकी जड लाकर दाहिने कानमें धारण करनेसे वृश्चिक (बीच्छू) का भय दूर होता है।

सर्पदूरीकरणम्।

गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे अमृतामूलकं हरेत्।

तन्मालां धारयेत्कण्ठे सर्पविषभयं न हि ॥

रविवारयुक्त पुष्यनक्षत्रमें अमृता (गिलोय) की जड लाकर उसकी माला गलेमें धारण करनेसे सर्पका भय दूर होता है। उसके घर वा निकट सर्प नहीं आता।

मक्षिकादूरीकरणम्।

तक्रपिष्टेन तालेन क्षिपेत्पुत्तलिकांकृताम्।
तामाघ्राय गृहाद्यान्ति मक्षिका नात्र संशयः ॥

मट्ठेके साथ हरताल पीसकर उसके द्वारा एक मक्खीकी पुतली बनावे। यह पुतली घरमें डालनेसे उस पुतलीके सूंघनेपर घरसे मक्षिका (मक्खी) दूर होती हैं।

मूषकदूरीकरणम्।

धुस्तूरबीजचूर्णञ्च विषञ्च पेषितं तिलम्।
तैरेवविषपाषाणां मीनतैलेन पेषितम् ॥
वटिका स्थापयेद्गेहे जलं रात्रौ निरुद्धयेत् ॥
भक्षणात्पञ्चतां यान्ति तृष्णार्त्ता मूषिका ध्रुवम् ॥

धतूरेके बीजोंका चूर्ण, विष, तिल, विषपाषाण और मछलीका तेल यह सब पदार्थ एकत्र पीसकर गोलियां बना लेवे। यह गोली घरमें रखकर घरके सब जलपात्र (बरतन) ढककर रक्खे। इस गोलीको खाकर चूहे मर जाते हैं, इसमें सन्देह नहीं।

मशकदूरीकरणम्।

गुडश्रीवासभल्लातविडङ्गत्रिफलायुतम्।

लाक्षारसोऽर्कपत्रञ्च धूपे मशकमत्कुणान् ॥
नाशयेन्नात्र सन्देहः सर्पमूषिकवृश्चिकान् ॥

गुड, श्रीवास (बिरोजा), भिलावा, वायविडंग, त्रिफला, लाक्षा आकके पत्ते वह सब पदार्थ एकत्र कर धूप देनेसे मच्छर मत्कुण (खटमल), सर्प, मूसे और बीछू इत्यादि दूर होते हैं।

भूतावेशनिवारणं बालग्रहदूरीकरणं च।

शिरीषपत्रपुष्पञ्च रविवारे समुद्धरेत्।
घूकविष्ठां गृहीत्वा तु उष्ट्ररोम्णा तु संयुताम् ॥
शुनो विष्ठासमायुक्तं मार्जारस्यैव संयुतम्।
गोमयञ्चैव संयुक्तं गन्धकं संयुतः ततः ॥
श्वेतगुञ्जासमायुक्तं कटुतैलेन पाचयेत्।
धूप दत्त्वा जपेन्मंत्रं भूतबाधा विनश्यति ॥
बालग्रहा राक्षसाश्च बालानाञ्च दुर्वायवः।
प्रेतिनी योगिनी चैव धूप दृष्ट्वा पलायते ॥
मंत्रस्तु। ॐ नमः श्मशानवासिने भूतादिपलायनं कुरु कुरु स्वाहा। लक्षजपात्सिद्धिः।

रविवारके दिन सिरसके वृक्षके पत्ते और पुष्प संग्रह करके उसके साथ उल्लूका मल, ऊँटके रोम, कुत्तेकी विष्ठा, बिल्लीकी विष्ठा, गोबर, गन्धक और सफेद चौंटली मिलाकर इनके सहित तैल पाक करे। तैल पकानेके समय उपरोक्त (ॐ नमः) इत्यादि

मन्त्र लगातार पढना चाहिये। इस तेलकी धूप देवे। जब धूप देवे तब वह धूप उक्त मन्त्रसे एक सौ आठ वार अभिमन्त्रित कर लेनी चाहिये। धूप प्रदान करनेके पीछे भी उक्त मन्त्र एक सौ आठ वार जपना चाहिये। इस प्रकार करनेसे भूतावेश, बालग्रह एवं राक्षस, भूतिनी, डाकिनी, प्रेतिनी, वेताल, योगिनी और वालकको हवा लगना इत्यादि सब विघ्न दूर होते हैं। मन्त्र सर्व प्रथम एक लाख जपकर सिद्ध कर लेवे।

सुखप्रसवमन्त्र।

ॐ मन्मथ मन्मथ वाहि वाहि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा।

ॐ मुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताःसूर्येण रश्मयः। मुक्तः सर्वभयाद्गर्भ एह्येहि मारचि मारचि स्वाहा एतदन्यतरेणाष्टवारं जलमभिमन्त्र्य पेयम्।

"ॐ मन्मथ" इत्यादि और "ॐ मुक्ता" इत्यादि इन दो मंत्रोंमें जिस किसी एक मंत्रके द्वारा आठ वार जल अभिमंत्रित करके पीनेसे गर्भवती स्त्री तत्काल सुखपूर्वक प्रसव करती है।

अदृश्य होना।

अर्कशाल्मलिकार्पासपट्टपङ्कजतन्तुभिः।
पञ्चाभिर्वर्त्तिकाभिश्च नृकपालेसु पञ्चसु॥
नरतैलेन दीपाःस्युःकज्जलं नृकपालके।
ग्राहयेत्पञ्चभिर्यत्नात्पूर्ववच्च शिवालये॥

पञ्चस्थानीयनातन्तु एकीकुर्याच्च तं पुनः ।
मन्त्रयित्वाञ्जयेन्नेत्रे देवैरपि न दृश्यते ।
मन्त्रस्तु । ॐ हुँ फट् कालि कालि मांसशोणितं खादय खादय देवि मा पश्यतु मानुषेति हुँ फट् । स्वाहेति मन्त्रेणाष्टोत्तरसहस्राभिमन्त्रितं कृत्वा तत्कज्जलं नेत्रे दत्त्वा त्रैलोक्यादृश्यो भवति ॥

आक, शाल्मली (सेमल), कपास, पट्ट (रेशम) और पट्टसूत्रकी बत्ती द्वारा पांच मनुष्यकी खोपडीमें मनुष्यतैलके द्वारा पांच दीपक बालकर उन पांच दीपकोंकी लौ पर पांच प्रकारका काजल पारे। किसी शिवालयमें यह कार्य करना चाहिये । फिर यह पांच प्रकारका काजल एकत्र और (ॐ हूँ फट् कालि) इत्यादि मन्त्रसे अष्टोत्तर सहस्र बार अभिमन्त्रित करक वह काजल नेत्रोंमें आँजे। ऐसा करनेपर वह मनुष्य देवताओंसे भी अदृश्य हो सकता है ।

जलोपरि भ्रमणम् ।

ॐ रमाय रामाय महेशाय महेशिन्यै इन्द्राय इन्द्राण्यै ब्रह्मणे ब्रह्माण्यै नमो नमः रुद्राय रुद्राण्यै तोयं स्तम्भय वरुणं स्तंभय शोषय गच्छ गच्छ पादुकां देहि देहि स्वाहा ॥

प्रथम कृष्णपक्षकी अष्टमी तिथिमें रात्रिके समय नदीतीरस्थ श्मशानभूमिमें जाकर षोडशोपचारसे नारायण, लक्ष्मी, शिव,

दुर्गा, इंद्र, शची, ब्रह्मा, ब्रह्माणि, रुद्र, रुद्राणि इन सब देवताओंकी पूजा करके उपरोक्त मन्त्र एक हजार आठ बार जप करे एक वर्षतक प्रति कृष्णाष्टमी तिथिमें इस प्रकार अनुष्ठान करनेपर मन्त्रकी सिद्धि होती है। फिर जब इच्छा हो तभी यह मंत्र एक सौ आठ बार जपकर सहजमेंही जलके ऊपर भ्रमण कर सकता है और कभी जलमें नहीं डूबता।

मनस्कामसिद्धि।

स्फें स्फें दूँ दूँ दूँ ह्रीं क्लीं हूँ हुँ साँ सीं सूँ सैं सौं सः छाँ छीं छूँ छैं छः ह्रीं फट् स्वाहा।

संकल्पपूर्वक नित्य एक सौ आठ बार एक वर्षतक यह मन्त्र जपनेसे मनस्कामनाकी सिद्धि [1]होती है।

परिशिष्टम्।

वशीकरणम्।

कृतांजलिः शिखिशिखाबिभीतागिरिकर्णिका।
चाण्डालीसहिताः पिष्ट्वा पट्टे क्षीरपरिप्लुता॥
तेन संलिप्य पङ्केन पट्टवस्त्रस्य वर्तिकाम्।
कारयित्वाब्जसूत्रेण पूर्णगर्भा सुवेष्टिताम्॥
एकवर्णागवीदुग्धकृताज्यदीपपूरितम्।
कज्जलं ऋजुके कार्यं कज्जलं नरसंकुले॥
सम्पूज्य भैरवं देवं चतुर्दश्यां निशागमे।

---

१ विविध मन्त्रप्रकरणमें जो जो विषय लिखे गये हैं उन सब क्रियाओंका अनुष्ठान करनेके प्रथमही यह मन्त्र सिद्ध कर लेना चाहिये।

कज्जलं पातितं ग्राह्यं तेन वश्यं जगद्भवेत् ॥
नरंच वनितांचैव यमिच्छति नरोत्तमम् ।
अतः परतरं वश्यं न भूतं न भविष्यति ॥
भाषितं भैरवे तन्त्रे गोपनीयं प्रयत्नतः ।
क्रूरे च चुम्बके दुष्टे निन्दके चपलेष्वपि ॥
अस्य वश्यप्रभावं हि वर्णितुं न च शक्यते ।
देवदेवेन देवेभ्यो वशीकरणमुत्तमम् ॥
एतद्योगप्रभावेण ब्रह्माद्या मुनयः सुराः ॥

अब वशीकरणकी पद्धति कही जाती है। इस क्रियाके जान लतेही नर और नारी दोनोंको वशीभूत किया जा सकता है। लज्जालुलता (छुईमुई), अपामार्गकी जटा (चिरचिरेकी जटा), बहेडा, अपराजिता (विष्णुक्रान्ता) और चाण्डाली (लताविशेष) इन सबको एकत्र दूधके साथ पीसकर कर्दमवत् करे फिर इस कर्दम (कीच) द्वारा एक पट्टवस्त्रपर लेपकर उसकी बत्ती बनावे। फिर उसको पद्मनालके मध्यगत सूत्रद्वारा वेष्टन कर रक्खे। फिर एकवर्ण गायके दूधका घृत करके उस घीमें पहिले करी हुई बत्ती गीली करे। फिर इस बत्तीको जलाकर उसकी लोअसे काजल पारे। चतुर्दशीकी रात्रिमें भैरवकी पूजा करके फिर काजल पारना चाहिये। इस काजलसे स्त्री, पुरुष ही नहीं, वरन् जिसकी अभिलाषा हो उसीको वशीभूत किया जा सकता है। ऐसी वशीकरणकी प्रणाली न कभी

आगे थी और न अब होगी। भैरवतन्त्रमें स्वयं महादेवजीने यह विधि कही है। इसको यत्न सहित गुप्त रक्खे। क्रूर, अल्पविद्या, निन्दक और चपल इन सब पुरुषोंके निकट यह वशीकरण प्रणाली वर्णन न करे। देवदेव श्रीमहादेवजीने देवताओंके निकट यह वशीकरण कहा है।

अन्यां वक्ष्ये महाविद्यां मोहिनीं वश्यकारिणीम्।
यस्याः प्रभावमात्रेण वशीकुर्याज्जनं नरः॥
तारं प्रथममुद्धृत्य मायाबीजमनन्तरम्।
मोहिनीपदमादाय शेषे पावकवल्लभाम्॥
ज्ञात्वा मन्त्रमिमं मन्त्री मन्त्रं पठति सिद्धिदम्।
अनेन मन्त्रराजेन संस्पृश्य जापितं यदा॥
दीयते च जलं पुष्पं दुकूलमुत्तमं फलम्॥
अष्टोत्तरशतं जप्त्वा पाणौ यस्य प्रदीयते॥
ते सर्वे वशमायान्ति नात्र कार्या विचारणा॥

अब अन्य प्रकार वशीकरण कहा जाता है। इस वशीकरणके प्रभावसे तीनों जगत् वशीभूत होते हैं (ॐ ह्रीं मोहिना स्वाहा) साधक यह मंत्र जपे। मन्त्रसिद्धि होनेपर जल पुष्प वस्त्र अथवा किसी भांतिका उत्तम फल उक्त मन्त्रमें एक सौ आठ बार अभिमंत्रित करके जिसके हाथमें दिया जाय, वह मनुष्य निःसन्देह वशीभूत होता है।

तारं चिटिद्वयं पश्चाच्चाण्डाली तदनन्तरम्।

महापादाभ्यां तां ब्रूयादमुकं मे ततः परम् ॥
वशमानय ठद्वन्द्वं चिटिमन्त्र उदाहृतः ।
सप्तभिर्दिवसैर्भूपान्वशयेद्विधिनाऽमुना ॥
विलिख्य तालपत्रे तं साध्यनामविगर्भितम् ।
निक्षिप्य क्षीरसंमिश्रे जले तत्क्वाथयेन्निशि ॥
वश्यो भवति साध्यस्तु नात्र कार्या विचारणा ॥

(ॐ चिटि चिटि चाण्डाली महाचाण्डाली अमुकं मे वश मानय स्वाहा) यह मन्त्र सात दिन जपनेसे राजाको वशीभूत कर सकता है और यह मन्त्र तालपत्रपर लिखकर इस तालपत्रको दुग्ध मिले जलमें डालकर पकावे। इस मन्त्रमें जिसका नाम लिखा रहा होगा वह मनुष्य निःसन्देह वशीभूत होगा। मतान्तरमें लिखा है कि, उक्त मन्त्र बेलके काँटेसे तालपत्रपर दूधमें लिखकर पकावे और तालपत्र तीन दिनतक कीचडमें रक्खे। तीन दिन पीछे यह तालपत्र निकालकर दुर्गोत्सवमण्डपके द्वारमें गाडकर रक्खे। इस प्रकार करनेसे निःसन्देह वशीकरण होता है।

तालपत्रे लिखित्वैनं भद्रकालीगृहे खनेत् ।
वश्याय सर्वजन्तूनां प्रयोगोऽयमुदाहृतः ॥

(ॐ चिटि चिटि) इत्यादि मन्त्र बेलके कांटेसे तालपत्रपर लिखे। फिर भद्रकालीकी पूजा करके उसी घरमें यह तालपत्र गाडकर रक्खे इससे सब प्राणियोंको वशीभूत कर सकता है।

मूर्ध्नि भाले कामकला पतन्ती बिन्दुधारणाव ।

योनिमुद्राप्रयोगेण करोति वशगं जगत् ॥

मस्तक और कपालमें कामकला मन्त्र जपकर बिंदुधारणपूर्वक योनिमुद्राप्रयोग करनेपर तीनों जगत्को वशमें कर सकता है।

रेफहुङ्कारयोर्मध्ये सर्वलोकं ततः परम् ॥
वशमानय ठद्वन्द्वं पूजां जपश्च साधकः ॥

(रं सर्वलोकवशमानय स्वाहा) इस मंत्रसे जप और उक्त मंत्रसे पूजा करनेपर अभिलषित व्यक्तिको वशीभूत कर सकता है।

राजमुखिपदाद्राजाभिमुखिवश्यपूर्वमुखि ।
ततश्च भुवनेशीश्रीकामान्देवि देवि च ॥
तदन्ते च महादेवि पदं पदमतः परम् ।
देवाधिदेवीति सर्वजनस्य मुखं वश्यं कुरु द्विठः ॥
प्रणवादिरयं मन्त्रः श्रीवश्यः संपदावहः ॥
ॐ राजमुखि राजाभिमुखि वश्यमुखि ह्रीं श्रीँ क्लीँ देवि देवि महादेवि देवाधिदेवि सर्वजनस्य मुखं वश्यं कुरु स्वाहा ।

मायाहृदोरथान्ते च ब्रह्मश्रीराजिते ततः ।
प्रोक्त्वा राजपूजितेऽर्णाञ्जये च विजयेऽपि च ॥
गौरि गान्धारि त्रिभुवनवशङ्करीति च। सर्वलो-

कान्ते वशङ्करि च सर्वस्त्रीपुरुषवशंकरि सुदुर्घोराक्षराणि वीप्सतः। माया द्विठान्तको मनुरेकाधिकषष्टिवर्णकः प्रोक्तः। मन्त्रो यथा। ह्रीँ नमो ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते जये विजये गौरि गान्धारि त्रिभुवनवशङ्करि पर्वलोकवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशंकरि सुदुर्घोर सुदुर्घोर ह्रीँ स्वाहा। अयुतं जपेत्। जुहुयाद् घृतसंप्लुतैः पायसैर्दशांशेन। आराधयेत्तदर्द्धैर्मातृभिर्दिशोऽधिपैर्निशितमनाः। तिलतण्डुलकैर्लोमैः स्वादुयुक्तैः फलैश्च मधुरतरैः। आज्यैररुणकुवलयैस्त्रिदिनं हवनं क्रियासु वशंकरीम्। नित्यमादित्यं गतां देवीं प्रतिपद्य तन्मुखो जप्यते। अष्टोत्तरशतकस्माद्वशीकरोत्यचिरात्। वर्णादर्वाङ् मन्त्री प्रयोजयेत्। साध्यनामकर्मयुतं प्रजपद्वा हवनविधौ वांछितसिद्धिप्रदस्तदा मन्त्राः ऋषिरस्याजो निवृट्छन्दो गौरी च देवता प्रोक्ता। स चतुर्दशभिस्ततो दशभिरष्टभिस्ततोऽष्टभिर्दशभिरेकादशभिर्मन्त्राक्षरैः क्रमादुच्यते षडङ्गविधिः।

ध्यानम् ।

अमलशशिविराजन्मौलिराबद्धपाशा-
ङ्कुशरुचिरकराब्जा बन्दुजीवारुणाङ्गी ।
अमरनिकरवन्द्या त्रीक्षणा शोणवर्णा ।
शुककुसुमयुता स्यात्सम्पदे पार्वती वः ॥

ॐ राजमुखि इत्यादि मुखं वश्यं कुरु कुरु स्वाहा वह मन्त्र एवं ह्रीं नमो ब्रह्मस्त्री राजिते इत्यादि सुदुर्घोर ह्लीं यह मन्त्र दश हजार जप करे। फिर घृतसंयुक्त खीरद्वारा जपका दशांश होम करना चाहिये । होमके अन्तमें अंगदेवता, अष्टमातृका और दश दिक्पालोंकी पूजा करके पुनर्वार स्वादयुक्त तिलत-ण्डुल, मीठे फल और घृतयुक्त लाल कमल द्वारा होम करे । इस प्रकार तीन दिन होम करके सूर्यमण्डलाधिष्ठात्री देवताकी आराधना पूर्वक सूर्यके सामने मुख करके एक सौ आठ बार जप करना चाहिये । ऐसा होनेसे बहुत शीघ्र वशीकरण सिद्ध होता है। मन्त्रमें अभिलाषित व्यक्तिका नाम लिखकर जप और होम करनेपर वांछितार्थसिद्धि होती है । इस मन्त्र के अज (ब्रह्मा) ऋषि, निवत्त छन्द और गौरी देवता है कराङ्गन्यास यह है— ह्लीं नमो ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते अंगुष्ठाभ्यां नमः । जये विजये गौरि गान्धारि तर्जनीभ्यां स्वाहा । त्रिभुवनशंकरि मध्यमाभ्यां वषट् सर्वलोकवशंकरि अनामिकाभ्यां हुँ सर्वस्त्री-पुरुषवशंकरि कनिष्ठाभ्यां वौषट् सुदुर्घोर सुदुर्घोर ह्लीं स्वाहा करतलपृष्ठाभ्यां फट् । इसी प्रकार हृदयादिमें न्यास करे । देवताका ध्यान मूलमें लिखा है वहां देखो ।

मदमदपदमादौ मादयेति द्विवारं ।
तदनु च पठनीयं ह्री पदं तत्र पश्चात् ॥
वशयपदयुता स्यान्नामरूपादिसंज्ञा ।
भवति मदनमन्त्रः स्वाहया संयुतोऽयम् ॥
कनकरचितमूर्त्तिः कुण्डलाकृष्टचापो ।
युवतिहृदयमध्ये निश्चलारोपिताक्षः ॥
इति मनसि मनोजं चिन्तयन्यो जपस्थो ।
वशयति स समस्तं भूतलं मन्त्रसिद्धः ॥
शतशतपरिजापात्स्यादयं सिद्धिदाता ।
दशशतकुसुमानां लोहितानां च दानात् ॥
इति तु सकलकार्यं वामहस्तेन कुर्या-
दुपदिशति समस्तं ज्योतिरीशः समन्तात् ॥
मद मद मादय ह्रीं वशय अमुकं स्वाहा ॥

मद मद मादय मादय ह्रीं वशय अमुकं स्वाहा । इसका नाम मदनमंत्र है मदनकी आकृती इस प्रकार है सुवर्णरचित शरीर कानोंतक खिचा हुआ धनुष और युवतीगणके हृदयमें निश्चल अक्षि अरोपित कर रहा है। जो पुरुष इस प्रकार मदनमूर्तिकी मनमें चिन्ता करके उक्त मदनमन्त्र दश हजार जपता है वह पुरुष मन्त्रसिद्धिके बलसे समस्त भूतलको वशीभूत कर सकता है। दश हजार जपकर दश हजार लाल पुष्प प्रदान करनेसे

मन्त्र सिद्ध होता है। इस क्रियाका सब कार्य बायें हाथसे करना चाहिये।

चामुण्डे प्रथमं जयेति कथितं सम्बोधने मोहये ज्ञातव्यं वशमानयेत्यपि पदं साध्यंद्वितीयान्वितम्। स्वाहान्तं प्रणवादिरेष कथितैस्तत्त्वैर्महामोहने यन्मन्त्रःकविरात्मसेवितपदो नास्माद्द्वितीयोत्तरी॥

ध्यानम्।

दंष्ट्राकोटिविशङ्कटा सुवदना सान्द्रान्धकारे स्थिता खट्वङ्गासिनिगूढदक्षिणकरा वामेन पाशं शिरः। श्यामा पिङ्गलमूर्धजाभयकरी शार्दूलचर्मावृता चामुण्डाशववाहिनी जपविधौ ध्येया सदा साधकैः॥ लक्षं जप्त्वा दशांशं शुकतरुकुसुमैर्वह्निमध्ये च होमः॥ विधिना सिद्धिं ददाति।

ॐ चामुण्डे जय चामुण्डे मोहय वशमानय अमुकं स्वाहा॥

ॐ चामुण्डे जय चामुण्डे मोहय वशमानय अमुकं स्वाहा। यह मन्त्र एक लाख जपकर सिरसके वृक्षकी समिधासे दश हजार होम करना चाहिये। देवताका ध्यान मूलमें लिखा है विधिपूर्वक देवताकी पूजा करके मन्त्र जपनेसे मन्त्रसिद्धि होती है। इस मन्त्रकी सिद्धि होनेपर वशीकरण होता है।

ॐ नमः कामाय सर्वजनप्रियाय सर्वजनसम्मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वालय प्रज्वालय सर्वजनस्य हृदयं मम वशं कुरु कुरु स्वाहा ।

एतन्मन्त्रजपादेव वशीभवति मानवः ।

ॐ नमः कामाय सर्वजनप्रियाय इत्यादि मन्त्र जपनेसे वशीकरण होता है ।

ॐ नमो भगवति सूचि चाण्डालिनि नमः स्वाहा। एतन्मन्त्रेण मधूच्छिष्टस्य पुत्तलिकां कृताञ्जलिं कृतयुग्मपादां अङ्गप्रत्यङ्गसहितां कृत्वा तत्र साध्यस्य प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा एतन्मन्त्रं जपन् अङ्गारेषु पुत्तलिकां प्रतापयेत् । ततः साध्यो वश्यो भवति ॥

(ॐ नमो भगवती सूचि चाण्डालिनि नमः स्वाहा) इस मन्त्रसे मधूच्छिष्ट (मोम) द्वारा अभिलाषित व्यक्तिकी एक प्रतिमूर्ति बनानी चाहिये । इस मूर्तिको कृताञ्जलि, युक्तपाद और अंगप्रत्यङ्गसहित बनाकर उसमें अभिलाषित व्यक्तिकी प्राणप्रतिष्ठा करे। फिर इस पुतलीके ऊपर (ॐ नमो भगवति) इत्यादि मन्त्र जपकर अँगारोंकी आगमें तपावे । इससे अभिलाषित व्यक्ति वशीभूत होगा ।

इति वशीकरणम् ।

अथ गुप्तमन्त्रः ।

शूकरशब्दज्ञानम् ।

पङ्कभूमिं समासाद्य तारं घुरुघुरुद्वयम् ।
घुत्घुत्स्वाहान्तमन्त्रोऽयं जपेत्सप्तायुतं बुधः ॥
घोणिरापूरयेद्यत्नात्ततः सिध्यति नान्यथा ॥

अब शूकर शब्दसाधन कहा जाता है। कीचडके स्थानमें बैठकर (ॐ घुरु घुरु घुत् घुत् स्वाहा) यह मन्त्र सात अयुत संख्यक जपना चाहिये । इस प्रकार करनेसे वह मनुष्य शूकरका शब्द समझ सकता है और शूकरके साथ बातचीत भी कर सकता है।

श्वशब्दज्ञानम् ।

निम्बमूलं समासाद्य पूजयेद्भोजनैः सताम् ।
धूपदीपैश्च नैवेद्यैर्बलिभिः परमोत्तमैः ॥
पूजयित्वा निशाभागे जपेदष्टायुतं बुधः ।
स्फिं स्फिं कालिवह्निकान्ता विद्येयं परमोत्तमा॥
ततः सिद्धो महेशानि सर्वं कुक्कुरभाषितम्।
बुध्येद्देवि तदा सर्वं तदर्थं च यथातथम् ॥

अब कुक्कुर शब्दसाधन कहा जाता है। नीमके वृक्षकी जडमें बैठकर धूप, दीप, नैवेद्य, बलि और अन्यान्य मनोरम उपहार-द्वारा पूजा करके आधीरातमें (स्फि स्फि काली स्वाहा) यह मन्त्र दश हजार बार जपना चाहिये ।हे महादेवि ! इस प्रकार

मन्त्र सिद्ध करनेपर वह साधक सहजमेंही कुत्तेका शब्द समझ सकता है।

खञ्जनसिद्धिः।

तारं तिमिरनाश्यै च मायाबीजं महेश्वरि।
पूजयेत्परमेशानि यत्नात्तिमिरनाशिनीम्॥
ततः खञ्जनसिद्धिः स्यान्नात्र कार्या विचारणा।
खञ्जनानां ततस्तस्य दर्शनं च भवेत्सदा॥
मूर्ध्नि नीते च तत्पक्षे देवैरपि न दृश्यते।
जानीयात्खंजनं शब्दं सर्वेषां प्रियतामियात्॥

अब खञ्जन (ममोला) सिद्धि कहते हैं (ॐ तिमिरनाश्यै ह्रीं) इस मन्त्रसे तिमिरनाशिनीकी पूजा करे। इस प्रकार पूजा करके यह मन्त्र दश हजार जपना चाहिये। इस प्रकार करनेसेही खञ्जनसिद्धि होती है। इस साधनके द्वारा साधक सदा खञ्जनका दर्शन करता है। इस प्रकार सिद्ध होकर मस्तकमें खञ्जनके पंख रखनेसे साधक देवताओंको भी नहीं दीख सकता। यह साधक सबका प्रिय होता है और सहजमेंही खञ्जनका शब्द समझ सकता है।

शृगालसाधनम्।

अथ वक्ष्ये महेशानि फेरूणां शब्दमुत्तमम्।
अमावस्यादिने फेरुरेकघातप्रहारितः॥
गतप्राणोऽथ संस्थाप्य भूतले दर्भसञ्चये।

तमारुह्य महेशानि पूजयेत्फेरुकं सुधीः ॥
चतुर्भुजां विशालास्यां विवस्त्रामुन्नतस्तनीम् ।
तप्तकाञ्चनसङ्काशां पद्मं शङ्खं गदामसिम् ॥
बिभ्रतीं मुक्तकेशीञ्च सर्वभीतिहरां पराम् ।
इति ध्यात्वा प्रयत्नेन गन्धपुष्पैर्मनोरमैः ॥
सामिषैः सुरम्यैश्चैव नैवेद्यैश्च मनोरमैः ।
पूजयित्वा वरारोहे जपेत्प्रणवसंपुटाम् ॥
काली माया तथा काली वह्निकान्तावधि प्रिये ।
प्रजपेदर्द्धरात्रौ च लक्षमानं शुचिः पुमान् ॥
फेरुः स जीवति ततो दिव्यं ह्युत्पद्यते तदा ।
वरं वरय भो वत्स यत्ते मनसि वर्त्तते ॥
ततः स साधकश्रेष्ठो वदेदेवं मनोरमे ।
वशीभूत्वा सहस्राब्दांस्त्वं मां पालय सर्वदा ॥
एवं प्रार्थ्य वरं देवि पूजयेत्तां प्रयत्नतः ।
रक्तशाकान्नपिष्टेन भोजनञ्च यथोचितम् ॥
ततः स तिष्ठति सदा यावदायुर्न संशयः ।
तच्छयनञ्च लक्षमानञ्च हन्यां सर्वान्क्षणेन तु ॥
यद्यत्संप्रार्थयेन्मन्त्री सर्वमानीय यच्छति ।

सहस्रं वा शतं वापि धनं दद्याद्दिने दिने ॥
इच्छाभोज्यं महेशानि तथैव वरसुन्दरीम् ।
आनीय क्रोशलक्षस्थ जपे यच्छति पार्वति ॥
अनागतां तथा वार्त्तां ब्रूते षाण्मासिकीमपि ।
अतीतां शतवर्षीयां ब्रूते नित्यं महेश्वरि ॥
शिवानां सर्ववार्ताश्च स्वयं बोधयति ध्रुवम् ।
प्रत्यह प्रजपेताश्च यत्नेन सामिषान्नकैः ॥
स श्रुत्वा फेरुकाणाश्च शब्दं प्रणतिमाचरेत् ॥

अब शृगाल (गीदड) साधन कहा जाता है। हे महादेवि ! अब शृगाल साधन कहता हूं, सुनो। अमावस्याके दिन एक आघातसे एक गीदडको वध करे। फिर उस शृगालको पृथ्वीमें कुशासनपर स्थापित करे और उसपर बैठकर देवीका ध्यान करना चाहिये। जिस प्रकार ध्यान करे वह मूलमें लिखा है इस प्रकार ध्यान करके यत्न और भक्तिसहित गंध पुष्पादि और आमिषयुक्त नैवेद्य द्वारा उसकी पुजा करे। फिर आधी-रातके समय (ॐ क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा ॐ) यह मन्त्र एक लाख जपना चाहिये। इस प्रकार करनेपर वह गीदड फिर जीवित हो जाता है और सुन्दर शब्दसे साधकको सम्बोधन करके कहता है कि, हे वत्स ! तुम अभिलाषित वर ग्रहण करो। तब साधक कहे कि, हे देवि ! तुम हजार वर्षतक वशीभूत रहकर मेरी रक्षा करो। इस प्रकार प्रार्थना करके लोहितवर्ण शाक,

अन्न, पीट्ठी और अन्यान्य नानाप्रकारके यथोपयुक्त भोज्य पदार्थ द्वारा यत्नसहित उनकी पूजा करनी चाहिये। इस भाँति सिद्धि करनेपर साधक जबतक प्राणधारण करता है, गीदड तबतक वशीभूत रहता है। साधक उस गीदडसे जो मांगता है गीदड तत्काल वही प्रदान करता है। नित्य वह गीदड साधकको एक सो वा एक हजार रुपया दे जाता है। हे देवि ! गीदड साधकके इस प्रकार वशमें हो जाता है कि, यदि कोई सुन्दरी स्त्री अथवा कोई अभिलाषित भोज्य एक लाख कोस भी दूर हो, तथापि वह साधकको लाकर दे देता है गये हुए सौ वर्षमें जो घटनाएं संघटित हुई हैं और आगामी छै मासमें जो घटनायें संघटित होंगी सो सब वह गीदड साधकके कानमें कह देता है। उस गीदडके अनुग्रहसे साधक सब गीदडोंकी बातचीत (बोली) समझ सकता है। प्रतिदिन मन्त्र जपपूर्वक यत्नसहित मांसमिश्रित अन्न द्वारा गीदडकी पूजा और जप करे। जब किसी गीदडका शब्द सुनाई देवे तो साधक उसी समय उसको नमस्कार करे।

भेकसाधनम् ।

नदीतीरं समासाद्य स्नातो निर्मलवस्त्रधृक् ।
प्रजापतिं वह्निसंस्थं मनुं स्वरसामन्वितम् ॥
त्रितयं तत्ततो में में मन्त्रमेतदुदीरितम् ।
जपेद्देवि सहस्रन्तु प्रत्यहं सप्तवासरान् ॥
ततो भेकवरे देवि सर्वतत्त्वार्थविद्भवेत् ।
अतीतानागतां वार्त्तां ब्रूते चापि यथोचिताम् ॥

अब भेक (मेंडक) साधक कहा जाता है। नदीके तटपर जाकर स्नानके पीछे साफ सुथरे वस्त्र धारण (क्रौं क्रौं में में) यह मन्त्र सात दिनतक जप करना चाहिये। नित्य एक हजार बार जप करे। इस प्रकार करनेपर वह साधक सिद्ध होता है और भेक (मैंडक) का शब्द समझ सकता है। भेकके अनुग्रहसे साधक सर्वतत्त्व समझ सकता है और भूत भविष्यत् सब घटनाओंके कह देनेमें समर्थ होता है।

गोधासाधनम्।

गोधया हतया वापि अथवा बिल्वमूलके।
गोधिकां खड्गहस्ताञ्च दंष्ट्रांशान्तिमुखीं शिवाम्॥
रक्तगम्भीरनयनां रक्तवर्णशिरोरुहाम्।
जपेल्लक्षप्रमाणन्तु गोधिकासिद्धिहेतवे॥
सिद्धायां गोधिकायाञ्च किं न सिध्यति पार्वती।
इच्छारूपं ददात्यन्नं ददाति विपुलं धनम्॥
अतीतानागतां वार्तां वर्त्तमानां तथा प्रिये।
रक्तिशक्ती यथास्यायां यद्यत्पृच्छति सर्वदा॥

अब गोधा (गोह) साधन कहा जाता है एक गोहको मारकर उसपर अथवा बेलवृक्षकी जडमें बैठकर (ॐ गोधिकां खड्गहस्ताञ्च) इत्यादि मूल लिखित मन्त्र एक लाख जपना चाहिये। इस प्रकार करनेसे गोह सिद्ध होती है इस प्रकार सिद्ध होनेपर

जगत्में उस साधकको असाध्य कोई कार्य नहीं रहता। वह मनुष्य अपनी इच्छानुसार खाद्य और बहुतसे धनको प्राप्त करता है और भूत भविष्यत् सब बातोंको जान लेता है।

गोसाधनम्।

गवां मूत्रेण देवेशि यावकं पाचयेद्बुधः।
तस्माद्दिनत्रयं वापि शुद्धवासोधरः पुमान्॥
धाराबीजद्वयं देवि जपल्लक्षप्रमाणतः॥
पूजयेत्तां सतीं देवीं नीलवर्णां मनोरमाम्॥
द्विभुजां सर्वभूषाढ्यां नानालक्षणलक्षिताम्।
एवं ध्यात्वा प्रयत्नेन पश्येदेनां न संशयः॥
तस्या गेहे सदा देवि गवां वृद्धिर्भवेद्ध्रुवम्।
गवां च सर्ववार्त्तां च संप्रबुद्धेन्न संशयः॥
तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्जायते नात्र संशयः॥

अब गोशब्दज्ञान कहा जाता है हे शङ्करि! प्रथम तो गोमूत्रमें यावक प्रस्तुत करना चाहिये। जिस समय प्रथम रन्धन करे, उस दिनसे तीन दिनतक शुद्ध वस्त्र धारणपूर्वक प्रतिदिन क ल यह बीजद्वयात्मक मन्त्र एक लाख जपना चाहिये। फिर सती देवीका ध्यान करके पूजा करनी चाहिये। देवीकी पूजा जिस प्रकार करे वह मूलमें लिखा है। इस प्रकार ध्यान पूजा और जप करनेपर देवी साधकको दर्शन देती है। जो पुरुष इस प्रकार सिद्ध होता है, देवी सदा उसके घरमें वास करती है और

उस साधकके घरमें प्रतिदिन गायोंकी वृद्धि होती है। इस नियमसे साधना करनेपर साधक सहजमेंही सब गायोंका शब्द समझ सकता है और उसके घरमें लक्ष्मी अचल होकर वास करती है।

मृगशब्दज्ञानम्।

बिल्वमूलं समासाद्य देवि गन्धादिभिः शुभैः।
पूजयेत्कमलां देवीं नीलवस्त्राङ्गरागिणीम्॥
द्विभुजामम्बुजद्वन्द्वधारिणीं परमेश्वरीम्।
एवं ध्यात्वा प्रयत्नेन शुद्धासनगतः पुमान्॥
कमलां कमलां मायां मायां वह्निवधून्तथा।
जपेदष्टायुतं देवि कमलासिद्धिहेतवे॥
सिद्धायां कमलायान्तु मृगशब्दं सुबुध्यते।
धनञ्च विपुलं देवि भवेत्तस्य गृहे ध्रुवम्॥
रिपुर्न जायते तस्य जायन्ते सर्वसम्पदः।
कामिनी वशमायाति यदि रम्भासमा भवेत्॥

अब मृगशब्द ज्ञान कहा जाता है। बेलकी जडके नीचे जाकर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य इत्यादि द्वारा नाना प्रकारके उपचारसे कमला (लक्ष्मी) की पूजा करनी चाहिये। जिस प्रकार ध्यान करे वह मूलमें लिखा है। इस प्रकार ध्यान करके विशुद्ध आसनपर बैठे और (श्रीं श्रीं ह्रीं ह्रीं स्वाहा) यह मन्त्र दश हजार आठ वार जपे। इस प्रकार करनेसे लक्ष्मीदेवी सिद्ध होती है। लक्ष्मीके अनुग्रहसे साधक मृगका शब्द समझ सकता

है। जो व्यक्ति इस प्रकार सिद्धि करता है उसके यहां धनकी अड़चन नहीं होती, और उसके सब शत्रु ध्वंस होते हैं, उसके यहां अनेक प्रकारकी समृद्धि होती है और रंभानाम्नी स्वर्गवेश्याकी समान भी स्त्री हो वह उसके वशीभूत होती है।

मेषशब्दज्ञानम्।

महागण्डारकं देवि तस्य चर्मणि चार्द्रके।
उपविश्य जपेद्विद्यां कोङ्कणां कनकप्रभाम्॥
रक्तवस्त्रपरीधानां नानामण्डनमण्डिताम्।
द्विभुजां सुन्दरीं देवीं ध्यात्वा प्रयतमानसः॥
धराबीजद्वयं देवि कामबीजद्वयं तथा।
स्वहांता कथिता विद्या जपेदष्टायुतं बुधः॥
ततः सिध्यति देवेशि कोङ्कणा परमेश्वरी।
शब्दं बुध्यति देवेशि मेषाणां तत्प्रसादतः॥

अब मेष (मेड) शब्द ज्ञान कहा जाता है। महागैंडेके गीले चर्मपर बैठकर कोङ्कणाविद्याकी आराधना करे कोङ्कणाका जिस प्रकार ध्यान करे, वह मूलमें लिखा है इस प्रकार ध्यान करके लं लं क्लीं क्लीं स्वाहा यह मन्त्र दश हजार आठ वार जप करे। इसीका नाम कोङ्कणा विद्या है। इस प्रकार करनेसे कोङ्कणा देवी सिद्ध होती है। कोङ्कणाके प्रसादसे साधक मेषका शब्द समझ सकता है।

कंकालसिद्धिः ।

नदीतीरं समासाद्य कृतस्नानो दिवा शुचिः ।
कौलिकीं पूजयेद्यत्नान्नानापुष्पैर्मनोरमैः ॥
मद्यैर्मांसैर्लोहितैश्च नृत्यगीतादिभिः स्वयम् ।
पीत्वा कुलरसं यत्नात्कुलं गत्वा प्रयत्नतः ॥
काली माया बालिके च कङ्काली वह्निवल्लभा ।
एतन्मन्त्रं महेशानि जपेद्विंशसहस्रकम् ॥
तदायाति महादेवी कङ्कालीमधिरुह्यमा ।
साधकाय वरं दत्त्वा वाहनञ्च वगनने ॥
याति वा वाहनन्तस्य वाह्यं वहति सर्वदा ।
हन्ति शत्रुसहस्राणि पृथ्वीं भ्रमति तत्क्षणात् ॥
बलञ्च विपुलं दद्यात्सत्यं सत्यं न संशयः ।
तारो माया रमाबीजं पशुनामाग्निवल्लभा ॥
कालिकापूजनं यस्तु पशुनाम्ना जपेन्मनुम् ।
सहस्रं परमेशानि तस्य शब्दं प्रबुध्यति ॥

अब कंकालसिद्धिका वर्णन किया जाता है। दिनमें नदीके तटपर जाय यथानियम स्नान करे। फिर विशुद्ध भावसे यत्न-

सहित दिव्य पुष्प, मद्य, मांस, शोणित इत्यादि उपहार द्वारा नृत्य गीतादिके सहित कुलदेवीकी पूजा करनी चाहिये । फिर कुलरस पान करके (क्रीं क्रीं कालिके कंकालि स्वाहा) यह मंत्र दो हजार जपे । जप समाप्त होनेपर देवी साधकको दर्शन देती है और अभिलाषित वर तथा यानादि अर्पण करके चली जाती है । वही देवी साधकके सब शत्रुओंका नाश कर देती है और साधकको अमित बल देती है । इस प्रकार करनेसेही कंकाल (मुरदेका खांखड) का शब्द समझमें आ सकता है । इसके अतिरिक्त ओम् ह्रीं श्रीं कंकालि स्वाहा इस मन्त्रसे कालिकाकी पूजा करके एक हजार वार जप करनेपरही कंकालसिद्धि होती है ।

काकशब्दज्ञानम् ।

काकपुच्छं महेशानि मूर्ध्नि संधार्य यत्नतः ।
कालिबाजं तथा काका कालीमन्त्रोऽयमुत्तमः ॥
चितायां षट्सहस्राणि होमपूजाविवर्जितम् ।
जपेन्निशीथे देवेशि ततः सिद्धो भवेन्नरः ॥
ततः प्रभृति देवेशि सार्वज्ञं तस्य जायते ।
काकशब्दप्रबोधेन सर्वं वक्ति यथातथम् ॥
चिरजीवा भवेन्मर्त्यो नात्र कार्या विचारणा ॥

अब काकशब्द साधन कहा जाता है। मस्तकपर कौवेकी पूंछ रखकर चितासनमें बैठकर (क्रीं काक्रा) यह मन्त्र छ (६) हजार जपना चाहिये। इस साधनामें पूजा वा होमकी आवश्यकता नहीं है। निशीथ कालमेंही जप करनेसे सिद्धि हो जाती है इस मन्त्रके सिद्ध होनेपर साधक सर्वज्ञता प्राप्त करता है और वह कौवेका शब्द समझ सकता है। कौवेके शब्दका बोध होनेपर वह साधक सब विषय सत्य सत्य प्रकाशित कर सकता है। इस प्रकार काक सिद्ध होनेपर साधक चिरजीवी होता है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

जलचरपक्षिसिद्धिः।

एतन्मंत्रं महेशानि श्मशाने यदि वा जपे।
षट्सहस्रप्रमाणेन पूजयेदम्बुवासिनीम् ॥
तदा वारिचराणां च पक्षिणां शब्दविद्भवेत्।
एतन्मन्त्रं खञ्जनसाधनोक्तमन्त्रम् ॥
स्मृतिमात्रेण देवेशि पक्षिणः शतशः क्षणात् ॥
तदाज्ञावशगाः सर्वे पक्षिणः पूर्ववर्त्तिनः ॥

अब जलचर पक्षीका साधन कहा जाता है श्मशानमें बैठकर खञ्जन साधनका मन्त्र छः हजार जपकर अम्बुवासिनी देवीकी पूजा करनी चाहिये। इस प्रकार जप और पूजा करनेपर साधक सब प्रकारके जलचर पक्षीका स्वर समझ सकता है। साधक

केवल मात्र स्मरण करतेही सब प्रकारके जलचर पक्षियोंको निकट बुलाने और किंकर (दासकी) समान वशीभूत रखनेमें समर्थ होता है ।

मयूरसिद्धिः ।

वटमूलं समासाद्य निशीथे पूजयेच्छिवाम् ।
परां चण्डि सहास्यां विपुलकुचयुगां मुक्तकेशीं
विवस्त्रां नानालकारपूरां शशधरशकलं बिभ्रतीं
भीमकान्ताम् । जप्यन्तीमद्रिकार्णं वरजघनभवां
क्षोणिचक्रं समुद्रं न्यक्कुर्वन्तीं समन्तादवनिरि-
पुगणं चर्वयन्तीं भजामि ॥
एवं ध्यात्वा ततो देवीं गन्धपुष्पैर्मनोरमैः ।
मद्यैर्मांसैर्महाभोगैः पूजयित्वा यथाविधि ॥
कालीबीजं समुच्चार्य पुनः कालीवरानने ।
ततो मयूरशब्दस्य मन्त्रोऽयं बहुसिद्धिदः ॥
अष्टायुतं जपेत्पश्येद्धुनेत्तावत्सहस्रकम् ।
निम्बकाष्ठैर्हरिद्राक्तैर्बिल्वपत्रैर्मनोहरैः ॥
समायाति ततो देवि मयूरगणमण्डिता ।
वरं दत्त्वा साधकाय प्रयाति परमेश्वरि ॥
मयूरशब्दविद्भूत्वा सार्वज्ञं लभते ध्रुवम् ।

यथेच्छितोक्तं क्षमते विषं जारयितुं क्षमः ॥
रिपूणां जयमाप्नोति सत्यं देवि वदामि ते ।
अनेनैव विधानेन बलिं दत्त्वा स्वदेहजम् ॥
पक्षिणां शब्दमात्रेण मम तुल्यो न संशयः ।
पूजयेत्कालिकां देवीं मद्यैर्मांसैर्मनोहरैः ॥
ततः सिध्यति देवेशि कुलसिद्धिः सदा भवेत् ।
कुलानां शब्दविद्भूत्वा सार्वज्ञं लभते ध्रुवम् ॥

अब मयूरसिद्धि कही जाती है। वटवृक्षके नीचे बैठकर भगवतीकी पूजा करे। जिस प्रकार ध्यान करना जाहिये वह मूलमें लिखा है। इस भाँति ध्यान करके पूजा करे। उत्कृष्ट गंध, पुष्प, मद्य और मांस इत्यादि अनेक प्रकारके उपहारसे चण्डीकी अर्चना करे। पूजावसानमें क्रीं क्रीं मयूरीका यह मंत्र अष्ट अयुत संख्यक जप और अष्ट सहस्र होम करना चाहिये। हलदी, नीमकी लकडी अथवा उत्तम बेलपत्र द्वारा होम करना उचित है, इस प्रकार नियमसे जप होमादिक अनुष्ठान करनेपर चंडिका देवी मोरोंसे घिरकर साधकके समीप आती है और साधकको अभिलाषित वर देकर चली जाती है। इस प्रकारकी साधना द्वारा साधक मोरकी बोली समझ सकता है और उसको सर्वज्ञत्व लाभ होता है। वह साधक इच्छानुसार विषको

जारण कर सकता है और उसके सब शत्रु निहत होते हैं। इस विधानानुसार अपने देहके रक्त द्वारा बलिदानपूर्वक देवीकी पूजा करनपर साधक पक्षीकी वोली समझ सकता है। मद्य मांस इत्यादि उपचारसे कालिकाकी पूजा करके कुलसिद्धि होनेपरही कुलशब्द बोध और सर्वज्ञता प्राप्त होती है।

विद्याधरसिद्धिः।

माया तारं गौं गो चैव पतये तदनन्तरम्।
एतन्मन्त्रं महेशानि निशीथे तु जपेत्सुधीः॥
अयुतं च जपेद्देवि ततः सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम्।
गन्धर्वशब्दविद्भूत्वा बलवान् पुत्रवान्भवेत्॥

अब विद्याधर सिद्धि कही जाती है। "ॐ ह्रीं गौं गोपतये" यह मंत्र रात्रिकालमें जपना चाहिये दश हजार जपनाही उचित है इस मन्त्रके प्रसादसे गन्धर्वका शब्द समझ सकता है। इस साधनाके प्रसादसे साधक महाबलवान् और पुत्रवान् होता है।

कङ्कशब्दज्ञानम्।

कामं केलिकेलिद्वन्द्वं काममन्त्रेण उत्तमः।
जप्त्वा सप्तसहस्रन्तु कङ्कशब्दप्रबोधनम्॥
कङ्कालशब्दविद्भूत्वा सर्वज्ञो भवति ध्रुवम्।
कोलकालवरारोहे वह्निकान्ता ततः परम्॥

बिल्वमूले महेशानि जपेदयुतमानतः ॥
पूजयेत्कालिकां देवीं ततःसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥
बकानां शब्दबिद्भूत्वा सर्वज्ञो जायते नरः ॥

अब बक (बगला) शब्दका ज्ञान कहा जाता है बक शब्दके साधनसे सर्वज्ञता प्राप्त होती है (क्लीं केलि केलि क्लीं) यह मन्त्र सात हजार जपनेसे बकसिद्धि होती है। वह साधक सहजमेंही बगलेका शब्द समझ सकता है। बेलके वृक्षकी जडमें बैठकर (ॐ कोल कोल स्वाहा) यही मन्त्र दश हजार जपकर फिर कालिकाकी पूजा करे। इस प्रकार करनेसेही बकसिद्धि होती है अर्थात् साधक बगलेकी बोली समझ सकता है और उसको सर्वज्ञता प्राप्त होती है।

चटकशब्दज्ञानम्।

चाटु चाटु महेशानि स्फें पूर्वं परमेश्वरि।
सप्तायुतं जपेद्यत्नात्कालिकामपि पूजयेत् ॥
ततो बुध्यति देवेशि चटकाशब्दमुत्तमम् ॥

अब चटक (चिडा) शब्द साधन कहा जाता है। (स्फें चाटु चाटु) यह मन्त्र सात हजार जपकर कालिकाकी पूजा करनेसे चटक शब्द सिद्ध हो सकता है इस प्रकार सिद्ध होनेपर साधक चिडेका शब्द समझ सकता है।

शुकसिद्धिः ।

मायाबीजं शुकद्वन्द्वं बोधयद्वितयं तथा ।
वह्निकान्तावधिर्मन्त्रो जपेदयुतमानतः ॥
ततः शुकस्य शब्दज्ञो नरो भवति नान्यथा ।
शुकस्यापि प्रसादेन महासम्पत्तिमान्भवेत् ॥
एतन्मन्त्रं महेशानि निशीथे त्यक्तभोजनः ।
जपेदष्टसहस्रन्तु शारिकापददानतः ॥
शारिकाशब्दविद्भूत्वा सर्वज्ञो जायते नरः ॥

अब शुक (तोता) साधन कहा जाता है (ह्रीं शुक शुक बोधय बोधय स्वाहा) यह मन्त्र दश हजार जपनेपर सहजमेंही तोतेकी बोली समझ सकता है। तोतेके प्रसादसे साधक बहुतसे धनका अधिकारी होता है। उपवासी रहकर रात्रिकालमें यह मन्त्र जपना चाहिये। इस साधनाके प्रसादसे शारिका (मैना) का शब्द भी समझ सकता है।

सारससिद्धिः ।

धराबीजं समुद्धृत्य में में बीजं समुद्धरेत् ।
एतन्मन्त्रं महेशानि सप्तायुतमतन्द्रितः ॥

जपेत्कमलमध्ये तु हविष्याशी जितेन्द्रियः।
ततः सिध्यति देवेशि नात्र कार्या विचारणा॥
सारसानां रवं बुध्वा सर्वज्ञो जायते नरः॥

अब सारसकी सिद्धि कही जाती है। हविष्यान्न भोजनपूर्वक विशुद्ध और एकाग्र मनसे जलमें ले में में यह मन्त्र सत्तर हजार जपनेसे सारससिद्धि होता है। इस साधनाके द्वारा साधक सहजमेंही सारसकी बोली समझ सकता है और सर्वज्ञ होता है।

कपोतसिद्धिः।

स्फेंकारं पूर्वमुद्धृत्य हुङ्कारद्वयमुद्धरेत्।
स्वाहान्ता कथिता विद्या जपेदयुतमानतः॥
शाल्मलीमूलमासाद्य पूजयेत्सिद्धिकालिकाम्।
ततः सिध्यति देवेशि नात्र कार्या विचारणा॥
कपोतस्य रवं देवि स बुध्यति न संशयः।
कौबेरशब्दमुच्चार्य कूर्चबीजं समुद्धरेत्॥
सिद्धिकाली प्रपूज्याथ जपेदयुतपंचकम्।
ततः सिध्यति देवेशि नात्र कार्या विचारणा॥
कपोतस्य रवं देवि स बुध्यति न संशयः।
कपोतविष्ठया मार्ध्ने तिलकेऽपि कृते बुधः॥
भूतं भावि वर्त्तमानं सर्वं वक्ति यथातथम्॥

अब कपोत (कबूतर) सिद्धि कही जाती है (स्फें हुँ हुँ स्वाहा) यह मंत्र दश हजार जप करे और शाल्मली वृक्षकी जडमें बैठकर सिद्धिकालिका देवीकी पूजा करे। इस प्रकार करनेसे कपोत सिद्ध हो जाता है। वह साधक सहजमेंही कबूतरका शब्द समझ सकता है। अन्य प्रकारसे भी यह साधना होती है अर्थात् प्रथम सिद्धिकाली देवीकी पूजा करके(ॐ कौबेर हुँ) यह पञ्चाशत सहस्र (पचास हजार) जपना चाहिये। इस प्रकार करनेसे पारावतसिद्धि होती है। इस साधनासे कबूतरकी बोली समझ सकता है। कपोतसिद्धि कर कबूतरकी बीटद्वारा ललाटमें तिलक करनेसे क्या भूत, क्या भविष्यत् और क्या वर्तमान तीनों कालकी घटना जान सकता है।

वीर्यमोघीकरणम्।

भाद्रमासि रवौ पुष्ये ग्रहणीयं प्रयत्नतः।
करे बद्ध्वा तु रात्रौ च सप्तपर्णफलं शुभम्॥
प्रत्यहं लक्षमानेन प्रजपेन्निशि संयतः।
षड्भिर्वर्षैश्च सिद्धिः स्यान्नात्र कार्या विचारणा॥
तत्फलं वदने स्थाप्य भवेद्वै दारसङ्गतः।
वन्ध्या वा काकवन्ध्या हि नष्टवीर्यस्तु यः पुमान्।
सुरूपं लभते पुत्रं दीर्घजीविनमेव च॥
मंत्रस्तु। काँकाँलिलाँपूंसः पुत्रं दापय २ स्वाहा॥

भाद्रमासीय पुष्यनक्षत्रयुक्त रविवारमें सप्तपर्ण (सतोना) वृक्षका फल लाकर बाहुमें बंधनपूर्वक रात्रिके समय 'कां कां' इत्यादि मन्त्र एक लाख जपना चाहिये प्रतिदिन इस प्रकार जप करना चाहिये। छः वर्ष इस प्रकार करनेसे मन्त्र सिद्ध होता है। इस भांति मन्त्र सिद्ध होनेपर नष्टवीर्य पुरुष अथवा काकवंध्या वा वन्ध्या नारी भी सुरूप और दीर्घजीवी पुत्र प्राप्त करती है।

बालकक्रन्दननिवारककवचम् ।

रुं देवी चण्डिका पातु क्लीं ह्लीं शाकिनी हाकिनी।
द्रीँ द्री हूँ फट्ट् रोदनं संवर संवर तथा ॥
कवचस्य प्रसादेन धारणाच्छ्रवणात्तथा ॥
स्थिरो भवति बालश्च सन्त्यज्य रोदनं ध्रुवम् ॥

'रुं देवी' इत्यादि कवच धारण वा श्रवण करनेसे इस कवचके प्रसादसे बालक बालिकाका रुदन करना थंभ जाता है और ऊपरके सब दोषोंकी शान्ति होती है।

दैवविद्यालाभः ।

क्रीं क्रीं क्रूँ क्रूँ क्रूँ क्रूँ सः हस खफ्रें ठः ठः ठः स्वाहा।
प्रत्यहमयुतं जपेत् त्रिवर्षेण सिद्धिः ।

'क्रीं क्रीं' इत्यादि मन्त्र नित्य दश हजार जपना चाहिये। तीन वर्ष जपनेसे मन्त्रकी सिद्धि होती है। यह मन्त्र जपनेसे

अत्यन्त दुर्बुद्धि मनुष्य भी सुबुद्धि प्राप्त करके सहजमेंही अत्यन्त कठिन विषय शीघ्र समझ सकता है ।

षोडशीकवचम् ।

षोडशीकवचस्यास्य ऋषिर्देवो जनार्दनः ।
छन्दोऽनुष्टुप् च विज्ञेयं मोक्षार्थे नियोगः स्मृतः॥

इस षोडशीकवचके ऋषि जनार्दन, छन्द अनुष्टुप् और मोक्षके निमित्त इसका विनियोग होता है ।

उग्रा मे हृदयं पातु कण्ठं पातु महेश्वरी ।
उज्जटा नयने पातु कर्णौ च विन्ध्यवासिनी ॥
ललाटे विशाखा पातु शाकिनी राकिनी तथा ॥
लाकिनी बाहुयुग्मं मे पादौ दिक्करवासिनी ॥
अन्यान्यङ्गप्रत्यङ्गानि षोडशी पातु सन्ततम् ॥

उग्रा मेरे हृदय, महेश्वरी कंठ, उज्जटा नेत्र, विन्ध्यवासिनी कान, विशाखा, एवं शाकिनी और राकिनी ललाट, लाकिनी दोनों बाहु, दिक्करवासिनी दोनों पैर और अन्यान्य अंग प्रत्यङ्गकी षोडशी देवी सदा रक्षा करें ।

धनदं भोगदं देवि आयुरारोग्यकारणम् ।
यशस्यं नरनार्योस्तु मनोमिलनकारणम् ॥
मोक्षदं विघ्ननाशञ्च नरनारीवशङ्करम् ॥

यह कवच धनदायक, भोगदायक, आयुर्दायक आरोग्यजनक, यशप्रद और मोक्षका देनेवाला है। इसके प्रसादसे स्त्रीपुरुषोंका परस्पर मन मिल जाता है। इसके द्वारा सब विघ्न दूर होते हैं और नरनारीको वशीभूत किया जाता है।

सर्वव्याधिविघ्नप्रशमनकवचम्।

श्रीसदाशिव उवाच।

कवचस्य ऋषिर्देवि महारुद्रो महेश्वरः।
छन्दोऽनुष्टुप् च विज्ञेय देवी संसारनाशिनी॥
धर्मार्थकाममोक्षाणां विनियोगश्च साधने॥

श्रीमहादेवजीने कहा कि हे देवि! इस कवचके ऋषि महारुद्ररूपी महेश्वर, छन्द अनुष्टुप्, देवता संसारनाशिनी देवी और धर्म, अर्थ, काम मोक्षके साधनमें इसका विनियोग है।

ऐं क्लीं पातु शीर्षे मां शक्तिबीजं तथा हृदि।
हे सौः पातु नाभिदेशे च सुन्दरी कण्ठदेशतः॥
महेश्वरी सर्वगात्रे कौमारी दक्षिणे तथा।
वैष्णवी पूर्वतः पातु उत्तरे सर्वमंगला॥
पश्चिमे पातु वाराही इन्द्राणी पातु नैर्ऋते।
शून्येऽनलेऽनिले क्षेत्रे सर्वत्र भुवनेश्वरी॥

ऐं क्लीं म रे मस्तक, शक्तिबीज हृदय, हे सौः नाभिदेश, सुन्दरी कण्ठ, माहेश्वरी सर्व गात्र, कौमारि दक्षिण दिशा, वैष्णवी पूर्व दिशा, सर्वमंगला उत्तर दिशा, बाराही पश्चिम दिशा, इन्द्राणी नैर्ऋत दिशा और भुवनेश्वरी शून्य (आकाश) अनल (अग्नि) तथा अनिल (वायु) एवं क्षेत्रमें रक्षा करे।

इदन्तु कवचं पुण्यं धारणाच्छ्रवणादपि।
न दुःस्वप्नो भवेत्तस्य न बिभीषिकादर्शनम्॥
दूषितज्वरभीतिश्च न च पीडकपीडनम्।
संक्रामकव्याधिभयं कदापि न च जायते॥
अपस्मारादिरोगाणां वायून्मादादिनामपि।
स्त्रीरोगाणाञ्चैव देवेशि नाशनंकवचोत्तमम्॥
डाकिनीपिशाचीभूतदृष्टिविचारकं परम्।
बाणभयं वज्रभयं हिंस्रजन्तुभयं तथा॥
जलजन्तुभयञ्चैव क्षिप्रं नाशयते ध्रुवम्॥

इस पवित्र कवचको धारण वा श्रवण करनेसे दुःस्वप्न विभीषिकादर्शन, दूषित ज्वरका भय, अत्याचारीका पीडन, संक्रामकव्याधिका भय, मिरगी इत्यादि रोग, वायुरोग उन्माद रोग, डाकिनी, पिशाची, भूतादिकी दृष्टि, बाणभय, वज्रभय, हिंसकजन्तुका और जलजन्तुका भय तत्काल नष्ट हो जाता है।

गृहगण्डीगृहरक्षा ।

ॐ ह्रीं चण्डे चामुण्डे भ्रुकुटि अट्टाट्टे भीमदर्शने रक्ष रक्ष चौरेभ्यः बज्रेभ्यः अग्निभ्यः श्वापदेभ्यः दुष्टजनेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वोपद्रवेभ्यः गण्डीः ह्रीं ह्रीं ठः ठः । अष्टोत्तरशताभिमन्त्रितां गण्डी दद्यात् ॥

यह मन्त्र एक सौ आठ बार पढकर जिस घरके चारों ओर रेखा खैंच दी जाय, उस रेखा और घरमें चोरादिके घुसनेका भय, अग्निभय, वज्रभय, हिंसकजन्तुभय और दुष्ट मनुष्योंका भय नहीं रहता ।

क्रोधशांतिः ।

ह्रीं ठीं ठीं क्रोधप्रशमन ह्रीं ह्रीं हां क्रीं सः सः स्वाहा ॥

यह मन्त्र सात बार पढकर पहरनेके वस्त्रके एक कोनेमें एक गांठ लगा देवे । फिर क्या पुरुष और क्या स्त्री जिसको क्रोध हुआ है, उसके पास जानेसे उसका क्रोध शांत हो जायगा ।

यह मन्त्र प्रथम सिद्ध कर लेना चाहिये । वडके वृक्षपर आरोहणपूर्वक एक पैरसे खडा होकर नित्य रात्रिमें एक हजार जपना चाहिये इस प्रकार तीन वर्षमें सिद्ध होगा ।

द्वारोद्घाटनम् ।

ज्वलवज्वल उज्ज्वल उज्ज्वलद्वारं उद्घाटय उद्घाट्य सर्ववित् कुट्ट कुट्ट स्मिथ स्मिथ सों सों चालि सर्वनिकृन्तनिस्पर्शस्पर्श ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ जीँ जीँ स्वाहा । अष्टोत्तरशतमामन्त्र्यस्पृशेत् ।

द्वार (दरवाजा) चाहे जिस प्रकारही बन्द क्यों न हो, यह मन्त्र एक सौ आठ वार पढकर द्वारको छूनेसे तत्काल द्वार खुल जाता है। यह मन्त्र एक करोड जपनेसे प्रथम सिद्ध कर लेना चाहिये ।

हिंस्रजन्तुस्तम्भनम् ।

ॐ हुँ गँ ग्लौँ हरिद्रागणपतये वरवरदसर्वजन्तु-हृदयस्तम्भनं कुरु कुरु स्वाहा ॥

प्रथम श्मशानमें बैठकर गुप्तभावसे नित्य रात्रिमें यह मन्त्र जपना चाहिये। दश लाख जप समाप्त होनेपर मन्त्रसिद्धि होती है। इसके पीछे यदि कभी सिंह, व्याघ्र, भालू, गीदड, कुत्ता, सर्प वा अन्य कोई जन्तु आक्रमण करनेमें उद्यत हो तो यह मंत्र केवल एक सौ आठ वार पढतेही वह जन्तु पीछेको भाग जायगा ।

नारीसौभाग्यकरणम् ।

कृष्णां चतुर्दशीं प्राप्य पुनरन्यां चतुर्दशीम् ।
प्रत्यहं प्रजपेन्मन्त्रं नारीसहस्रसंख्यया ॥
आधयो व्याधयस्तस्य नश्यन्ति नात्र संशयः ॥
मन्त्रस्तु। ॐ ह्रीँ कपालिनि कुल कुण्डलिनि मे
सिद्धि देहि भाग्यं देहि देहि स्वाहा ।

कृष्णा चतुर्दशीसे आरंभ करके तत्परवर्ती कृष्णा चतुर्दशीतक नित्य एक हजार 'ॐ ह्रीँ" इत्यादि मन्त्र जपना चाहिये। इस प्रकार करनेपर नारीके देहमें आधि व्याधि आक्रमण नहीं कर सकती । विशेष कर वह पतिपुत्रवती और चिरसौभाग्यवती होती है ।

आपन्निस्तारणम् ।

मार्गशीर्षे तु पूर्णायां शिखिमूलं समुद्धरेत् ।
बाहौ शिरसि वा धार्यं विवादे विजयो भवेत् ॥

अगहन मासकी पूर्णिमामें चिरचिरेकी जड लाकर बाहु अथवा मस्तकपर धारण करनेसे मुकदमें वा विवादमें जय होती है ।

इच्छानुसारदेहपरिवर्त्तनम् ।

रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां मयूरास्ये विनिःक्षिपेत् ।
भृङ्गीबीजं मृदं कृष्णां कृष्णांभूमौ निधापयेत् ॥

तज्जातभृंगी संग्राह्या अर्चयेद्रक्तपुष्पकैः ।
तत्पुष्पकर्णः पुरुषो मयूरो दृश्यते जनैः ॥

कृष्णपक्षीय चतुर्दशीकी रात्रिमें एक मोरका मस्तक लाकर उसमें भृंगराज (भांगरा) के बीज और काली मिट्टी एकत्र स्थापन पूर्वक काली मिट्टीमें गाडकर रख देवे। जब इस बीजसे वृक्ष उत्पन्न होकर फूल निकले तब रक्त पुष्प द्वारा उस वृक्षकी पूजा करके एक फूल ग्रहण करे यह पुष्प कानमें रखनेसे वह सबको मयूररूपी दिखाई देता है।

तद्योगे कृष्णमार्जारमुखे चैरण्डबीजकम् ।
तज्जातैरण्डबीजानामेकं वक्त्रे निधापयेत् ॥
तं प्रपश्यन्ति मार्जारं मनुष्या नात्र संशयः ॥

कृष्णपक्षीय चौदशकी रात्रिमें काले विलावके मुखमें अडके बीज काली मिट्टीके साथ बोकर मिट्टीमें गाडदेवे। जब इस बीजसे वृक्ष उत्पन्न होकर फल लग जाँय तब उनमेंसे एक फल मुखमें धारण करने पर वह सबको बिलावरूपी दिखाई देता है, इसमें सन्देह नहीं।

शृगालश्वानमेषाजवदने वापयेत्पृथक् ।
मयूरास्ये यथा भृंगी जाता सिद्धिश्च तादृशी ॥

शृगाल, कुत्ता, मेष और बकरा इन सब जीवोंका मस्तक लाकर पृथक् पृथक् स्थानमें भृंगराज (भाँगरा) के बीज और काली मिट्टीके साथ बो देवे। जब इन सब बीजोंसे वृक्ष उत्पन्न होकर फल लगे उस काल एक फल मुखमें धारण करनेसे वह लोकोंको उक्त शृगालादि जीवोंकी समान दिखाई देता है।

मृता च श्वपची नारी तस्या योनौ तु खादिरम्।
कीलकं निक्षिपेत्पश्चाद्दग्ध्वा भस्म समुद्धरेत् ॥
तेनैव तिलकं कृत्वा श्वपचारूपभृद्भवेत् ॥

मरी हुई व्याधस्त्रीके मूत्रस्थानमें एक टुकडा खैरकी लकडी प्रवेशित करदेवे फिर वह टुकडा निकालकर उसको जला देवे। अनन्तर उसकी भस्मका कपालमें तिलक करनेसे वह सबको व्याधरूपी दिखाई देता है।

शिग्रुबीजोत्थितं तैलं पारावतपुरीषकम् ॥
वराहस्य वसायुक्तं शिखिमूलं समं समम् ॥
ललाटे तिलकं तेन यः करोति स वै जनः।
पञ्चास्यो दृश्यते लोकैर्यथा साक्षात् सदाशिवः॥

सैंजनेके बीजोंका तेल, कबूतरकी वीट, सुअरकी चरबी और चिरचिरेकी जड यह सब पदार्थ बराबर लेकर एकत्र पीसकर ललाटमें तिलक करे जो व्यक्ति इस प्रकार तिलक करता है वह साक्षात् महादेवजीके समान पञ्चमुख दिखाई देता है।

सद्योहतस्य वीरस्य ग्राह्यं चौरस्य वा शिरः
तद्वक्त्रे कृष्णधुस्तूरबीजं वाप्यं समृत्तिकम् ॥
रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यामाषाढे भैरवं यजेत् ।
नानाविधोपहारेण पुष्पधूपाक्षतादिभिः ॥
शिरः खनेत्कृष्णभूमौ भुक्तोच्छिष्टेन सेचयेत् ।
दीपं रात्रौ सदा दद्यात्सूत्रवत्याज्यसंयुतम् ॥
सफलन्तु भवेद्यावत्तावद्रक्षेच्च पूजयेत् ॥
ग्राह्यं कृष्णचतुर्दश्यां बलिं दद्याच्च कुक्कुटम्
पश्चाद्बीजं पेषयेत्तस्य वटिकां कारयेद्दृढाम् ।
ललाटे तिलकं कुर्यात्स नरो दृश्यते जनैः ॥
तादृशस्तु सहस्राक्षरूपो नैवात्र संशयः ॥

सद्योहत किसी वीर पुरुषका अथवा चोरका मस्तक लाकर उसके मुखमें काले धतूरेके बीज मिट्टीके साथ बोवै । फिर और आषाढके महीनेकी कृष्ण पक्षीय चौदशकी रात्रिमें पुष्प, धूप और अक्षतादि अनेक उपहारसे भैरव देवकी पूजा करके काली मिट्टीमें इस मस्तकको गाड देना चाहिये । फिर भोजन करनेपर कुल्लेके जलसे सींचकर रात्रिमें घीका दीपक देवे इस प्रकार जबतक इस बीजसे वृक्ष उत्पन्न होकर फल न लगे तबतक इस स्थानमें दीप दान और पूजा करे । फिर कृष्णपक्षीय चौदशकी

रात्रिमें भैरवकी पूजा और मुर्गेकी बलि देकर इस वृक्षका पंचाग अर्थात् फल, मूल, पुष्प और छाल लेकर एकत्र पीसकर दृढ गोली बनावे यह गोली घिसकर ललाटमें तिलक करनेसे वह साक्षात् इन्द्रके समान सहस्र लोचन दिखाई देता है।

द्रव्यविनाशनम्।

गृह्णीयात्कदलीमूलं पुष्यार्के भाद्रमासि च।
सप्ताभिमन्त्रितं देवि निक्षिपेद्रजनीमुखे॥
सप्ताहाच्छस्यक्षेत्राणां शस्यं विनश्यति ध्रुवम्।
गौमहिषीप्रभृतीनां क्षीरं नश्यति निश्चितम्॥
वृक्षे क्षिप्त्वा महेशानि शुष्यति नात्र संशयः।
मन्त्रस्तु। द्राँ द्री शोषय शोषय मारय मारय क्लीं झट् ह्रीं ह्रूँ सः राः।

भाद्रमासके रविवारमें पुष्यनक्षत्रमें केलेकी जड लाकर (द्राँ द्री) इत्यादि मन्त्रसे सात वार अभिमंत्रित करके संध्यासमय धान्यके खेतमें डालनेसे सात दिनमें खेत नष्ट हो जाता है। गाय भैस इत्यादिके अंगपर डालनेसे दूध नष्ट होता है और वृक्षके ऊपर डालनेसे वृक्ष सूख जाता है हे महेशानि! इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

नष्टद्रव्यलाभः ।

वह्निकोषातकी वज्री श्वेतार्कगिरिकर्णिका ।
वचा पाठा च निर्गुण्डी कटुतुम्ब्याश्च मूलकम् ॥
निम्बकेशरबीजानि गोमूत्रैः पेषयेच्छनैः ।
अनेन पादलेपेन नष्टं नेत्रगतं भवेत् ॥

चीता, कोषातकी (तोरई), वज्री (थूहर), सफेद आक, अपराजिता (विष्णुक्रान्ता) वच, पाठा (पाढ) निर्गुंडी (समालू) कटुतूंबी (कडवी तोंबी) इन सब वृक्षोंकी जड एवं नीम और नागकेशरके बीज यह सब पदार्थ एकत्रकर गोमूत्रके साथ धीरे-धीरे पीस लेवे। फिर इन पिसे हुए पदार्थोंका पैरोंमें लेप करनेसे नष्टद्रव्य जिस स्थानमेंही क्यों न हो दीख जायगा ।

गुरुदर्शनम् ।

भौमावास्यातिथौ रात्रे गत्वा श्मशानभूमिषु ।
अयुतं प्रजपेत्साधुर्गुरुपादपरायणः ॥
जपान्ते ध्यानयोगेन प्राप्नोति गुरुदर्शनम् ॥
मन्त्रस्तु । ह्रीँ हुँ गुरो प्रसीद ह्रीँ ॐ ॥

मंगलवार अमावस्या तिथिमें रातके समय अकेला श्मशानमें गमनपूर्वक गुरूके चरणकमलोंकी चिंता करके (ह्रीं हुँ) इत्यादि मंत्र दश हजार जपना चाहिये यदि गुरुको स्वर्गवासी हुए बहुत दिनभी हो गये होंगे तथापि वे ध्यानयोगमें साधकको दर्शन देंगे।

त्रिकालदर्शनम् ।

पञ्चवटीमूले रात्रौ पञ्चमुण्डासने शुभे ।
उपविश्य जपेन्मन्त्री त्रिपक्षे यतमानसः ॥
यदि विघ्नो न जायन्ते यदि न दृश्यते जनैः ।
तदा सिद्धिर्भवेद्देवि त्रिकालतत्त्वविद्भवेत् ॥
मन्त्रस्तु । ह्रीँ ह्री ह्रूँ सः ॥

रात्रिके समय पञ्चवटी मूलमें पाँच मुण्डोंकी वेदीपर बैठकर जप करे। तीन पक्ष संयत चित्तसे जप करना चाहिये। यदि इसे बीचमें कोई विघ्न उपस्थित न हो और कोई जप करता न देखे तो सिद्धि प्राप्त होती है। वह साधक भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों कालका ज्ञाता होता है। जपका मन्त्र ऊपर मूलमें देख लो।

द्रव्यशोधनम् ।

ॐ ह्रीं त्रिपुटि त्रिपुटि कठ कठ आभिचारिक-दोषं कीटपतङ्गादिस्पृष्टदोषं क्रियादिदूषितं हन हन नाशय नाशय शोषय शोषय हुँ फट् स्वाहा॥

कोई वस्तु मन्त्रबलसे, दुष्ट व्यक्तिकी कुक्रियासे, विषादिके स्पर्शसे अथवा कीट पतंगादिके संसर्गसे अथवा अन्य किसी प्रकार अशुद्ध और व्यवहारके अयोग्य होनेपर इस मन्त्रद्वारा एक सौ आठ वार अभिमन्त्रित कर लेनेसेही शुद्ध होता है।

शवसाधनम् ।

भाद्रकृष्णचतुर्दश्यां गत्वा श्मशानवेश्मनि ।
चाण्डालीशवमारुह्य निशीथे प्रजपेन्मनुम् ॥
प्रणवंपूर्वमुच्चार्य मायाबीजं ततः परम् ।
कामबीजं समुद्धृत्य सर्वकामः ततः परम् ॥
प्रदेदेवि इति प्रोच्य सिद्धिकालि समुद्धरेत् ।
मनोहरे पदं प्रोच्य शेषे तु वह्निवल्लभा ॥
जपान्ते पूजयेद्देवीं सिद्धिकालीं दिगम्बरीम् ।
मत्स्यैर्मद्यैस्तथा मांसैर्बलिभिर्बहुभिस्तथा ॥
एवं प्रथममारभ्य यावदन्या चतुर्द्दशी ।
प्रत्यहं पूजयेद्देवीमयुतं प्रजपेन्मनुम् ॥
सिद्धो भवति चैतेन नात्र कार्या विचारणा ।
शवसिद्धिप्रसादेन त्रिकालज्ञो भवेद्ध्रुवम् ॥

अब शवसाधन कहा जाता है। भाद्रमासीय कृष्णपक्षकी चौदशके दिन रात्रिके समय श्मशानमें जाकर चांडालिनीके शवपर (मृतक शरीरपर) आरोहण पूर्वक (ॐ ह्रीं क्लीं सर्वकामप्रदे देवि सिद्धिकालि मनोहरे स्वाहा) यह मन्त्र दश हजार जपना चाहिये। जपके अन्तमें मद्य, मांस, मत्स्य और अनेक प्रकारके उपहारद्वारा सिद्धिकालीदेवीकी पूजा करनी चाहिये।

भाद्रकृष्ण चतुर्दशीसे आरंभ करके फिर अन्य कृष्ण चतुर्दशीतक नित्य इस प्रकार पूजा और जप करे, यथा नियम इस प्रकार करनेपर साधक सिद्ध हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं। इस शवसिद्धिके प्रसादसे साधक तीनों कालकी बात जान सकता है।

मन्त्रतेजोरक्षा।

अमावस्यापौर्णिमास्यष्टमीकृष्ण चतुर्दशी।
छायासुतश्चभौमस्तु संक्रान्तिश्च महेश्वरि॥
निशाथे चालयेन्मन्त्रमन्यथा निस्तेजा भवेत्॥

कृष्णपक्षकी अष्टमी, चतुदशी, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति और मंगल तथा शनिवार प्रतिमासके इन कई दिनमें रात्रिके समय यह सब मन्त्र अध्ययन करने चाहिये। नहीं तो मन्त्र निस्तेज हो जाते हैं अर्थात् फिर उन मन्त्रोंसे कोई फल नहीं होता।

इति मुरादाबादनिवासि पण्डित कन्हैयालालमिश्रकृत
हिन्दीटीकासहिता मन्त्रविद्या समाप्ता।

श्री जगदम्बार्पणमस्तु

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS

